

त्वमेव माता

© मणि मधुकर

प्रथम संस्करण

१९७८

मूल्य

दस रुपये

प्रकाशक

शब्दकार

२२ ३ गली हकीतान हुकमान गेट दिल्ली ११०० ६

मुद्रक

भारती प्रिंटर्स दिल्ली ११००३२

आवरण

अशोक धीमान

आवरण-मुद्रक

परमहंस प्रेस दिल्ली ११०००६

पुस्तक बन्ध

खुराना बुक बाइन्डिंग हाउस दिल्ली ११ ००६



मणि मधुकर

२७
प्रदीप

क्रम

फाँसी	६
उजाड और अधमरे	१८
जहम क चारो ओर	२७
पानी की आवाज	३६
हथेली	४७
एक मुर्दावाद आदमी	५०
स्वय	६०
यथ	६८
चंद्र ग्रहण	७२
विस्फोट	८७
गिरनी हुई बफ	९५
घाव	९९
सत्यवान	१०३
त्वमेव माता	११३
जली हुई रस्सी	१२१
यमराज	१२८

फाँसी

उड बहुत तेज थी। उमन कम्बल की गुमटी में से चेहरा बाहर निकाला ता रात भिच गये। बॅपकॅपी की एक लहर तन में दौड गयी। वह पाव सिकोड कर दीवाल से टिक गया। फिर आखो को पूरी तरह खोलने की कोशिश करता हुआ सामन देखने लगा। रात बहुत बाकी थी।

करीब सौ मवा सौ गठरिया प्लेटफाम पर दुबकी हुई थी। सद हवा का कोइ तीखा वार होता तो कुछ गठरियो में से 'आह ऊह' की आवाजें निकलती और घीरे घीरे यह कुनमुनाहट नीद से भारी सासा के पार डूब जाती थीं।

गाडी आने में अभी देर है उसन टिकट खिडकी को बंद देख कर अनुमान लगाया। वह सोना चाहता था, पर शरीर इतनी बरहमी से टूट रहा था कि पलकें मीच कर घुटनो से भाया जोड लने के सिवा उसक पास कोई चारा नहीं था। कभी-कभी यकान ब्यादा हो जाती थी और तब अपने अग अग की लोड-मरोड को समेटत हुए वह सिफ भपकियाँ ही ले पाता था। हर भपकी के बाद उसके भीतर का खालापन अधिक असह्य हो उठता था।

हडमान ! " किसी ने नाम लेकर उसे पुकारा ।
क्या है ?'

वह झुभना उठा । आवाज गल की नसों को तडकाती हुई निकली ।
उसने अपने पर बावू करना चाहा पर खाँसी खड़ी हो गयी थी ।

तू कोई दवा क्यों नहीं लता ?"

खाँसी थमने पर हडमान ने सिर उठाया । बदे था । टाट की रजाई में
लिपटा हुआ ।

"रेलवाई कम्पोंटर में इलाज कराया था । फायदा नहीं हुआ ।" हडमान
ने मुह में इक्टठे कफ को बगल में धूक दिया ।

एक रोज़ तू मेरे साथ लालजी साईं के पास चलना । उनके पानी में
बड़ी बड़ी बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं ।'

हडमान कुछ नहीं बोला ।

ला चौआनी द' बदे ने कहा अहमद ने मगवायी है ।

अहमद थानेदार और गेट बावू का आदमी था । अगर कोई बुली एक
बखत में तीन में क्यादा मुसाफिर निपटाता था तो वह उससे चक्की
बमूल कर लेता था । यह उसकी बँधी बघायी आमदनी थी ।

हडमान ने कमीज के नीचे पहनी हुई बड़ी की जेब में हाथ डाला
अगुलियों से कुछ टटोला फिर धीमे से बोला अभी चिल्लर है नहीं ।
सुवह दे दूंगा ।

याद रख के द दना । भूल गया तो गेट बावू लवर छीन लेंगे ।

'आहा भूलूंगा नहीं ।'

आज सर्दी ज्यादा है । बादल हो रहे हैं ।'

बादल ?'

हाँ । देखना, कडाके की बरखा होगी ।

तभी सामने की पटरियाँ बज उठी । एक क्षडीवाला ठेला आया और
घडघडाता हुआ निकल गया । उसके पीछे पीछे दो आदमी दौड़ रहे थे ।

कौन लोग हैं ? हडमान ने पूछा ।

वारहमासिय मजूर हैं । कहीं लन बिगड गयी होगी ।

सुपारी खायगा ?

“नहीं। तेरे हाथ कितन गदे हैं तू कभी नहाता क्यो नही ?” बदे ने भिन्नक दिया।

हडमान हँसने लगा जरा झँपता हुआ-सा।

तेरे पाम बँठने पर बदबू आती रहती है।’

‘इस नीले जाड़े में नहाकर मुझे मरना है क्या ? सुपारी का एक टुकड़ा दाता तले दवाकर हडमान मुह चलाने लगा।

‘किसी दिन मैं तुझे नल के नीचे पटक दूंगा।’ कहकर बदे चल दिया। रजाई में गाल गुम्मा होकर वह ऐसा नग रहा था, जैसे पूरा का-पूरा खभा चल रहा हो। चार छह कदम आगे जाकर उसने जोर से छीका, फिर नाक मुड़कता हुआ अँधेरे में गायब हो गया।

बिजली का एक तेज लटटू हडमान से दा हाथ हटकर भ्रून रहा था। पत्थरो के जडाऊ प्लेटफाम पर उसकी रोगनी क्षण क्षण थरथराती रहती थी।

गाडडी आणे में अभी और कितनी देरी है ?’

हडमान ने देखा नजदीक की एक मोटी गठरी हिली और उसमें से मह सवाल बाहर आया।

‘आधा पीना घटा समझो !’ हडमान ने अनाजा लगाकर जवाब देकर दिया।

जैपर के डिब्बे में जगा मिल जाएगी ?

आहो, मिल जाएगी।

एक बूटा दातीनार चेहरा ऊपर उठा और हडमान की तरफ मुड़ा,
‘तुम भी वही जानो जाने हो ?’

‘नहीं पता नहीं।’ उस झुर्रियो भरे चेहरे में ऐसा क्या था कि हडमान अपने आपको कुली के रूप में स्वीकार नहा कर सका। उसने सुपारी कुतरत हुए सोचा, ‘अच्छा ही है कि लाल कमीज कबल में छुपी हुई है और इस वक्त दिखलायी नहीं दे रही है। बोला मैं यही का हूँ।’

बूटा उसके पास खिसक आया।

‘वाँ करो तो रात कट जाती है’ वह बोला पहले मुझे नींद में भी बडबडान की आत्त था। मेरी घरवाली जब जिंदा थी तो टोकती रहती

थी। मैं कहता भई आत्मी अगर यानें न करे तो जिय ही क्या ? अब तुम जाणो बोली है ना जिदगाणी ?

कहाँ के रहन वाले हो ? 'हडमान न एब' जमुहार्द सी और अंगुली मे आँख का मल निकालत हुए पूछा।

म्हीखास' बूढे ने दोबड को बघो पर घीचत हुए कहा, 'हरपालू नेमन के पास पडता है। वा क्या कहत हैं भई कि ज दुनिया म आके जपर नही देरया तो किस्मत म तेरा क्या लखा। सो सँल सपाटा मानो या और कुछ जँपर जा रहा हू।

'सेती-पाती कँसी है इम वार ?' हडमान के स्वर म अचानक अपनापा भर आया। हरपालू के निकट कालरी गाव म उसकी बुआ का घर था। छुटपन मे एक वार वह वहाँ गया भी था। तब की सिफ एक ही यात्र भीतर टँगी रह गयी थी कि फूफा ने जान किम चात पर गुस्सा होकर भीत स माथा भिडा दिया था और भीत गिर गयी थी।

चनो क' गुच्छे खूब खिल ह भई 'बूना पने जसी दाढी को सहलाते हुए कह रहा था ये समझो कि धरती मुझे की पाखडी ही गयी है— त्रिलकुल हरी। एक बूटे को छुआ तो दूसरा हाथ स लिपट जाता है। यही सरतर बणी रही तो वो बमछक मचेगी कि नाज कोठो के बाहर पडा रहेगा।"

तुम्हार कितन बोरो की उम्मीन है ?

'म्हारे तो कोई उम्मद नही। बूटे का हडियल चहरा सहसा सल्ल और काला पड गया। उसने हाठ चवात हुए कहा 'म्हारा तो य साल मुकदमेवाजी म गारत हो गया। पेट पटिया की तरह खानी पडे हैं देघ के जी भभक्ता है।'

कोई जमीन बमीन का भगडा पड गया ? हडमान ने तसल्ली दने के ढग म पूछा। वह जानता था, खेत खाली रहने का मतलब है गले म पडी हुई कज की रस्सी। किसान के लिए उसकी पकड से छूट पाना मुश्किल होता है।

'ना भई जमीन का टटा लेकर मैं कभी कचेडी गया नही। मुझे पता है सिरवार के तमाम कानून-बायदे जमीन हडपण क लिए होत है। एक

वार उनकी मँडाली में सिर दे दो, तो उमर भर निकलने का नहीं। बड़े छल-छल करने पड़त है। अब तुम्हीं बताओ, हल चलाने वाले का छन से क्या लपटा देना ?”

सही है, हज्मान न गदन हिलायी। गदन का निचला हिस्सा त्रद कर उठा। शाम को इतना बोझ एक टक नहीं उठाना चाहिए था उसने बाहिस्ता-आहिस्ता रीढ़ को पीछे की तरफ तानते हुए सोचा।

“म्हारी तो माटी खराब होगी थी बुढ़ापे में सी हो गयी।” बूढ़े का गला भर्रा गया। वह कुछ क्षण चुपचाप शू प में घूरता रहा, फिर बुझे स्वर में बोला, आदमी क्या सोचता है और क्या हो जाता है।”

हवा की सरमनाहट बढ़ गयी। जधकार में घुप्प आसमान बादलों की मद गरजन फँक रहा था। ऐसा लगता था मानो कोई बनैला पशु ऊँघ में गुर्रा रहा हो।

बूढ़े ने दोबड़ हटाया। उसने एक खुरदरा ऊनी कोट पहन रखा था, जो सुतली की डोरियों से कमर में बँधा हुआ था। कोट के भीतर हाथ डाल कर बूढ़े न चमड़े की पीपी निवानी। डाट खोलकर हडमान की ओर देखा “लो, पहने तुम दा घूट ले लो। जकेले पीजे से मेरा आँस फुवणे लगनो है।”

हडमान ने पीपी तकर दारू गुटक ली। जलती हुई मामवत्तो नोचे उतर गयी। फिर बूढ़े बूढ़े मोम पिघल कर फैलने लगा। उसने जोर से हथलियाँ भीच ली।

बूढ़ा गट-गट पीपी को खाली करने लगा, जैसे प्यास की उतावली में पानी पी रहा हो।

“भई, इम बच्चे को देखो। कसी वेफिकरी में सी रहा है।” होठ पीछकर बूढ़े ने एक घुटना ऊँचा किया। उसकी गोद में सोय हुए बच्चे का गोरा मुख दाबड से बाहर निकल आया। गोल भरा भरा चेहरा। हल्की भूरी भौंहे। छाटे-छोटे नथुन सास लेते हुए। सिर पर घासीदार टापा।

‘पोता है ? हडमान ने फिर पीपी से मुह लगा लिया।

ना दीयना है नडकी का छोरा।’ बूढ़े की आँखें अजीब ढग से

सिक्कुड गयी "अब इन क्या मानूँ कि गमार म क्या हा रहा है ?"
बरण एसा ही होता है ।

बूढ़ न बच्चे के गाँवा को सहलाया, झुककर चूम लिया ।

मैं तुमम झूठ बाल गया भई, भाफ करणा । वा मैंन कहा था कि
जपर घूमण बूमणे जा रहा हूँ मा वात नगीं । य बच्चा है न इमका
बाप वही जेत म है । उसने मिलणे क लिए जा रह हैं ।

इसका बाप जल म है ?

तो पर साफ-भाफ मुणोग ? मुणा : मैं किम किमस छुनाऊगा ?
छुपाने स हागा भी क्या ' वात यह है कि इम बच्चे क बाप को फाँसी
होण वाली है । जेत वाली न हम मिलणे क लिए बुनाया है ।

हडमान क शरीर की तमाम नगें एकाएक खिच गयी । उसने बसन्ती स
बूढ़ का हाथ घाम दिया ' बाबा तुम सच बात रह हा ?

' मल और झूठ तो वा समुरा भगवान जाण जिमन इम बच्चे को
जनम दिया ओर फिर राप क पन्न भीत बांध दी ।

बूढ़े का चेहरा तमतमा उठा ' अब उस हुरामी कीड़े से जाकर काई
पूछ कि ह मानिक तू एग दग फग क्यों करता है ? बच्चे का ओर इसकी
माँ का क्या होगा ? मैं क्या सब जिऊँगा और दोनो को मभालता
रहूँगा ?

दूर अधरे म कई खँवार हाथ उग आय और हडमान का लगा व
उसकी तरफ बग रह है । धररा कर उसने बिजली क लटटू को देखा वह
उसी तरह जल रहा था । उदास और पीलिय के रोगी की भाँति भावहीन ।

जैवाई की जिद मशहूर है । मैंन अपने जवाई को बहुत ममभाया ।
कहा कि मरी लडकी ऐसी-वसी नहीं है । उसके बारे म बुरी-बुरी बातें सोच
कर बयो मन गदा करत हो ? तैकि उस इस बच्चे का माँ पर एक बार
जो शक हुआ तो गया ही नहीं । उसक जच गयी कि औरत का चरित्तर
खराब है और वह सगे दवर से बधी हुई है । पहल तो उसने अपने छोट
भाई पर फरसा चनाया फिर औरत की दोनों टाँगें काट डाली जिससे
वह जिदा रहे और सदा दुख भागे । छाटा भाई तो उसी वकन भर गया ।
उसको पुलिस पकड ल गया तो सासर वान मरी लडकी के दुश्मन हो गय ।

साम ने उसकी पीठ पर गरम कड़खी दाग दी और बोली कि तू ही छोटे करम की है। मेरे एक बेटे को खा गयी। दूसरे को जेल भेज दिया।”

हडमान साँस रोके सब-कुछ गुन रहा था। उसकी नज़र के सामने बार-बार घुमाँ छा जाता और वह एक कमैली गध म डूबकर असहाय-सा हाँ उठता था।

‘मुझे जब पता चला कि सासरे वाले लडकी को घाट घोंटकर मारणा चाहत हैं तो मैं उसे अपने पास ले आया। लेकिन मुकदमे म सब बरवाद हा गया। बेती गयी सो गयी, तकलीफें हुईं सो हुईं पर जँवाई की जान नही बच सकी। मेरी लडकी ने तो भूठे बयान भी दिये। देवर की हत्या अपने मत्ये ले ली लेकिन और सारे सबूत खिलाफ गये।”

प्लेटफाम पर घटी की टनटनाहट गूज गयी।

‘गाडडी आणेवाली है। मैं टिकट ले आऊँ।’ बूढ़े ने चमड़े की पीपी का कोट के अन्तर म दवाच लिया।

हा, जल्दी करो। और—बच्चा मुझे दे दो।’ हडमान ने बाहे फँला दी और बच्चे को गोद म लेकर कम्वल से ढक दिया।

बूढ़े ने अपने पास की एक गठनी को हिलाया हे कम्मा। उठ। गाडडी आ रही है।’ फिर हडमान से बोला ‘यह मरी लडकी है।’

एक स्त्री अपन आपकी घसीटती-समेटती हुई-सी बठ गयी। बूना टिकट खिडकी की ओर चला गया।

हडमान बच्चे को छाती से चिपका कर गरमी महसूस कर रहा था। बच्चे ने मुह स एक अलसायी आवाज निकाली और हडमान ने खुश होकर उमके टोपे पर चुम्बन जड दिया।

स्त्री बिना हिले डुले बठी थी। उसके पतले हाठ कसकर भिचे थे। आँखा के नीचे रेखाओं का एक ऐसा घेरा मौजूद था जो अधिक रोने और रान रात भर जागने से बन जाता है। काले और अस्त-व्यस्त बादलो के वाच उसका चेहरा इम तरह फँसा हुआ था मानो उसे एडिया से रोना गया हो।

घडघडाती हुई गाडी आ गयी। स्त्री बेचैन हो उठी। पर तभी बूढ़ा दौडता हुआ आया और उसन स्त्री को उठा कर हाथों म भर लिया जैसे

वह भूस की बोरी हो। एक डि ब म ल जाकर उसने स्त्री को बिठाया। वह बुरी तरह काप रही थी।

हडमान बच्चे का कंधे से लगाकर उठा और डिव्य के सामने जा खड़ा हुआ। बूढ़े ने आग बढकर बच्चा उससे ले लिया।

प्लेटफाम एक परिचित शोर स भर गया था। हडमान क शरीर म धुखार-सा चढ आया था पिंडलियां थरथरा रही थी। गाडी चलने लगी तो उसने बूढ़े का हाथ थाम लिया। वह उस हाथ पर माथा टेककर रोना चाहता था पर अदर सब कुछ सूखा-सूखा था, रुलाई फूट नहा रही थी।

"अच्छा भई, जिंदे रहे तो फिर मुलाकात हो जायगी कभी। बूढ़े ने कहा।

हडमान एक बार उस बच्चे का चेहरा देखना चाहता था पर एकाएक उसका माथा झुक गया और डिव्या सामने स हटकर दूर होता गया।

सुनसान प्लेटफाम। ठड। बच्चा। कटे हुए पाँवा वाली स्त्री। बूढ़ा। लहराती हुई दाढी। मौत। हडमान को लगा कोई भद्दी चीज उसके भीतर सड रही है और सडाघ इतनी ज्यादा बड गयी है कि सास नना मुश्किल हो गया है।

कुलियों ने एक जगह गडढा बनाकर जाग जला रखी थी और उसें घेरकर बैठे थे। एक सिपाही भी उनके बीच खडा था और हाथ ताप रहा था। वदे ने आवाज दी 'हडमान हो। आ जा सँक कर ल।

हडमान उनक पास चला गया। वह गुस्मे म उबल रहा था, पर उमके लिए यह तय करना कठिन था कि आखिर गुस्सा है किस बात पर।

तूने अहमद को चौआनी दे दी? वदे ने पूछा।

'नही दूगा मैं किसी को एक पाई भी। हडमान बिपर पडा कमाई हम करें बोभा ढोकर बदन हम तोड़ें और पसा खाये य—स्माल टुककटखोर।'

जवान सभाल कर वोल सिपाही न डाँटा।

अवे जा भडुधे, तरे जसे तीन सौ तेंतीस जने रोज टाग के नीचे मे निकालता हूँ।"

‘तूने दाहू पी रखी है।’ सिपाही न घूसा तान लिया। बदे बीच-बचाव करने लगा।

हडमान तमक कर चिल्लाया, हा हाँ, मैंने दाहू पी रखी है। तू मेरा क्या विगाड लगा? चढा दे मुझे फाँसी पर, चढा दे। जा कर दे थान म रिपोट। मैं किसी मे नहीं डरता। आग मे भी नहीं। आग समुरी मेरा क्या कर लेगी? यह कहकर उसन कम्बल म मे हाथ निकासल और उमे लाल-लाल अँगारो पर रख दिया।

उजाड़ और अधमरे

मरे जूतो में बार-बार रेत घुस जाती थी और तलुवों से लेकर अंगुलियों की दरारों तक चिकोटी-मी काटने लगती थी। मैं उस फटकारते झाड़त परेगान हो उठा था। कंधे पर एक लट्ठ कम्बल था। भसे के सूसे भारी चमड़े जसा। मुझमें मभान नहीं सभल रहा था। पाजाम में भरूट व काँटा की लडियाँ इस कृत्तर लिपट गयी थी कि उनके पाँयचे बिलकुल अलग नजर आत थे। घँस घसीली पगडडी पर चलते चलते मेरे फेफड़े उलटे बोनने लगे थे और नधनो में माँस समा नहीं रही थी।

अरड व दरएतो की लबी कतार लाँघने के बाद मुझे रिगसाना ढाणी का मुह दिखलायी दिया। टीला और भाड भूखाडो के बीच छोह की तरह खुला हुआ। दूर से टरावना किंतु नजदीक से गमगीन अदर घुसन पर एक अनवरत मोह और अधक धँय से लवालव।

वाऊ छपरे की छत पर आकड़े की मोटियों और खीप का जाल गूथ रह रहे थे। मुझे देखकर नीचे उतर आय। कुछ क्षण एकटक देखते रहे एडी चाटी तक की री रगत। हम दोनों व बीच दस माह का मनहूस, मधर समय था। मैंने तनिक मकोच के साथ उस पार किया और बाँह का थला

उतारकर चूतरी पर रख दिया ।

अपनी सफेद सजीदा दाढी पर हाथ फेरते हुए बाऊ ने एक बाल को खींच कर तोड़ दिया और उस गौर से तकते हुए बोले, बहुत दिन लगा दिया ।”

सूरज शिखर पर था और धूप उतनी ही ठन्धी थी, जितनी कि हवा । चौतरफ घूल के निरंतर बदलते हुए नक्शे और कुछ रहस्यमय सबध थे, जो हमेशा मेरी समझ के आसपास उड़कर बिलीन हा जाते थे ।

मैंने स्वयं को इस तरह देखा, माना कोई प्रेत अभी अभी गड्डे से बाहर निकल आया हो और जबरन मेरी जगह खडा होकर दात वजान लगा हो ।

मैं थकान भरे अममजस में होठ काट रहा था । उन पर पपड़ी जमी थी । उनके छिलके जीभ की नोक पर आ गये थे ।

‘लुगाई और वो क्या नाम उसका छोरी ठीक है ?’ बाऊ ने पूछा । फिर पुकारा ‘घनसिंग !’

‘सब मजे म हैं’ मैंने कहा ।

बाऊ ने आवाज ली, होका भर ला भई !

उनका स्वर कमजोर और अस्वस्थ था ।

तुम्हारी तबीयत अच्छी नहीं है बाऊ ?

तबेत को क्या हुआ है, अज्जू ! बम वकन बवक्त पेट में आट घुमडने लगती है और चित्त में खराबी आ जाती है । उमर भी तो ज्यादा हा गयी समुरी ! हाँ, तुम सुनाओ राज-नाज में क्या हो रहा है आजकल ?’

मैं मुसकराया । जब जब ढाणी आना हूँ बाऊ यह सबाल जरूर पूछते हैं । कुल उनीस घरों की वह अकली रस्ती । दो-ढाई सौ मील तक रेगिस्तान और उस जसी ही कड़ ढाणिया दो मुल्वा के बीच में । लेकिन दोनों से ही अलग थलग अपने अभागपन को ढोती हुई । विवश । मेरी उपस्थिति उन्हें उस दुनिया से जोड़ती है, जिसमें अचरज-ही-अचरज है । लोग मेरे खून के हर कतरन काकिफ मुझमें बरसों से बस हुए वे लोग चुपचाप सब कुछ सुनते हैं और घुणा से होंठ सिकोड लते हैं । वे जानते हैं उस दुनिया

की हसी और तूशी उन पर पहाड़ की तरह गिरती है।

लडाई गुरु होने वाली है बाऊ !” मेरी आँखों से एक भाप-सी उठी और पूरे चेहरे पर फल गयी। नौ साल की कठिन भुयमरी के बाद पहली फगल देखी है इन ढाणियो न। रास्ते म मैंने जगह जगह सरसा क उजास को महमूस किया था। स्वत हरे-पीन प्रसन खेत। लडाई उनकी प्रसनता को नोचकर फिर वही बरवादी बिछा देगी चारो ओर जिसकी कल्पना करन मात्र से मेरे रोगटे जलन लगते हैं।

लडाई ! बाऊ की आँखें सिफुड गयी। वो तो कभी की गुरु हो गयी अज्जू ! उधर दखो ! उहाने बोन भर के फासले पर खड एक ऊँचे टीव की तरफ, जहाँ सीमा चौकी थी इशारा किया। वहाँ अब उस पार की फौज का कब्जा है। परसा काफी घाय घूँय मची फिर भारत वाले खाली कर गये। सुना आदमी और औजार कम थ उनके पास !”

मेरा चेहरा कस गया। टीले पर सचमुच एक अनदेखा दश्य था। इधर-उधर तबू गाड दिय गय थे और उनम चहल-पहन थी। इतनी दूरी से आदमकद आवार बीने नजर आ रह थे।

तभी छपरे के अदर से एक ब्यक्ति बाहर आया फूक मारकर होक की आग सुलगाता हुआ। उसकी आँखें कजी और कठोर थी। भौहो की लडाई कानों तक चली गयी था। माथे पर खुदे टुए आडे तिरछे खडडा से पता चलता था कि उसने काफी मार खायी है। बाऊ बोले धनसिग है यह। चार-पाच महीने पहन आया था जाने कहाँ से ? अब यही रहगा।

धनसिग ने बाऊ के सामने होका रख लिया। वह उसकी नाल को मुह म लेकर बीने मेरा लडका है अज्जू ! नालायक गहर म जाके बस गया है !

बाद म धनसिग स ही मालूम हुआ कि वह फौज म हवनदार रह चुका है। गुस्त म मेस थ एक रसोइये का कल्ल कर दिया फिर डरकर फरार हो गया। छिपकर रहने के लिए रिगसाना ढाणी अच्छी लगी। बाऊ को राजी कर जुगाड बिठा लिया। किनी गश्ता हाकिम को शक कक न हो इसलिए दाखा को नाते की चूडियाँ पहना दो। दाखा मेरे मामा की लडकी थी। अकाल क दिनो की भागम भाग मे उसका पति वही चना

गया था। वह न लौटकर आया न उसका कोई समाचार' ही मिला। दाखा हर रात किसी-न किसी मरद की बगल में सोयी हुई मिलती थी, सो बाऊ से छूट मिलने पर धनसिंग ने उसकी नाक में नकेन डाल दी। मुझे धनसिंग एक मजबूत और मौजी आदमी लगा, हालांकि वह मामूली सी बात पर रीस में भर उठता था।

शाम को हम दोनों ने एक साथ 'अम्मल लिया और देर तक बातें करते रहे। अफीम का असर नसी म घुल रहा था। जाड़े की तीर-तीखी नवा हडिडिया को भकभोर रही थी। धनसिंग मुझे स्यालकोट के क्रिस्मे सुना रहा था। पसठ की लडाईं में वह उस मार्च पर था।

गली सुनसान थी। कीकर की सूखी पत्तियां घुमेर लगा रही थी।

अचानक दाखा प्रकट हुई। वह लहंगे की पटलिया को कमर में खोसे गुनगुनाती हुई आ रही थी। मुझे सामने पाकर चौंक पड़ी 'अहे तुम्म! कब आये?"

मैं कुछ कहूँ इससे पहले धनसिंग गरजा 'दिन भर कहा थी तू?"

दाखा ने उसकी ओर मुह बिघका दिया। मरे निकट आकर बोली 'यह जानवर कौन है?"

धनसिंग का चेहरा सुख हा उठा 'तेरा चुलबुलापन अभी गया नहीं?"

भरतार तो ऐसे मित्रे हैं! जाएगा कैसे?"

सहसा उस कुछ याद आया 'अज्जू पिछली बार तुम एक पाथी छोड़ गये थे न मैं उसमें से एक फोटू फाड़कर अपने पास रख ली। यह देखो! दाखा ने कांचली की आड़ से एक मुडा-तुडा कागज निकाला। उसमें बहीदा रहमान का चित्र था सायास मुसकान वाला।

'यह तुम्हें अच्छा लगा?" मैं उस मल अखबारी कागज को उसकी जंगुलियों में हिलते देखा किसी चिडिया क बच्चे की तरह।

इस हरामजादी का दिमाग चल गया है।' धनसिंग बड़बड़ाया, 'मैंने एमी बगम औरत कभी नहीं देखी।

दाखा तमतमा उठी, तुमने कितनी औरतें देखी हैं चमगादड़?"

धनसिंग की भकटियां तन गयीं। वह बाज की तरह भपटा। दाखा के

गले को दबोचकर उसने एक सगना धोन उसकी पीठ पर जमा दिया। वह दुखी हो गयी। घनसिंग उम पगीटता हुआ छपरे मल गया और ठोकर म कियाड उठवा लिय।

थोड़ी दर बाद छपर म दाछी की गिसगिलाहट मुतापी दी। जहाँ तक मरा अनुमान है घनसिंग अब भी बस हा गुरा रहा था।

दूसर रोज छावनी म कुछ सनिक आय और ढाणी के तमाम ऊँटा को टकट्टा कर ले गय। रतील बियावान म जहाँ जीपें और टुक अडकर खडे हो जाते थे ऊँ ही काम देते थे। उनर जरिये रम और दूसरा मामान आसानी स दधर-उधर पडचाया जा सकता था।

एक सैनिक जिसकी ठडडा पर छाटी सी दाती थी जब बाह की तरफ घूम कर पेशाज कर रहा था घनसिंग उसके पाम गया और घौम-स बोला 'तुम्हारी यह हरकत ठीक नहीं है।'

सैनिक ने पनटकर देखा फिर पतलून की पेटो कसने हुए बोला 'कीन सी? मूतने की?'

नहीं। मजाक मत करो।' घनसिंग के जबडे खिच गये मैं जानता हूँ तुम मेरी औरत पर हाथ साफ कर रह हा।'

भना इसम किसी का क्या नुकसान है? कहकर सनिक ने घनसिंग की कमर म हाथ डाल दिया। घनसिंग हतप्रभ हो गया। वह इम तरह मुह पपोलने लगा माना कीचड गा रहा हो।

'तुम यह क्या नहीं सोचते कि हम दो दुश्मन मुल्को के बानिने हैं लकिन उस औरत न हम एक कर दिया है।'

दुपहर ढन रही थी। ऊँटा की टोली जा चुकी थी। सिफ एक ऊँटनी जो बीमार थी सेजडे के खूटे स बधी हुई अरडा रही थी। उसकी बिलबिलाहट से माहौल एकदम निरीह और असहाय हो उठा था। ऊँटा को हमेशा के लिए छोकर लोग अपने भापडो मे दुबक चुके थे। वही किसी स्त्री के रोन की घुटी घुटी आवाज आ रही थी। ऊँट का मतलब है फसल उजड जाए, तो भी जीन का एक आधार। वह आधार छिन चुका था। विरोध का एक भोका भी बही स उठ खडा होता तो समूची ढाणी

को जलाकर बराबर कर दिया जाता। सब खामोश थे। यही होता है। कोई बचाव नहीं। कोई चारा नहीं।

बाऊ मेरे पास वृत्त की तरह बैठे थे। मुझे लगा वह सदियों में इसी तरह बठे हैं। नगे बदन हताश।

दाखीं खिचड़ी के लिए बाजरा कूट रही थी। ओखली की घम्म घम्म पहल मेरे मिर में गूँजती रही, फिर कलजे में उतर गयी। निहत्थी निष्फल नज़रो से मैंने अपने बाप को देखा। वह मिट्टी का ही एक करारा ब्यक्तिरव था, जो क्षण भर के लिए समतला कर लाल हुआ, फिर राख की तरह काला पड़ गया। एक अस्पृष्ट यत्रणा मुझ तक आकर ठहर गयी अज्जू हमारा कोई नहीं है।'

घनसिंग चिलम भर कर ले आया था और उस सैनिक का पिला रहा था। मैंने सैनिक का एक उड़ता-सा वाक्य सुना 'जब हम एक चिलम, एक तम्बाकू साथ-साथ बैठकर पी सकते हैं तो एक औरत के मग दानों सा क्या नहीं सकते?'

घनसिंग ने कोई उत्तर नहीं लिया बुझी-बुझी दृष्टि में उस बंदूक को घूरता रहा जो सैनिक के कंधे पर टेंगी थी।

एकाएक ऊँटनी घनाम में गिर पड़ी और टाँगें पछाड़कर बुरी तरह चीखने लगी। बाऊ उसके पास गया। बोले 'इस गम लोह में दागना पड़गा। कोई रंग खिच गयी है जिमकी बजह से इतनी तकलीफ है।'

घनसिंग ने पूछा 'मैं दाग दूँ?'

'हाँ जल्दी करो, नहीं तो यह दद के मारे खत्म हो जाएगी।'

बुछ घरों के सामने सैनिक बैठे थे और स्त्रियां स छड़छाड़ कर रहे थे। एक सैनिक निसार की बड़ी लडकी को एक टाँग के बल नचा रहा था। निसार उम और पीठ किये मुह पर गमछा डान मो रहा था। घाट उसकी घरघरी से हिल रही थी।

'हमीन।' दाखीं ने मदे आवाज़ में पुकारा 'यहाँ आ जाओ।'

वह सैनिक चिलम का आगिरी बग लेकर उठा। घनसिंग की तरफ ब्यग्यपूर्ण निगाहा से देखा उसने और दाखीं की बगल में जाकर बैठ गया। वह छात्रले में बाजरे का तूस अलग करती हुई मुगकरा रही थी। बाऊ-

न अर्धाभिच हाटा स गाली दी 'चुडैल ।''

घनसिंग लकड़ियाँ जमा कर आग मुलगान लगा । बाद म एक लबी-मी छत्र लेकर उसन अनारो के बीच घोंसा दी ।

ऊटनी का पट फूलता जा रहा था और वह अपनी गेंदली कातर आँवो से बाऊ को देखती हुई लगातार अरडा रही थी ।

घनसिंग न हाथ के चारा ओर कपडा लपटकर गम छत्र को पकडा और ऊँटनी के नजदीक से आया, किस तरफ ? उसने पूछा ।

'पुट्टो पर दायें धुड की सीध म ।' बाऊ ने कहा जोर ऊँटनी की पिछली टाँगो को जच्छी तरह दबाकर बठ गय ।

अज्जू तुम इसकी गरदन कस दो हिल न सके ।''

मैन गरदन दबोच ली । गम लोहा लगने ही ऊटनी छटपटायो । उसके मुह स भाग निक्लने लगे अरडाना जाकाश को चीरने लगा ।

दो बार दाग लगाकर घनसिंग परे हो गया ।

अब लाहे को पानी म डालकर ठंडा कर दो । बाऊ ने कहा ।

दाखाँ का हमीद न ओखली के पास ही जमीन पर लुत्का दिया था और मसल रहा था । मीने उधर से मुह फेर लिया ।

अज्जू जरा मेरी मदद करो ।

मैं बाऊ क साथ जुटकर ऊँटनी क पट को जोर-जोर स रगडने लगा । वह शायद कुछ आराम महसूस कर रही थी । आफरा धीरे धीरे हलका पड रहा था । पुट्टो का तनाव भी ढीला हो गया था ।

सहसा एक तेज चीख निकली जो धिधियाहट म बदल गयी । उसके शात होत ही हगामा मच गया । घनसिंग न गम लोहे की छड हमीद की गरदन पर रख दी थी । वह तडपकर खत्म हो गया ।

घास फूम के ढेरो और पत्थरो पर बठे हुए सैनिक दौड पडे ।

घनसिंग ने छड पानी के कुत्र म फेंक दी जोर सब कुछ सहने के लिए तैयार हा गया । काँचली के कसने बढ करती हुई दाखाँ उठी । उमने घनसिंग का मुह नोच लिया । वह रोती जा रही थी और चिल्ला रही थी, कमीने ! कुत्ते यह क्या किया तुमने ? क्यों मार डाला इस बेचारेको ? मारना ही था, तो मुझ मार डालते । मैं तुम्हे कच्चा चबा जाऊँगी ।

नामिर की लडकी नाचना बंद कर दाखाँ की तरफ देखने लगी चकित-भी। फिर वह निसार की खाट पर बैठकर चेहरा पोछने लगी। हाँठों पर सनिक न काट खाया था और खून बह रहा था।

घनसिंग को घेर लिया गया। कोई निणय नहीं कर पा रहा था कि उसका क्या किया जाये? तभी एक सैनिक ने उसकी पसलियाँ पर हात जमा दी, दूसर ने कूल्हा पर तीसरे ने खोपड़ी पर बंदूक का कुदा बजा लिया। घनसिंग गिर पत्ता। दाखाँ पटी अँखिों स इस दृश्य को देखती रही। दनादन घूसे चल रहे थे। अचानक उसने एक सनिक को धक्का दिया और चिल्लायी 'सूअरा तुम इसे मार हो डालोगे क्या?' वह घनसिंग मे लिपट गयी।

एक अघेड सैनिक ने, जो ठरें म धुत्त था सुझाया, 'दोना को पकड कर छावनी ले चलो !'

घनसिंग और दाखाँ को रस्ती से बाध दिया गया। वे उहे धकेलते हुंग ढाणी से बाहर चले गये। एक फौजी न भूत सनिक को पीठ पर लाँ लिया और अलापन लगा 'हाय हमीद प्या-आ रे !' उसके स्वर मे दु ख की कोई गाँठ थी या खुशी, पहचानना मुश्किल था। भीड छँट गयी। ढाणी इतनी जड और नि शक्त थी मानो अब कभी जिंदा नहीं होगी। सर्वो डक मार रही थी। मैंने जब स आधी पी हुई मिगरेट निकाली, होठा तक नात-नात उस अँगुलियों से ममल दिया और अस्थिर हो उठा।

बाऊ ऊँटनी की गरदन सहला रह थ नि सग और भयकर रूप मे भाव भूय। 'इस बूटे को सहना आता है यह आदी हो गया है,' मैंने सोचा और जबसाँ में डूबने लगा। हिकारत और मितली ! मैं कायरता के दो हिस्सा म बँट गया।

निमार की लडकी कुछ देर पहले की दुघटना को भूलकर प्याज रोटी खा रही थी। काँची की थाली पर वह इस तरह धुकी टूट थी मानो अपना चेहरा देख रही हो। उसकी पिंडलिया और कुहनियो पर छोटे-छोटे घाव थ।

रात को एवत्तम नीद टूटी तो किसी की सिमकियाँ मुनायी दी। कम्बल सपटकर बाहर चौगान म आया। चाँदनी घुप घुप चमक रही थी टीलों

पर। रेत बर्फ सी ठंडी रेत में मुट्टियाँ मारती हुई दाखाँ फफक फफक कर रो रही थी।

“अज्जू ! उसकी देह में अघड उठा हुआ था।”

“तुम्हें छाड दिया उहोने ? मैंने पूछा। पर वह स्वर मेरा नहीं था। दाखाँ ने सिसकारते हुए हाँ भरी।

“और घनसिंग ?”

उसे गोली मार दी भेरे सामन ही।” वह फिर मुह में आडनी ठूस कर रोने लगी। आँसुआ से तर एक ध्वस्त परास्त चेहरा। उस पर पीडा ऐँठ रही थी।

मैंन चाहा कि मुझ पर उसके रदन का कोई असर न हो, मैं खाला पीपा बना रहूँ पर अचानक मुझे लगा कि घनसिंग की आत्मा की शांति के लिए हम प्रायता करनी चाहिए।

“दाखाँ उठो ! प्रभु के आगे हाथ जोड दो ! मैंने कहा। पर वह नहीं उठी। मेरे मुह से निक्ला, हे ईश्वर, हे भीच ईश्वर !”

आँखें बंद हो गयीं। कपाल में घुआ भर गया।

तडके गोलियों की आवाजा से कान फटने लगे। फिर हवाइ जहाजों का शोर और बमों के घमाके। घरती मडकी की तरह उछलन लगी। सूरज निकलने के साथ ही सुना कि चीकी फिर हिंदुस्तान के कजे में जा गयी थी। बाऊ दाखा, मैं और दूसरे लोग दौडकर छावनी तक गये और दु खद आश्चय से भर उठे। बल बाल सैनिका और इन सैनिकों में अभुत समानता थी। वसे ही चेहरे। मार-काट की मनहूसियत में पुते हुए। खूखार। अलबत्ता गहराई से देखने पर आँखों में उदासीनता और हमदर्दी का पुट मिल जाता था अनिश्चित-सा।

उस रोज से लडाई वाकायदा गुरू हो गयी।

जखम के चारो ओर

एक छागी-सी टीवडी के बाद रास्ता खरम हो गया और सामने सपाट तल्ला नजर आने लगा। हवा के मग उड़ती हुई बालू के पीछे आसमान छिपा हुआ था फिर भी वहीं वही तारा की रोगनी गिर जाती थी और तूणिया एकदम चौंकर अपने आसपास के पडा को घूरने लगता था।

अंधेरा जस तनकर खडा था। खम्भ की भाँति। गुस्से में आँखें चढात हुए हाकिम की भाँति। तूणिया रुका। जूतियो में फँसी हुई रत उसने भाड दी। उसके घुटन दक्ष कर रहे थे और चेहरे पर हर क्षण एक नया खिचाव उभर आता था। बनपटियों के नीचे मूजन बढ़ती जा रही थी।

उसने एक तरफ मुह मोडकर पूका। होठ धुले तो लगा वहाँ भी बनावट है। चमडी इतनी सहन पड गयी थी कि जरा-सा जबडा हिनते ही चिर जाने के लिए उतावली ही रही थी।

‘समुरी भोमावखी !’ तूणिया भुनभुनाया। दोपहर को जगल पार करत हुए उसने जब भाडियों के बीच मधु-मनिषयो का छत्ता देखा तो गहल खान के तौम को न राक सका। बस भी वह एक पलवारे से उबली हुई बाजरी के दान फाँक रहा था, नमक के साथ। गले में खारा स्वाद जम

गया था। छत्ते को दखते ही उसन फेंग हाथा पर नपट दिया और पाता तानकर टूट पडा। अगल क्षण चिप चिप करता हुआ छत्ता उसकी उँगलियो म झूल रहा था डठल समेत।

वह भागा। आधा कोस तक मधु मन्खियो ने उसका पीछा किया। वे उसके शरीर पर डक लगाती रही पर दौडते-नौडते भी लूणिया न साग शहद कटोर म उतार लिया। वह कटोरा इस समय उसक सिर पर फेंटे की तलाई म रखा हुआ था।

अगर फेंटा कुछ बडा होता तो उस चहरे पर भी लपेट सकता था। तब थोडा बचाव हो जाता। लूणिया ने सोचा और तल्ल म उतर गया। डक जल रहे थे। एक बचन-सी इच्छा हुई कि जहाँ जहाँ मूजन तप रही है वहाँ गीली मिट्टी का लप कर ले और तनिक देर के लिए किसी टील की ठडी ढलान म सो जाय। पर कध पर टेंगी हुई लोटडी म बूद भर पानी भी नही था कि गला तर कर सके। फिर रात गहरी हाती जा रही थी और दिशा भूलन का डर उसके मन पर छान लगा था।

तारो की हिरणिया' को देखकर उसने अनुमान लगाया कि वह ठीक रास्त पर है। तल्ले म मरे हुए मवेशियो की सटाँध और एक बुरी-सी चुप्पी दम घोट रही थी। दररुतो पर किसी पसेरु की फडफवाहट तक नही। उसे लगा, वह किसी गुनी सुगनी की तरह रात के अनदेखे रहस्य म से गुजर रहा है। तभी पाँवो से किसी जानवर की खोपडी टकरायी। लूणिया उछल कर उसे लाँघ गया।

एक मोड जाया। तब टीले और पत्थरा के ऊच डेर। लूणिया आँखें फाड फाडकर चीतरफदेखन की कोशिश कर ही रहा था कि कुत्ता भौंका। उसके दौडने की आवाज आयी।

लूणिया पेड की आड म हो गया। लेकिन कुत्ता और भी जोर स भौंकने लगा। सास सभाल कर लूणिया ने दो चार दफा खखारने की चेष्टा की। उसक मुह स निकला, दुर दुर हट स्ताल।'

कौन है? एक भारी आवाज गूजी, जसे कुएँ म भाटा फेंक दिया हो किसी ने।

लूणिया आगे बटा। जान-बूझकर मुह-नाक से आवाजें बनाता अपने

होन का एहसास कराता हुआ ।

मैं — लूणिया, भोजासर वाना । उसने अँधेरे में चिल्लाकर कहा । पास की टेकड़ी पार करते ही उसने जलती हुई आग का उजाला देखा । हवा में धुएँ की गंध तर रही थी ।

एक अँधेरे आदमी जिसका चेहरा पीला और गडबडा सा उबड़-खाबड़ था आग की ताकत हुआ बैठा था ।

‘ जै राममा-पीर की ! ’ लूणिया ने कहा ।

‘ ज ! ’ उसने वेमन-से होठ खवाये और घुटनों के नीचे दबे हुए कुत्ते को थपथपाने लगा । कुत्ते के नघुना से गुर्राहट फूट रही थी और लाख लूणिया की तरफ लगी थी ।

लूणिया खड़ा रहा ।

‘ बैठो ! ’ आदमी ने कहा ।

‘ तुम्हें किसी ने मारा है ? ’ उसने पूछा और कुत्ते के कान में अँगुली उलझाने लगा ।

‘ मोमाखड़ी ! ’ लूणिया ने कहा । चेहरे पर हाथ फेरा तो लगा मूँज न बेहिसाव बढ़ गयी है और गाना पर गूमड़े उठ आये हैं । आँखें भी अंदर घँस गयी थीं ।

‘ मामाखिया को छोड़ा तुमने ? ’

‘ नहा छत्ता तोड़ रहा था । ’

‘ तोड़ लिया ? ’

‘ हाँ गहद कटोरे में है । ’ लूणिया ने फेंटा खानकर कटोरा हाथ में ले लिया और आहिस्ता से बठ गया ।

‘ मुझे थोड़ा शहद दो । ’ आदमी ने हाथ आगे किया और कटोर में अंगुली डाल दी । एक धार जीभ में लेकर मुँह चलाने लगा ।

‘ पानी है यहाँ ? ’ लूणिया का गला सूख रहा था ।

‘ उधर घड़ा रखा है पी लो ! ’

लूणिया ने हाथ धोकर पानी पिया । कोर ताजे घड़े की ठडक अंदर उतर गयी । वह मुँह पर छीटे मारने लगा । जलन कुछ शांत हुई । फेंटा भिगोकर उसने चेहरे पर इस तरह लपेट लिया कि सिर्फ आँखें बाहर रही ।

क्या नाम है तुम्हारा ?” लूणिया न तम्बाकू की तलय म इधर उधर टोहत हुए पूछा । आदमी ने आँटी स चिलम-साफी निकाल कर उसकी ओर बढ़ा दी ।

‘जठा । गाँव खारडा । डब लो म्हीन स यहाँ आया हूँ । इस पुग्गी म ।”

“एक बार मैं मारडी गया था उन बेचन क लिए । लूणिया न चिलम पर अगार रखकर पहला कश लिया साँवत मघवाल क घर ठहरा था मैं । वह वही है आज-कल ?

साँवत को पिछने कातिक मे पुलिशिय पकड ल गय । जठा ने अभी शहूँ म अगुली डाल रयी थी उसन पटवारी पर बछीँ चना दी थी । खेत-लगान का मामला था ।

तुम क्या करते हो इस जगह ?”

आगे सडक बन रही है । ठेकेदार मारा मान यही जमा रखता है । उधर दखो पत्थरा के ढर रोडी चूना औजार—सब पडे है । मैं रखवाची करता हूँ ।”

‘मुझ रुजगार मिल जायेगा ? ’

हाँ नौ-दम कोस आगे । सडक पर ज्यादा मजदूरो की जरूरत पड सकती है ।”

काला जकाल है । लोग दर दर भटक रहे हैं रोजी क लिए । एक मजदूर की जगह बने तो सौ जने सिर के बल चलकर आत है ।

अगारा पर राख जमने लगी थी । लूणिया ने जगर म कुछ लकडियाँ डान दी ।

‘ठेकेदार आएगा तब मैं उसस तुम्हार लिए कह दूंगा ।’ जठा न उवासी ली । कुत्ता उसके घुटनो के नीचे स निकल कर कही चला गया था ।

अगर मुझे काम नहीं मिला तो मैं हत्या कर दूंगा ।’ लूणिया की आँखो म आवेश की चमक भर गयी ।

तम खून नहीं कर सकते ।

कर सकता हूँ ।

किसका ?”

‘किसी का भी।’

जेठा हँसा ‘भारना इतना आसान नहीं होता।’

लूणिया न कोई जवाब नहीं दिया।

‘कई बार मैंने भी कोसिंग की है। हाथ काँप जाता है।’

‘मैं नहीं डरूँगा।’ लूणिया ने जूतिया खींचकर परे रख दी और एडियो को रेत में धँसा दिया, “तुम किसे मारना चाहत थे ?”

‘अपनी लुगार्ड को।’

‘क्यों?’

‘वह जवान की बहुत बडवी है।’

लूणिया चुप रहा।

‘उसमें मुझमें क्यादा ताकत है।’

जेठा का स्वर फँस गया। थोड़ी देर वह चुप रहा। फिर बोला “वह चाहे तो वहाँ सड़क पर जाकर काम सकती है, किन्तु उसे मेहनत करना मुहाना नहीं। अब्बल दर्ज की कामचोर है।”

‘लो, चिलम पिओ।’ लूणिया ने कहा।

‘गालियाँ देने में उसका कोई मुकाबला नहीं। वबात गल पड जाती है। ठेकेदार तन को नहीं बरेशती।’ जेठा ने चिलम खींचकर मुह फेर लिया और लम्बी लम्बी सास लेने लगा।

‘मुझे भूख लगा है। लूणिया ने आग में आखें गडाकर कहा।

एक औरत तजी से चनकर आयी और ओढनी के छोर को लहंगे में खामती हुई बोली ‘भूख लगी है तो अपना हाथ चबाकर खा जाओ। यहाँ कुछ नहीं है।’ वह हाँफ रही थी। कुत्ता उसकी बगल में प्रकट हो गया धीरे धीरे दुम हिनाता हुआ।

‘बक-बक मत कर बेशऊर।’ जेठा चीखा।

औरत पर कुछ असर नहीं हुआ। उसने सरल ढंग से पूछा “शहद कहाँ से आया है ?”

जेठा ने आग की राशनी में शहद की धार बनायी फिर कटोरे को हिनाते लगा, ‘यह लाया है। लूणिया। सड़क पर काम करेगा।’

जलम के आखें और

‘तुम्हारा जी कमा है ?’ औरत की कठोरता पिघली ।

‘ठीक है ।’ जेठा भेंपत हुए मुसकराया, ‘इसे कुछ खान को द ।’

ज्वार के टिक्कड है । शहद के साथ अच्छे लगेंगे ।’ कहकर औरत झुग्गी में चली गयी ।

‘तुम बीमार हा ?’ लूणिया ने पूछा ।

‘ठेले पर से पत्थर उतार रहा था तो एक पत्थर खुटक कर छाती पर आ गिरा । तब से दद है । खून की उल्टी भी हुई ।’ जेठा ने नाक खुजलात हुए कहा ।

हल्दी पकाकर खाओ । ठीक हो जाओगे । कुछ दिन लुगाइ से परहज रखना ।

अच्छा ।’

झुग्गी में बतनो के खटपटने और गुनगुनान को मिली जुली ध्वनियाँ उत्पन्न हुई ।

‘तुम्हारी औरत का नाम नधिया है ?’

ज—हा तुम कैसे जानते हो ?’ जेठा चौका ।

‘यह पहले मेरे पास थी ।’

दोना के बीच खामोशी टग गयी ।

‘तुम इसका मद रहे हो ?’

‘हू तीन साल तक । फिर हम अलग हो गय ।’

‘इसका वच्चा नहीं होना था इसलिए ?’

‘नहीं । कई बरस तक बरखा नहीं हुई । भोजासर खानी हा गया । भूख ने मुझे भी लाचार कर दिया कि घर छोड दू और मासवे की तरफ निकल जाऊ । इसने मेरे साथ चलने से मना कर दिया ।

‘क्यो ?’

‘यह अपना गुजारा कर लती थी । सिरपच का भाई इसे सग रखन के लिए राजी हो गया था ।’

तेल की चिमनी और कटोरदान लेकर औरत लौटी ।

जेठा ने एक तिनका जलाकर चिमनी की बत्ती से छुआ दिया । मद प्रकाश फल गया । औरत न टिक्कडो पर शहद रागाया और उह बाँट

निया। खाते वकत लूणिया को लगा, वह बहुत उतावली में बौर निगल रहा है। इस बार उसने इतमीनान से गस्ता बनाया और कुछ मोचता हुआ जुगाली-भी बरत लगा। नयिया की मुदर आखें और ठुड्डी पर गुदने की नीली पत्ती। हथेलिया में हथफूल भी हाये। उसने रामदेवरा के मल में गुदवाये थे।

वह बेचनी से उफनने लगा। अभी अगर बेहरे पर लिपटा हुआ फेंग हटा दूँ तो यह मुझे पहचान जायगी। फिर लूणिया न उधर पीठ कर ली। उसके भीतर गुनगुने जल का एक सोता फूट आया था और वह रहा था। बेआवाज।

खाने से निपटकर औरत ने टाट की दरी बिछा दी और जठा से बोला 'तुम बदन सीधा कर लो। मैं एक चिलम पिळंगी।'

जेठा उठा और दरी पर जाकर लम्बलेट पड गया।

कितना समय बीत गया।' लूणिया ने सोचा। उसके मुह की खचा में डक बसबने लग। सूनन बदन तक उतर गयी थी और टेंबुवे के आसपाम ऐसा महमूस हो रहा था जैसे धूहर के बाटे बिपक गय ह। वह पीडा का भूलन की चष्मा करने लगा।

दूर ऊँग की बिलबिलाहट हुई। सनाटे की मघनता बिबर गयी। औरत चौककर उठी। कुछ क्षण अघरे में टीली क पार धूरती रही। फिर बाली और सामान आया है। मैं छिकाने लगाकर आनी हूँ।

आज कितने ऊट आ चुके? जेठा ने पूछा।

दो बम दस।' औरत ने कहा पाँच रोडी के तीन खोर के।'

मुरदे रात को भी चत नही लेने दत।" जेठा न चिन्कर बरबट बदना।

'लुम्हारा चैन कौन छीन ग्या है?' औरत का स्वर तीखा हो गया। उमन बजों में नाक दबाकर मोत हूत कुत्ते के टाकर मगायी उठ ग आनसी। मेरे साथ चत।

कृता हलफला कर उठ खडा हुआ। आखें मिचमिचान हुए उसन मांगपांग जंगहाई ली, फिर औरत के पीछे-पीछे चत पडा। उनके पाँवों का आहट घीमी होनी गयी।

तुमने दूसरी कर ली ?” जेठा ने लूणिया की तरफ सिर घुमाया ।
 ‘हाँ ।’ लूणिया ने अनमनेपन से कहा । पता नहीं क्या, उसके मन में
 नफरत सुलगने लगी थी । या हिंकारत । अपने प्रति ? वह तय नहीं कर
 पाया ।

बाल-बच्चे हैं ? जेठा उस खोद रहा था ।
 ‘नो छोरियाँ हुई । दोनों मर गयी । एक चक्क से दूसरी भूख से ।’
 एक धमाका हुआ । शायद ऊँट पर से बोरा गिराया था । जमीन पर ।
 कुछ मरदाना आवाजें धमाके में डूब गयी ।

तुम नधिया को मारने की बात क्या सोचत हो ?’ लूणिया ने शक्ति
 घटोर कर सवाल किया ।

जेठा ने अपनी आँखें ज़ार से मली और जगो को गट्टर की भाँति समेट
 लिया ।

यह सुभाव में करखरी है लेकिन दिल से बिलकुल हरी । लूणिया ने
 नफाई सी देत हुए कहा ।

‘मुझे लगता है अगर मैं कुछ नहीं बिया तो किसी दिन यह मुझे
 मार डालेगी,’ जेठा के स्वर में भातक था धोखा देकर या कुछ खिला
 कर ।

‘नधिया ऐसी नहीं है । लूणिया ने अनिश्चित ढंग से कहा लेकिन
 कभी माथे में उल्टी जच जाए तो—यह कुछ भी कर सकती है ।

मेरे भीतर बुरे-बुरे विचार उठत है । जेठा निडाल होकर पसर
 गया और ऊपर देखने लगा । आकाश गगा में तारे झिलमिला रहे थे फीके
 और अस्थिर ।

लूणिया ने खानी कटोर को रत से माँजा और काँध में दबा लिया ।

‘अब मैं चलूँगा । उसने कहा ।

सीधे दक्खिन में निकल जाओ । आगे का रास्ता चौड़ा है । रात भर
 चलत रहे तो सुबह तक मुकाम पर पहुँच जाओगे । जेठा ने हाथ का इशारे
 में बतलाया ।

इसे समझा दो मुझे किसी की मौत नहीं चाहिए । अँधेरे में
 आवाज आयी । ककश । व्यंग्य से सनी हुई ।

लूणिया अचक्का गया। औरत न कुत्ते को कंधे पर टांग रखा था और उसका एक पाव सहना रही थी। आँखें जेठा पर टिकी हुई थी।

जेठा का चेहरा भय से पीला पड़ गया।

“तुम ता अब खुश हा ?” औरत लूणिया की तरफ देखकर बड़ब्राहट से हँसी।

लूणिया निरुत्तर-सा खड़ा रहा। फिर तज़ी से पलट कर टील की ढलान में उतर गया। नीचे जाकर वह रास्ता टटालने के लिए ठिठका। एक क्षण के लिए पीछे मुड़कर देखा। औरत जेठा की बगल में जाकर लेट गयी थी। चिमनी बुझ गयी थी और आग किमी पुरान ज़रम की तरह चमक रही थी। ज़रम के चारों ओर अंधेरा था।

पानी की आवाज

बस एक खास माइड पर बहुत तज आवाज करती हुई रुक गयी। लोग इस तरह उठ खड़े हुए और कुहनियाँ चलाकर दरवाजे की तरफ बढ़ने लग जस भीतर बर का छत्ता टूट पडा हो। एकदम सब कुछ असह्य हो गया। मैंने दयापूण दष्टि से अपनी सीट की तरफ देखा—अपनी! हा अभी आघा घटे तक मैं उस पर बठा रहा था। वह भद्दे ढग स नीचे को दबी टुई थी। चमडा फटकर खत्रियल कुत्ते क कानो की तरह लटक आया था सफूसडे बाहर भाक रहे थे और नीचे क लोह का एक घिसा हुआ हिस्ता नजर आ रहा था। मुझे लगा मैं घटो यही खडा स सीट को देखता रह सकता हूँ। इस दरिद्र टूटी हुई सीट को। यह एक चीज है जिसे देखा जाना चाहिए। पर तभी मैंने देखा कि ऐसी देखने लायक चीजें पूरी बस म बिखरी हुई थी। बिखरी हुई' की जगह मैं जमी हुई' कह सकता था लेकिन मैंने नहीं कहा।

एक बच्चा और दो बुढियाओ के पांव कुचलता हुआ मैं नीचे उतर आया। पीठ पीछे मैंन उनकी भत्सना सुनी। बच्चा चिल्ला रहा था और काफी विश्वास से अब तक सीग्वी हुई गालियो का इस्तेमाल कर रहा था।

बुढ़ियाएँ सिर्फ बड़बड़ाकर रह गयी। यह उम्र का अमर था। चिल्लाना अपन अन्तिम स्तर पर बड़बड़ाहट में बदन जाता है।

मैं हूँमा। यह हूँसी ग्लानि और शम को फोड़ कर निकली थी। फिर पसीने से तर माथे को छुआ। नाक और हाँठा के ऊपर भी पसीना था। हथेली से उसे पाछत हुए मैंने एक लंबी साँस ली और फिर उतने ही लंबे-लंबे डग भरता हुआ चल पड़ा।

सबसे पहले मैं उस सड़क पर आया जो अपन गहरे, चमकील कालपन में मुझे हमेशा सुंदर लगती थी। सड़क के आम-प्यास की दुकानों वाले मुझे जानते थे और यह ऐसा परिचय था जो रोज़ रोज़ एक-दूसरे को देखने से हो जाता है। बातचीत या खुलपन के व्यवहार जमा बीच में कुछ नहीं था। अपने आश्वासन के लिए मैं इसे सीधा-सपक' रहता था। पड़-पौधों, मकाना, सूर्य, आकाश से हमारा बातचीत का रिस्ता नहीं होता, पर हम उन्हें जानते हैं और यह परिचय दूर तक साय देन वाला होता है।

तीन दिन पहल इस सड़क पर से मैं कुछ लोग के साथ गुजरा था। व मरे साथ हैं यह एहसास मुझे रास्ते भर गर्बित करता रहा। तीन दिन पहल मैं थका हुआ, पर गव भरा यहाँ से गुजरा था। मेर कधे झुके हुए थे। अर्धों क बाँस को उठात ही मेरी नत्तें तन गयी थी और मैं उसने भारी शरीर को दु ख और हिकारत की निगाह से देखा था। वह मेरा भाई था। उम्र में मुझसे छोटा। डीलडौल के कारण लोग उस मुमम बड़ा समझने थे और वह इनकार नहीं करता था। मुख से मुमकरा दंता था। सचमुच वह तगडा था। खूब खाता-पीता था। उसका हाजमा ठीक था। मुझे रात को इसफगोल की भुरकी लेते हुए देखकर वह हूँमता था। उसकी हूँसी में अपमान का भाव नहीं था पर आदर भी नहीं था।

बड़ी मुश्किल से मैंने अर्धों का बाँस अपने कधे पर चढाया और उसे रखते ही लगा कि वह सूखी चमडी को चीरता हुआ मांस में घँस जाएगा। मांस की हलकी-सी परत वहाँ थी। बाँस हडडी में चुभन लगा। गरदन अकड गयी। तबचा क खिचाव से धीरे धीरे कराहता हुआ मैं चल रहा था। भजन गाने वाला के स्वर में मेरी आह-उह दूर जाती थी। मैंने पाया कि अर्धों को सहारा देन वाल और लोग चालाकी कर रहे थे। वे एक तरफ़

हटे हुए से चल रहे थे और ज्यादा-ज्यादा बौद्ध मुझ पर डालना चाहते थे। मैं बुरी तरह झुका हुआ हाँफ रहा था। यह भाईपन का नतीजा था। वे मुझे दुःखी और हताश देखना चाहते थे। उनकी इच्छा पूरी हो रही थी। बाढ़ी तक पहुँचते पहुँचते मैं भरपूर सहानुभूति के लायक हो गया था। सिर फटा जा रहा था। आँखें जल रही थीं या शायद बुझा हुई थीं—ठीक-ठीक याद नहीं है। लेकिन कंधे दब स मुन पड़ गये थे और रीढ़ की हड्डी न होने' के बराबर हो गयी थी। मुझ थोड़ी राहत मिली थी तो केवल इस बात से कि शमशान जैसी जगह का नाम लोगो ने बाड़ी रख छोड़ा था। इस शब्द का उच्चारण मैंने कई दफा किया। हर बार मुझे लगा कि मैं मुक्त हो रहा हूँ। दुःख ने तनाव में खींचा और पश्चात्ताप से। मुक्ति का एक रास्ता मैंने खोज लिया था और लगभग तटस्थ होकर भाई को जलते हुए देख रहा था। उसका शरीर कई हिस्सों में बट गया था। चर्चों पिघलकर लकड़ियों के बीच में फन गयी थी और कहीं-कहीं से उसने आग को बुझा दिया था। एक आदमी लाठी से अगारों को इकट्ठा कर रहा था। वह भाई के छिटके हुए जगों को भी बटोर रहा था और उन्हें जलने लायक स्थिति में पहुँचा रहा था।

उस वक़्त मेरा मुँह धूँक से भर गया था। धूँक का स्वाद फीका और उबकाई भरा था। एक क्षण के लिए लगा कि वह धूँक नहीं अंधरा है। मैंने लोगो की निगाह बचाने के लिए पिचकारी छोड़ दी और मुँह पोंछने लगा। तभी पीछे से किसी ने जैंगली गडायी क्या कर रहे हो? धूँकते हो?

मैं सहमा काप उठा। रागटे खड़े हो गये। मुड़कर कहने का न को देखने की हिम्मत नहीं हुई। अपराधी-सा खड़ा रहा। भाई की अधजली खोपड़ी मेरे सामने थी।

यह तीन दिन पहले की बात है। दुपहरी में खाना खाकर सो रहा था कि गीता न आकर जगाया। वह बेहद डरी हुई थी और ठीक से नहीं बोल पा रही थी। हकलाते हुए उसने बताया कि भाई को कुछ हो गया है। मैं उठा। लुगी की गाँठ को बसा फिर पावों में चप्पलें डालकर गीता के कमरे में गया। भाई खाट पर अँधा पड़ा था और दोना हाथा स छाती को

सुरी तरह मसल रहा था। पहले भी दो-एक बार उसकी छाती में उठ चुका था।

मैंने गीता की तरफ देखा, वह गहमी-मी खड़ी थी। पति का इस तरह तटफटाना उसमें बर्दाश्त नहीं हो रहा था। उसकी आँखों में अजीब-सी कण्ठा और याचना थी।

मैं धापन अपने कमरे में आया, टांगा में पतलून फँसायी और रिवगा लाने के लिए दौड़ पड़ा।

अस्पताल में प्रवेश करते समय वह बहो गी। गीता उसकी बगल में गिर झुकाए बठी थी। मैं बराबर में मायबिल पर था।

यह तीन रोज़ पहन की घटना है। भाई की दिल का दौरा पड़ा था। उस का साल स बन्द प्रेशर भी था। वह बचा नहीं। गीता और मैं उस तक घर सीट आये।

मैंने महसूस किया सड़क पर आजू-बाजू के लोग मुझ घूर रहे थे। घूरना — यह मेरे मन में उपजा था। मैंने डरते डरते गिर उठा कर देखा, सब अपने काम में लगे थे। मुझे कोई नहीं दृष्ट रहा था। जो पार न उचटती-मी निगाह डाली बस।

वह गली एक बन्द बही की तरह थी। म्याही व नुरील थाकारा में डूबी हुई। चलने हुए लगता कि मैं किसी मुनीम का तरह उस बगल में दवाकर चल रहा हूँ। वह मुझ पर सवार है। जगह-जगह सँबरे गलियारों के धाराओं की तरह फूटत हुए। गलियारे सदा उमम में भरे रहते थे या फिर सीजन में। चारा ओर एक परलू किम्म की गध की मैंने महसूस किया। घरों के नहानघर बाहर थे और उनके आग परतयों के चौरार पटने पड़े हुए थे। अधिकांश दीवारें उखड़ी हुईं। उनमें से इटों के लान चहरे भाँक रहे थे। इमारतें इस तरह थीं जैसे रेवड में कई भईं सिर जोड़कर खड़ी हों। उनके भीतर स निकल कर आन वाली आवाजें मिमियाहट स अधिक कुछ नहीं थीं। रागन के घबड़े किसी पत्रिका के मुखपृष्ठ का मगाना जुटा सकत थे। दरारा में चूने के फुन्ने मुझ बाध पडे थे। मुझ अपने भाइ का चेहरा याद आया। मरने के थान उसका मुँह जम किमी चीज को खान के लिए खुला रह गया था और सामने के पील दाँता का साफ़-साफ़ नेत्रा

जा सकता था। भोजन करने पर वह दर तक तिनको सं दंत बुरेदता रहता था। बीच बीच में पिच पिच की आवाजें इस तरह छोड़ता जैसे उनका द्वारा कोर्न मगीत पदा कर रहा हो। उसकी यह आन्त खराब थी। मुझे बुरा लगता पर मैं चुप रहता और भाई के मुख पर सतोप की आभा देखने में मशगूल हा जाता। भाईपन के कारण मैं उसकी ओर अपनी कमजोरियों को तूल नहीं देता था और उन्हें ढकने की कोशिश करता। वस हम दोनों एक दूसरे से वाकफ थे और टंकन वाली स्थिति बचल गीता के सामने आती थी। यह वाकफियत इतनी आगे बढ़ी हुई थी कि अकसर हम आपस में उपेक्षा का बरताव करते उपेक्षा का नहीं तो निम्नगता का।

गाता को हमसे कोई शिकायत नहीं थी। घर में वह अकेली औरत थी और पडास में कही जाने का शौक भी उस नहीं था। वह आभोगी सं सब कुछ करती जाती। खाना बनाने से लेकर कपडों पर इस्तरी करने तक। कभी-कभी मुझे लगता कि गीता की चुप्पी सायास और दुर्भावनापूर्ण है। मुझे सकोच होने लगता था। मुझे यह भी महसूस होता कि गीता मुझसे कुछ भयभीत रहती है। भय की लकीर काफी लकी पिच गयी थी। इसका कई कारण थे और मुझे उन कारणों की तह में जाने पर कपकपी छूटने लगती थी। तगता, जैसे अचानक हडिडयो के जोड जोर-जोर सं बजने लगे हैं और उनमें से एक पीला पदाथ निकलकर शिराआ में समा गया है। रफन रफन वह पीला पदाथ मेरे पूरे शरीर पर कडा कर लेता और मुझे अपने में सं दुगंध आने लगती थी। मैं खांसने लगता और बलगम के सहारे बार बार उस दुगंध को फेंकने की चेष्टा करता। खांसते खांसते मैं खीझ उठना और मुझे बुखार चट जाने का डर होने लगता था।

असल में यही बात सही थी। यह खांसने और बुखार आने की बात। गीता की शान्ति पहले मुझसे होने वाली थी पर ऐन मौके पर डाक्टर ने कह दिया कि इसके फेफडे क्षय सं गलत जा रह है। मुझे कतई विश्वास नहीं हुआ पर एकम रे न मेरे विवृत फेफडों को टूटे हुए पखों की तरह सामने प्रकट कर दिया था। फिर मैं कुछ नहीं कहा। न डाक्टर सं न गीता से। आने वाले दिनों में मैं काफी समझार हो गया और अपने फेफडा के प्रति

मर मन म मोह या प्यार का-या भाव जग गया । मुझे लगता कि मेर फेफ्फे गन रह हें और मैं उनस प्यार कर रहा हूँ । खतम हाती हुई चीज के प्रति किय गय प्यार को तुलना म नही रखा जा सकता, वह सब स ऊपर होता है—एक आत्मी के डूब जितना ऊपर ।

गली आग जाकर गालाई मे दाहिनी तरफ मुडती थी और वहाँ स छोटा-छोटी कोठरिया का सिनसिला शुरू हाता था । य कोठरिया पन बचने वालों क गोला म बनी हुई थी । इन पर बड़े-बड़े जग-जगे ताल भूल रह य । कुछ पुरान साले ता किमी तीग्री गिगु की तरह लग रहे थे—कुण्डा म हाथ डान कर लटकत, पाँव पटकते हुए । काठरियो क आगे घाम-भूस दोने, टोसरियाँ, छिनके और कागज के टुकडे फैल हुए थे । गली म मुडत ही पना की मीठी खुशबू नखूनो म भर जाती और मन फडकने लगता था ।

गली थोडे फासले के बाद खूब चौकी हो जाती थी । वहाँ जयपुरी ढग का एक दरवाजा बना हुआ था जिस पाल बहा जाता है । चादपाल मूरजपोल की तरह का ही यह एक अनाम पोल था । इस का काई नाम होगा भी तो मुये मालूम नहीं था । दरवाजे म एक-दो गायें और गधे हर बकन खडे हुए मिल सकते थ । वे कोठरियों के आगे का घास-फूस उठा ल आत और सलनीनतापूवक उस चवाते रहत थ । दरवाजे की पुताई राख-जमी हो चुकी थी । उस की बायी दीवार के काने पर तीर का निशान बना था और उम क सामने नीने अक्षरों म उस प्रेम का नाम लिखा हुआ था जहाँ म मेरा साप्ताहिन अखवार छपता था । दीवार की छूती हुई एक नाली दूमरी तरफ सीधी चली गयी थी । नानी के किनारे बादामी रग के हो गय थ, उम म प्राय सावुन का पानी बहता रहता था ।

मैं एक पाँव का आगे बढ़ाकर उछना और नाली को लाँघकर एक नुरग-जैसी गली म घुम गया । वहाँ हल्का-सा अंधेरा और दलदल की-नी बू थी । पकी हुई स्थायी बू । प्रेम की मगोनी की खडखडाहट के सिवा और कुछ सुनाई नहीं क रहा था । दीन के एक लहरील दरवाजे की धक्का देकर मैं उम बाडेनुमा मकान में घुसा । सामने दालान था जिसम रत बिछी हुई थी और उस उडन स बचान के लिए पानी छिडका गया था । गीली रत पर चनत हुए मैंन पाँव क निशान छोडे । एक लम्बे चौडे चौवारे मे सात

आठ कम्पोजीटर काम कर रहे थे। उनके सिर झुके हुए थे। हाथ जल्दी जल्दी उठ गिर रहे थे। खम्भे के पास लगे हुए खाने पर एक बूड़ा आदमी पेज भर रहा था। उसके कपड़ों पर जगह-जगह काले दाग लग रहे थे। उगलियाँ जड़ों तक काली पड़ चुकी थी और उनके पोर स्याही में भर गये थे। मैं उसके पास जाकर पूछा 'आज दीनू नहीं आया क्या ?'

उसने मेरी परेशानी को भाँप लिया। एक बार सिर उठाकर मेरे चेहरे का देखा, फिर बुदबुदाया 'दीनू !'

मैं कुछ देर वहाँ खड़ा रहा। बूटा मेरी उपस्थिति से बसबस अपने काम में जुट गया था। वातावरण में एक दहशत भरी स्तब्धता थी और उसमें से टाइप रखने और उठाने की आवाज़ें उभर रही थीं।

मैं चलने लगा तो वह बोला 'दीनू आज नहीं आया।'

मैं रुका और उसकी ओर झुक गया तो लोकमच' का कवर-पेज कौन तयार करेगा ?'

मेरे सवाल के जवाब में वह बोला 'कवर पेज तयार हो गया है।'

मैं आश्चर्य में हुआ। बूढ़े की पीठ पर हाथ रखकर मैंने कोमलता से कहा 'धन्यवाद !'

उसने चौंकर मुझे ऊपर से नीचे तक देखा। उसकी फटी-फटी-सी दृष्टि में सादेह था। मैंने कहा 'आँखें फाड़ फाड़कर क्या देख रहे हैं ?'

वह उसी तरह देखता रहा। उसकी आँखों में लाल रेशे आपस में घुलमिल गये थे। मैं हँसने लगा। अपनी झोंप मिटाने के लिए। मैं उसकी तीखी निगाहों के सामने झोंप रहा था। मैं महमूस किया मेरे होठ थवजह एक खोखली हसी में खुल गये।

बूढ़े ने धाती-बनियान पहन रखी थी। बनियान में हाथ डालकर उसने एक छोटी सी पुडिया निकाली और उस सावधानी से खोलने लगा। उसमें भाँग की तीन मोटी मोटी गोलियाँ थीं। बूढ़े ने एक गोली हथेली पर रखी और उसे गटक गया। गटकते हुए उसके गले की रगें उभर आयीं। टेंटुआ एकबार गोलाकार हाकर कापा फिर धिर हो गया।

मैं अब उसे पुडिया समेटते हुए और उसी बनियान के भीतर की जड़ में खासते हुए देख रहा था। मजाक करने के लिए मैंने कहा 'एक गोली

“वहीं।” उमन बड़ोरता से कहा। मैं तब तक उसकी छाता बार खोपड़ी के सफा वाना की देखने लगा था पर उसके समन स्वन ने मुझे छुआ और मैं एकबार फिर खीमें निपोरन के लिए विवश हा गया।

“बवर-मज कहा गया है ? मेकल्प हम म या मशीन पर ?”

मनीन पर।’ उसने मक्षिप्त सा उत्तर दिया।

मैं कद रोडरियों की लाघता हुआ उस खुने कमर म पहुँचा जहा प्रेम की दा मशीनें चुपचाप खडी थीं। एक तरफ ब्लाकों और बने हुए पेजों के केम रने हुए थे। लोह की बडी मेज पर दो छोकरे बेस बस रह थे। उनमसे एक बावी धुमा रहा था। चावी धुमात हुए उसका चेहरा तिकोना हो गया था। दूसरा धीमी देर ठाक-मी करता रहा फिर बग धेकर बेस का साफ करने लगा। मैंने देखा दोनों मशीनमन उकडू बैठे हुए सिगरेट पी रह थे। उनके बाल हाथों म सिगरेट की सफेनी अजीब-सी लग रही थी। दाऊ जय सिगरेट पीता तो वह उसकी मूछो म टेंग-सी जाती। दाऊद हिटा की छपाई करता था। मुझे लखन ही उसन हमेगा की तरह जोर स कहा ‘नमस्ते, मम्पादक जी’ फिर वह मेरा चेहरा देखकर सकपका गया। शायद मेरा चेहरा विगडा हुआ था उसम किमी को सकपका दन वाना तरव लुकर था।

‘बवर-मज छाप रहे हो ?’ मैंने जवरन मुसकरात हुए पूछा, पर तुरत ही मुझे लगा कि मेरी मुसकराहट दाऊ की अखर गयी है। वह गम्भीर हा गया था।

‘बवर-मज आज ता नही छपगा।’ कहा हुआ वह लोह की मज क पाम बना गया और चम’ की उलट-भानट कर देखने लगा। फिर उसने मुझे अपन नउदीव पाकर कहा ‘अमी ता मैं कलिज वाली विताव छाप रहा हूँ।’

‘देखा बवर-मज माम तक छपना ही चाहिए। यह खफरी है। मुझे लगा, मैं गिहगिहा रहा हूँ, बवर पेज छपगा तो मुझे पैसा मिलगा। उमम तब मरबागी विभापन है। तुम जानते हो मरी हानत इन दिनों वृत्त तग है।’

मेरे निवेदन का उस पर कोई असर नहीं हुआ। वह बेरुखी स बाना
 'लोकमच का काम आज नहीं हागा सा व आप मानिक से बात कर
 लाजिए।'

प्रस का मालिक लडका मा लगता था। उम तीस बत्तीस की होगी
 पर चेहर पर दाढी के बाल बटून कम थे। उसका रग जरूरत से ज्यादा
 गारा था और वह हरदम इन अभिमान मे भरा रहता था। मैं उसक कमरे
 म गया ता वह बिल बुक पर झुका हुआ था और हिमाव बना रहा था।
 वह अक्सर यही काम करता हुआ मिलता था। मैंने देखा उसकी भरी
 पूरी मेज पर एक तरफ लोकमच के छपे हुए छह पेज पड थे। मैंने वे छह
 पेज उठा लिये और बेंच क एक कोने पर बठकर देखन लगा। कमरे म
 तज रोशनी थी। प्रस मालिक के ठीक ऊपर ट्यूब लाइट जल रही थी।

नरेन बाबू, कवर-पेज आज ही छपना चाहिए। मैंने उनका ध्यान
 भग करने के लिए कहा।

उसने एकदम मुझे देखा और हठबडा कर उठ बठा। फिर हाथ मसजत
 हुए दो-तीन बार बोला मुनकर मुझे दुख हुआ बडा दुख हुआ मैंने
 सुना तो बडा दुख हुआ।'

वह मेरे भाई की मलु पर अफसोस प्रबट कर रहा था। मैं चुप रहा।
 वह थोडी देर खडा रहकर वापस बैठ गया। कुर्सी को आगे खिसकाकर
 उमन अपने हाथ मेज पर फना दिये।

कवर-पेज छप गया नरेन बाबू? मैंने अनजान होकर नये तिरे स
 बात शुरू की।

अभी तो नहीं छपा। उसने लापरवाही से जवाब दिया।

कवर-पेज आज छपना चाहिए।'

'आज तो नहीं कल शाम तक छपेगा।'

'कल शनिवार है। आज छप जाए तो मैं कल सरकारी बिनापन का
 पैसा ले सकता हूँ। वहाँ मेरी जान-पहचान के आदमी हैं। लेकिन कल
 छपने पर मुझे सोमवार तक इतजाम करना पडेगा। इतवार को मेरे यहाँ
 कुछ मेहमान आने वाले हैं। भाई के कारण।' मैं इस वाक्य को पी

गया। मरी आवाज़ विलकुल भूख गयी थी। मैं मुह नीचा कर खासन लगा।
खांसी रुक गयी तो देखा, नरेन बाबू विल बनान मे व्यस्त हो गये थे।

मरकारी विनापन कितन का है ?' सहसा उहोने पूछा।

तीन सी का।'

आपका ढाई सी रूपए हमार भी चुकान हैं।'

'हा में चुका दूगा। यह जब निकल जाने पर प्राद्वट विनापना का
खम भी ता आवेगी।'

'तकिन कवर पज ता बल ही छप सकगा। आज ता दोनो मशीनें
खाली नहीं हैं। कइ अजेंट फमें छप रहे है।' उहोंने निणम द दिया।
मुमम नरेन बाबू बहुत कम बालत थे और जब बोलते थे इसी तरह
निर्णायक होकर बानत थे। मैं उनकी बात का विरोध नहीं कर सकता
था।

प्रेस स निकन कर मैंने फिर वही गलिया पार की। सडक पर आया
सो घूप उतरने का सहसास हुआ। मर बुरत की जेड म दो रूपए थे और
कुछ रेजगारी। मैंन दा पान नियो। एक खुद खाया दूसरा पास खडे एक
पत्रकार का खिलाया। पत्रकार न पहल ना-ना की फिर बीडा मुह म
दवा निया और पान बाने से लब्य नम्बर का जदा माँगन लगा।

फिर मैं उधार वमूल करने क निग नगर-मरिपद क दफतर गया।
वहाँ क एक बतक न पद्रह-बीग गेड पहने मुकमे दस रूपए लिय थे। वह
नहीं मिना बीमारी की छुट्टी पर था। दूसरे बतक ने बताया कि बीमारी
का ता बहाना है यह अपनी बाबी का ताने गाँव गया है।

घर पहुँचा तब तक शाम हो चुकी थी। मर हाथ म रुमान की
गठरी थी जिसम मञ्जी बँधी हुई थी।

गीता रमोई म थी। मैंन उमे मञ्जी घमा डी। तीन तिन से हम दानों
की बानसान बड थी।

रात का मैं लिहाफ म मुह डकनर दर तक रोना रहा। किमके लिए ?
भाई क निग गीता क निग या अपन लिए ? मैंने स्वय मे पूछा और राना
रहा। रोत रान गाँगी आन लगी और बुरी तरह हाँपने लगा ता मैंन गीता

को आवाज दी। हमेशा की तरह।

वह भाई के कमरे में सो रही थी। उमने पानी का गिलास लाकर मरे हाथ में थमा लिया। मैं गट-गट पीने लगा। हम लोना के बीच पानी पीने की इस भावहीन आवाज में सिवा कुछ नहीं था। सब आर वही आवाज थी।

हथेली

हथेली-भी आवाज हुई जस खबर की गैद फग पर दधर स उधर जुदक गयी
 हा। पु० न पीठ व बल लटकर अपने हाथ गदन के नीचे समेट लिय।
 अग्रभ्रुन होंग पर एक टूटी हुई हुमक उभर आद। लग रहा था, मांस बफ
 प टुकला की तरह फफडो म जमती जा रही है भीतर बद् गाने बन गय
 ३। उमने धीरे म खँधारा और एक निश्वास छोडकर गँव भीच लिय।

भज पर तन हुए आलू-भटर रमे थ। मगान की तीव्र गध पु० क
 नधुता म भर गयी।

बन्गि-मम बाफ़ी लम्बा चौग था। लिडकिया के बन्ग काल कपाटा
 पर गदाय कुहासे की चिन्त चगी हुई थी। चार नम्बर रिस्तर पर तटा
 श्रा पु० एक बमाना-ना दन्तद्वार कर रहा था, कि थोड़ी दर बाद कुछ
 हुमक मुमाफ़िर भी यहाँ आ जाएगा। और उमक आमपास का म्पिर वाता
 धरण गनिमान हा उठेगा।

मापना करत समय बहू दपतर व लोगा के बारे म माबता रहा।
 दपान और सफ़मता की बासबाल कई चिन्तों स बद् है। अमिन्ट मुगर-
 धादुडर का पन् गानी हुआ है। वे दाना उसक लिए जी-ताड कीछिग कर

रह हैं। बल ही गम बढे मजे से बतला रहा था कि सबगना न किसी लोवन पेपर म दयाल की बुराई छपवाई है, उस चाँदपोल का दनाल बहा है।

रेलवे-कटीन का लडका चाय लकर आया तो पु० उसे खोजती निगाहा से ताकन लगा। वह हाँफता हुआ दरवाजे के पास पडा था। उसकी भीह भूरे वाला म और आँखें गूथता म झूठी हुई थी। सिर असाधारण रूप स चौकीर था। नाक ठड से छिलकर मिच हो रही थी और जब वह मुह खोल कर भाप छाडता तो गानो की नुकीली हडिडियाँ साफ चमकन लगती।

बाहर स किमी ने बडक आवाज दी। लडका हथली स नाक ममलता हुआ भाग गया।

पु० ने महसूस किया इस एक क्षण म काफी-कुछ घट गया है। मूसी छाल-भी खामोशी तडकन लगी है और मस्तिष्क म घुमडत हुए बतरतीब ग्यालो का व्यतीत की गहरी जडें अपनी ओर खीच रही है। चाय क प्याल पर फडकते हुए हाठ टिवाय वह कही दूर पडूच गया।

धुल हुए कँपडों का गीला और भारी गटठर लाकर बाऊन आंगन म पटक दिया है। माँ जल्दी-जल्दी एक धूटी से दूमरी खूँटी तक रस्मियाँ बांध रही है। वह कू से ठिगनी है इसलिए सारे काम उछल उछल कर करती है। उसके छोटे छोटे पाँवा का रंग गोरा है पर उसकी एडियाँ सदा मल स गनी रहती ह।

चार-पाँच साल का बच्चा रू चटाइ पर बठा धूप सेंक रहा है। उसक घुटना पर स्लट रखी है जिसका सीधा हिस्सा पहाडा स भरा है। रव्यू की जुवान पहाडे घोट रही है और दष्टि माँ की गतिविधिया का मुआयना कर रही है। करीब आधा घटा बाद ऊपर वह स्लेट का जमीन पर रख देता है जोर बहती हुई नाक को दाहिनी हथली से पोछकर जार दार मुडकी लगाता है। तभी उसकी कनपटियाँ झनझना उठती हैं। साबुन के भागो से भरे हुए बाऊ के सस्त हाथा की मार से वह परिचित है। उसकी नाक और भी तजी स बहन लगती है और वह चीख मारकर जमीन पर तोट जाता है। किन्तु हथली मे दुबारा नाक पोछन का साहस रव्यू नहा जुटा पाता।

उस रोज माँ दिन भर भूखी रहती है और बच्चे का छाता स नगाये

सारी रात रोने घोन म गुञ्जार देती है। बाळ को जब-जब गुस्सा आता है दाढ़ पीने हैं गली म चारपाई डालकर सोते हैं बडबडाने हुए कौखत रहते हैं। और धूकने रहते हैं।

मिरहान की तरफ रखे हुए चमड़े के बैग और काठ के सडूक को एक नजर म सम्भाल कर पु० न घड़ी देखी।

सारे छह वजन बाने हैं। लोहारू जान के लिए दस चालीस पर मुभे गाड़ी मिलगी। अभी वक्त पडा है और मैं तींद भी ले सकता हूँ।

यह सोचकर उमने एक पैर को सीधा किया। पैट की जेब से सिगरट निकाली और उस जलाकर कम्बल म घुम गया। अनिश्चित ढग मे वह दर तक घुआ उगगता रहा। तकिय पर एक कोन मे उसका सिर घँसा हुआ था।

पु० को लगा वह एक खुली कब्र मे बरसों से इसी तरह सो रहा है। घुएँ के कफन को कुछ क्षणों के लिए उतारकर वह कभी-कभी आकाश और धूप और मकाना और छतों को देख नेता है फिर उमी को अपन इद गिद मपट लता है।

एकाएक इस भयकर स्थिति की जडता से मुक्त हान की चाहना पु० करन लगा। उस घबराहट लग रही थी। उमने लम टूटे हुए सिलसिला क बीच स्वय को पाना चाहा जा आज तक उसका अस्तित्व को निरखक मग्गघों मे जाडन रहे हैं और जिन् वह अनावश्यक रूप स चूनौतियाँ तना रहा है। हर चीज को टटोल-टटान कर जानने और उमसे भी अधिक् पन्धानन म उमने कितना कुछ छो दिया है।

वन्त-सी बानें फानतू होती हैं पर हम उट अनजान ही अनग-अलग आकारो को सौंप देन हैं और वे मून घर म मरही क जाता की भांति महसूस पा लता है। नय-नय माँचा क अनुमार अपन आपका वन्तना कितना बग्गिन जाना है कितना पीडाजनक।

वह बुदबुगया और करवट बदलकर दीवार की आर मड गया। उमकी एक ब्राह्म पन्नेग की पाटी पर झूल रही थी और अँगुनियों म सिगरट की सात चिनगी टगा हुई थी। गन म छपर तक बग आयी त्वामी का उसन जवडो म पी तिया और उन ध्वनियों का मुनने की बग्गिन करन लगा

समय की क्रमहीन सीढ़ियाँ । पता ही नहीं चलता कौन आगे निकल गया है कौन पीछे छूट गया है ?

आवश मे पु० नुहनियो के सहारे अघबठा हो गया । उसकी आँखों में विरक्ति और थरथराहट थी । होठों में कसावट । निजी अनुभूति की तीव्रता के समझ कभी-कभी शब्द कितने ओछे कितने पराये हो जाते हैं ।

अपनी दाइ हयेली को पु० ने पूरी तरह फना लिया और वेस्टिंग-रूम की धुंधली अचेत राशनी में उसे अपलक घूरने लगा ।

‘रेखाएँ अब भा उलभी हुई हैं।’ उमने मन ही मन कठोरता से कहा ।

सहसा उसकी हयेली की उलभी हुई अस्पष्ट रेखाएँ घनी झुरियाँ में परिवर्तित हो गयीं और माँ के रगण उदास चेहरे को अपन सामने देखकर वह काँप उठा ।

एक मुर्दावाद आदमी

दिन-शोपहर दफतर म जेधेरा था ।

विजली चली गयी थी और उभास सिफ रोशनदानो के पास टंगा हुआ था । हाल क भीतर कुमिया और आलमारियो के बीच एक टेनी मनी मँकरी गली पार करता हुआ वह अपनी जगह तक पहुँचा ।

फिर उसने आसपास एक सरमरी निगाह डाली ।

भयावह खामोशी थी । किसी कागज के फड़फड़ाने तक की आवाज नहीं ।

वे एक बड़ी मेज को घेर कर बठे थे । निश्चल । मानो बुत ।

वह सोचता रहा क क्या सोच रहे ह ? इम कदर गुमसुम कि एक दूसर से बोलना तक भूल गय है ।

उसने गहरी साँस ली और जेव स एक सूखा आवला निकाल कर फुट कने लगा । पिछल हफ्त ही मुह म बत्तीसी जडवायी थी । गाल भर भरे और रग खिला खिला गुनगुनाते हुए उसने चेहरे पर हाथ फेरा और मुसकराया ।

भु नीलाल मेजा पर मोमवतियाँ रख रहा था । उजाले क घब्व इधर-

उधर लपलपान लगे थे ।

उसके सामने भी रोशनी का एक टुकड़ा बिछा दिया गया । मेज़पोश का तरह ।

वह गौर से चीज़ों को देखने और सभालन लगा ।

क्तरनी की फाइल आ गयी थी । वह पढ़ने लगा । जाखो पर जोर पटा ता चश्मे का माफ किया, कुरत की किनारी स । फिर अक्षरा पर नज़र साध कर एक आसन में जम गया ।

तभी फश पर एक साथ कई पाँव बजे । उसे लगा, बड़ी मेज़ हूँस रही है ।

सिर उठा कर उसने देखा ।

‘बुद्ध !’ कोई फुमफुमाया और हसी सिर से गायब हो गयी ।

अह ५५—उसके जबड़े कस गये ।

उहान अपना खेल शुरू कर दिया है । वे अब मुझ पर हसेंगे । दुहरे अर्थों वाले वाक्य बोलेंगे । आहें भरेंगे । नधुने फुलाएंगे । हाठ विचकाएंगे और एक मोर्चा बनायेंगे ।

वह बेचन हो उठा । पीकदान की ओर झुककर उसने आँवले की लुगदी थूक दी । फिर पुकारा सागर !’

भक्क ! एकाएक तमाम बतियाँ जल उठी ।

उसकी नगा में एक सनसना-सी लहरा गयी । ऊपर से नीचे तक । अगने ही क्षण सब कुछ धिर हो गया ।

हल्का-हल्का शोर हवा में फिसलन लगा ।

थोड़ी देर बाद पिछवाड़े में मशीन की खड़खड़ाहट आरम्भ हो गयी । टेलीप्रिंटर एकतान बजने लगा ।

‘सर ! आपन बुलाया था ?’

उसके दाहिने सागर छडा था । दुबला-पतला । बुझा-बुझा-मा । उभ चौबीस-पच्चीस क करीब । आवाज़ एकदम अनानिया । सब उसका मजाक बनात थे । चावला एक रोज़ शोभाचन्द से कह रहा था चीफ स्टाव ने तो चोला ही बदल लिया । भुशिकल से चालीस के नगते हैं । बाल डार्ड करा लिये । दाँत नये लगा लिये और एक लडकी स्टनो रख ली ।’

वह दैनिक समाचार-पत्र का कार्यालय था। औरता के लिए एक भूख वहाँ हर वक़्त मँडराती रही थी। मालिक महिलाओं का सम्मान करता था। उसने किसी भी स्त्री को अपने यहाँ नौकरी देकर अपमानित होने से बचा लिया था।

लेकिन सागर !

सर आपके लिए आवास मंत्री का फोन आया था।'

फिर नारी-कठ तरंगित हुआ।

"अच्छा ! उसके स्वर में चीफ का रोव था। जिस में घणजना हुई हा।

'गकर बाबू स बोलो लोक सभा की आज की कारवाई का ब्योरा दे जाए।'

जी सर !'

सागर चला गया।

नारी कठ ! नीलकंठ के वजन पर यह नाम उसके भीतर उपज आया था। वह अपनी सूझ पर खुश हुआ।

हलो मिस्टर अप्रवाल !'

जुनेजा सिंगार का धुँआ उड़ता हुआ खड़ा था।

हलो !" उसने घीम से कहा। मिस्टर अप्रवाल ! यह सम्बोधन उसके कानों में चिमटे की नोक में चुभ गया था। इस जुनेजा को छोड़कर सब उसे 'चीफ स्टाव' कह कर पुकारते थे। लेकिन जुनेजा तो इधर खुद चीफ बनने के लिए जोड़-तोड़ कर रहा था। उँह यह घोड़े के स मुँह वाला प्रधान सपादक बनेगा। उसके भीतर अचानक कुछ तन गया। घनुप-डोर की तरह।

'कल आपने जो टिप्पणी दी थी तमिलनाडु पर उसकी बड़ी चर्चा है।'

जुनेजा भी अपने तरक्कश के तीर निवाल रहा है। ठीक है। ताड़ना पड़ेगा।

मैंने जो कुछ लिखा है उसकी हमेशा चर्चा हुई है। वह कुर्सी पर सीधा होकर बैठ गया। जब ज्वान किया था मैंने तो सर्व्युलेशन था बीस

हजार आज दो लाख स ऊपर चला गया है।

जुनेजा न कुछ बहने के लिए हाठों पर स सिगार हटाया पर उस रोकत हुए अप्रवाल न हाथ हिलाया कागज बाल बरन के लिए हम नहीं बन हैं। फिर सम्पादकीय अगर हलचल मचाने वाला न हुआ तो अग्र बार वें बठ जायगा।”

कूलर की भनभनाहट क वावजूद वह अपने स्वर की गूँज' स सन्तुष्ट था। समूचा माटौल एक उत्सव की तरह लगन लगा, उस क्षण। पिछन अठारह बरसा स वह इस 'उत्सव म शामिल था।
लेकिन मालिक नाराज थ।'
'क्यो ?”

‘उनका विचार था कि आपने तथ्यो की उपक्षा की है और ।’
और क्या ?’

उसकी आँता क नीचे सिकुडन हान लगी।

और यह कि आप सनकी होते जा रहे हैं।’

जुनेजा पाँवा को नत्य-गति म घुमाता इतराता-सा बड़ी मज के पास जा खडा हुआ और रिपोटरो स बातें करने लगा। ठहाके छूटन लग।
उमका चेहरा तमतमा उठा। ऐसा महसूस हुआ जैसे वह घिर गया है।
मव ओर स।

वह गकर बावू का इतजार करने लगा।

नारी-कठ जहाँ जाता है अटक कर रह जाता है। मुझ म आँवला डालकर वह कतरनो की जाँच करने लगा। शायद कुछ हाथ लग जाये।

बडा नीरस मामला था। नही गकर बावू स विवरण त्रिये बिना गाडी नहीं बिसवगी। वो विगेष सवादाता है। काविन आदमी है।
जरूर खास मसाला जुटा कर लाय हागे मसद भवन से।

तभी शकर बाबू और सागर ऊपर के तलन स उतरत हुए नजर आय।
पीछे-याछे जुनेजा। घम्म घम्म सीढियाँ पार करता हुआ।
तीनों कटौन की तरफ चले गय।

वह चिंता म डूब गया। नुकील पजा वाला एक कीडा माथ म रेंगन
सगा। लेकिन उसन जल्दी ही स्व े सभाल लिया। एक कतरन ने

बोलो क्या बात है ?

शोभाचंद ने एक आँख दबाकर उसकी कमर में हाथ डाला ।

बात यह है कि सागर के अनुसार "जुनजा न एक कश लिया और धुआ उगल दिया मिस्टर अग्रवाल हर इतवार को इस अपने कमरे में बुलाते हैं और तग करत हैं । आज यह मेरे पास आया और रोन लगा ।

वी० एल० अग्रवाल ! वी० एल० अग्रवाल ! वी० एल० अग्रवाल !
अधकार । अग्रवाल !

मिस्टर जुनजा ! 'वह लगभग चीख उठा सागर ।

एक पल के लिए सनाटा खिच गया ।

खर ! मुझे क्या जना-दना ? जुनेजा अपनी कुर्सी पर जाकर बैठ गया यह मिस्टर अग्रवाल और सागर का प्राइवेट अप्पेयर है ।

फोन गुर्राँन लगा यकायक । गुर्राँता रहा । अधकार । अग्रवाल ।
अधकार ।

वह जड़ हो गया था । न कुछ देख रहा था । न कुछ सुन रहा था ।

चीफ साहब फोन ! चाबला ने कहा ।

वह लौटा । उसी दुनिया में । नफरत से बोभिल । थका हुआ । धायन ।
हना ।

उधर मालिक थे ।

उसके भीतर भाप के भभकारे उठन लग । कुछ शब्द उसके कानों के समीप भिनभिनाय । रपत रपत वह भिनभिनाहट के परे चला गया । दूर बहुत दूर एक अनदेखे जगल में । वहाँ एक पेड़ के नीचे सुस्तात हुए उसने कहा हाँ मैं बूढ़ा हो गया हूँ !

नहीं ऐसा मत बोलिये । मालिक अपने खाम लहजे में कह रहे थे, आप तो भीशम पित्तमह हैं । हम आपका आशीरवाद चाहिए । जुनजा तो चीफ एडीट्टर ही होगा । अखबार चल्लेगा तो आपकी सल्लाह से । वश भी अब आपको आराम की जरूरत है । उमर काफी हो गयी है ।

हाँ । अच्छा ! हा । अच्छा ! हा । अच्छा ! हा ।

वह बोलता रहा । जैसे घिसे हुए रिवाड पर सुई अटक गयी हो । फिर

हसन लगा । बा०एन० अग्रवाल । मंदान । हरी घाटी । काली चट्टान । मरा हुआ पक्षी ।

भीषम पित्तमह ! धक्कार है तुम्हें !

उसन स्वयं स कहा । फिर पुकारा, ' शिखंडी ! "

आवाज मागर का तरफ गयी और छो गयी । वह खास कर गल का बलगम छोटने लगा । सागर एक जग-जग चाबी से मंज पर पड़े स्याही के दाग की खुरच रहा था । अनिश्चित और असम्बद्ध ।

वह सागर को, जुनजा को, चावला को शोभाचंद को और उस हाल को हैरत भरी नयनों से देखता रहा । फिर उठो । अजायबघर से बाहर निकला । बाला चलो भीष्म ! अब अपन लिए कहीं घरा खोजो और घरा शायी हो जाओ ! जिंदगी भर तुम शरणरथा पर ही लेटे रहे कुछ दिन और सही । बी० एल० अग्रवाल ! मुर्दावाद !' वह मुसकराया अपन खिलाफ हवा महाय उठाकर और मुसकराता रहा ।

स्वयं

एक क्षण के लिए ग० की साँस रून्ती गयी। फिर उसने सूअर की तरह मुँह फाड़ दिया। हवा के कई बदबूदार गोत्र बाहर निकल और गुम हो गये। उसे लगा, इन गोलों ने फेफड़ा को बुरी तरह छील लिया है। पसलियाँ म हल्के-हल्के दद का पिचाव शुरू हो गया था।

सभी तरह की आवाजों में अब शाम जसी कठोर धुशुकी नहीं थी— कुछ गरम भाप की भाँति धुंधला कर उड़ती हुई कुछ जँघने के ज्वरप्रस्त खोल में ऐसे पिघल रही थी जस माम।

उसने भुङ्कर मामन के पीछे की तीन चार पत्तियाँ नाच ली और पहाड़ी के नीचे किसी चौखटे में धँसे हुए शहर को पनी निगाहा से घूरन लगा। शहर जवान कत्ती की तरह बसमसा रहा है या पागल समुद्र की तरह गरज रहा है ऊपर राशनियों के रंगीन बुलबुल और भाग नीचे जल ज तुओं की यापक हलचल— वाह !

तुम मुझ कुछ तो दो।

ग० चौककर पीछे मुड़ा। तब उसे कुछ याद-सा आया और भीतर वही बफ गलने लगी। होटो पर चाशनी से भीगी गई एक गुद्ध मुसकराहट

एठने को हुई पर जचानक उसने पाया कि मामला एतना आसान नहीं है, कि वह गलत ढंग से साच रहा है और इस तरह सोच लेने-भर स स्थितिया उमके बाधु में नहीं आ जायेंगी ।

मुममुम पेडा के पीछे एक सुखद रहस्य डेका हुआ था । एक ऊची कन्न और चारा ओर पमरी हुई मुलायम दूब कन्न की ओट में दूब पर नग लट जाना और ।

मुझे यहा डर लगता है ।' वह पूरी दृष्ट में कँपकँपी भर कर बोली थी, ' नगता है बगल में एक मरा हुआ आत्मी सो रहा है शायद अपनी आत्मा की आँखों से हम देख भी रहा है ।'

मुनकर ग० गटाकर हँस दिया था । उमने जान लिया था कि वह इस क्षण ऐसी ही बातों के दौरान कुछ चाहती है । यत् चाहना अपनी जगह पर वेठीक नहीं था । वह देने के लिए तैयार हो गया यद्यपि इस देने की व्यथता ने किसी कोन पर उसे बहुत उदास कर दिया था । वियर की आधी वीतन का होठों में भीचकर उसने कई घट एक साथ लिये । उत्तेजित होकर अपने मुह में भरा हुआ एक घूट ग० ने उसके खुले मुह में उडेल दिया । वह उसे पीकर मुसकरायी और एक उमडती हुई तालसा को आखा में बांधकर उसकी तरफ दबने लगी । ग० को यह शुरुआत अच्छी लगी । उमने दूसरा फिर तीसरा, फिर चौथा घूट उसे इसी तरह पिलाया और खाली वातल वा उसकी जीघा में बीच में फँसाकर बहुदगी से हसने लगा ।

ग० को इस स्मृत्याभास में रोमांच हो आया लेकिन वह अधिक देर तक स्थिर न रह सका और डीला पड गया । नहीं कुछ नया नहीं । सब-कुछ हर बार जैसा ही । घत्तर की । अदर क शेष तनाव को रोककर उमने अपने आपकी एक खोखली जिन् में बस दिया । मन जब किसी अठोस भूमि पर कमजोर पडने लगे तो बनन या विगडने वाले फसला को स्थगित कर दना ही ठीक है इसमें धुध छँटती है और निश्चितता आ जाती है । उसने बेतरतीब ढंग से साधा और मोचकर घोडा-सा खुश हो गया

मैंने दापहर से कुछ नहीं खाया । क्या तुम मुझे स्पया डेड स्पया भी नहीं दे सकते ?'

ग० उसके चेहरे की मुती हुई मायूसी से सहम गया । नरमी से बोला

मरी पट नेकर आओ।”

और इतनी देर बाद अपनी बालों भरती टांगों को नयन मिररे से पहचान कर उसने मलिन सी तपस्विनी का अनुभव किया। हर दिन का अपना एक स्वतंत्र जीवन होता है और उसमें सब कुछ अधपूर्ण हो यह आवश्यक नहीं। मुझसे आगे सुनगने लगती है। शाम को उड़ने वाली राख में किसी भावक को आवाज को पकड़ पाना संभव नहीं। एक मरुत, बाला आकाश लोगो के टूट हुए के धा पर हहरा जर गिर पडता है जोर के बिनी भी नतीजे पर पहुचन में जसमय हो जान हैं।

खाकी रंग की पट जिसका पिछला भाग घिसकर बन्दरग और पतला पड चुका था उसके हाथ में थी। वह उम मसखरेपन से आगे-पीछे झुलाने लगा। आहा यह मैं हूँ य मरी टांगें हैं काश ! काई इसी तरह गदन पकड़ कर मुझे हवा में झुलाता। इस हरकत से उसमें हल्कापन आ गया और वह एक खुरदरी-सी हसी में हिनहिनाने लगा।

मुझे देर हो रही है।

उसकी आवाज बिलकुल कोरी थी या फिर रानी सी।

अभी तो साठ आठ बजे है।’

‘लेकिन मुझे जाना है।’

स्वर की लपटा से वह अकबका गया। अपने फालतू होने की बात भी दिमाग में उभर आयी। पट की जेब में हाथ डालकर जल्दी-जल्दी पन्ने गिनने लगा। फिर दाहिनी हथेली पर उसमें कुछ सिक्के फँसा लिये आठ जाने और दो जाने दस आने हैं। लो !’

वह खामोश थी। पड और जघरे की धुप्पी में उसका शरीर ठूठ की तरह खडा था। अडिग बेजान।

मेरे पास दस आने ही है।

उसने सिक्का को हथेली पर हिलाया बच्चों की तरह किंचित उत्साह से।

इतना तो रिकशा का किराया हो जाता है।”

वह कठिनता से बोल पायी। उमकी आवाज में पछतावा था, दुख भी।

तभी कहीं घमावा हुआ, जैसे वह दूक चली हो। धवरा कर उसने इधर-उधर देखा, झपट कर ग०के हाथ से पसे छीन लिये और भागती हुई-सी चली गयी।

मैं इसकी मा को जानता हूँ। वह मुस्त और चालाक है। मैं इसकी मा को सब चालाकियाँ से बाकिफ हूँ और अब इसका स्वाद भी जान गया हूँ।

उसके जात ही ग० अकेला रह गया। आधा के डोरे मनमना रह थ। वह इतमीनान से पट पहनने लगा और बटन बंद करते-करते सड़क पर आ गया। कमीज दाँह पर से पट गयी थी और उसे छुपाया नहीं जा सकता था। डलान में लुत्बने के ढग से चलत हुए उसे मजा जाया। एक खयाल यह भी उपजा कि वह अभी उपादा दूर न भयी हागी और दौडकर उसे छुआ जा सकता है या जँघेरे में आवाज पैदा करके डराया जा सकता है। पस भी छीन जा सकते ह। उसके मुह में जचानक जैसे किसी ने सडा हुआ अनरूठूम दिया हा। वह नाक में बल डालकर धूकन लगा और अगन-प्रगल यूकता हुआ चलता रहा। पीछे से धक्के लग रहे थे, हवा धकेल रही था या कोई और।

सड़क के काले गड्ढो, गुथी हुई झाडियाँ और अस्पष्ट परछाइयों से बरुशी का व्यवहार करता हुआ वह लगातार सोचता रहा कि उस वक्त एकाएक वह दूक कहाँ छूटी थी? शहर में कोई दगा तो नहीं हो गया? जुलूस जुलूस में सिर फुटीवल तो नहीं हो गयी?

धीरे धीरे रोशनी के पहिये नजदीक आ रहे थे। एक बडवी सी चक्का-चौध उमकी पुतलिया पर ठिठक गयी। परद फाडे जा रहे हा, ऐसा अस्त व्यस्त कोलाहल। उमे धीमा या एहसास हाने लगा कि वह रोज धूम फिर कर इसी जगह लौट आता है। या फिर दुनिया गोल है। गोल-गोल गोल। उसने कई बार दुहराया। स्वात नशा चन्ने लगा है। उसने सही-सही हासन जानने की कोशिश में सिर भटकाया। नशा-नशा-नशा। और वह मुसकराने लगा। एक सूजी हुई मुसकराहट, कुछ इस वजह से भी कि उसका बेहरा इस वक्त पसीने से भीगकर फल गया था। टाँगें लडखडा रही है। टाँगें-टाँगें-टाँगें। नशा-नशा-नशा। वह जरा जोर से बडबडामा तो पास से गुजरत हुए आदमी ने ठहर कर उसकी ओर देखा। वह और

जोर से बड़बड़ाया। टांगे टांगें-टांगें।' उस मजा आन लगा था। मैं मैं-मैं। वह आदमी दो कदम दूर हटा फिर तेज-तेज चलकर गायब हो गया।

'मेरा एक दोस्त है। वह रोज पीता है। उस चन्ती नहीं है। मैं कभी कभी पीता हूँ। मुझे चढ जाती है।'

उसने पुकार कर कहा। उसी क्षण यह महमूस बिया कि वह बहकन लगा है और जवान कावू म नहीं रह पा रही है।

बिजली की बत्तियाँ चमक रही थी या तलवारें वह जान नहीं पाया।
ग० प्यारे ग० तुम बुद्ध हो।

मेमना की तरह कुछ सफेद भूक वच्चे एक जगह जमा थे और कौतूहल भाव से मस्जिद के नजदीक खड़ी एक बैनगाडी का देख रहे थे। वह पहले वच्चों के पास गया, फिर बलगाडी के पास। वहाँ अच्छी-खासी भीड़ थी।

इतने लोग अब तक कहाँ छुपे हुए थे? ग० को आश्चर्य हो रहा था लेकिन वह उनमें शामिल हो गया और स्वयं को सुरक्षित महमूस करने लगा। लोग-लोग-लोग। लोगो को मैंने कवच की तरह पहन लिया है। कवच-कवच-कवच। तत्काल उस अपने बहकने का ध्यान हो आया और उसने दातो से जीभ काट ली। ग० यार, ग० तुम एकदम फूहड हो, फूहड और असभ्य।

कुसिया। पलग। दरियाँ। आइने। सद्क। बम्बल। काँच की तश्तरियाँ। पर्दे। दीवान घड़ी। ये सब चीजें बैनगाडी पर।

'तीस-तीस-आग बोल-आग बोल बत्तीस-अग्ने पतीस ।

एक खूब लम्बा-तगटा आदमी सबसे आगे खड़ा था जोर चीखता हुआ हवा में हाथ हिला रहा था।

ग० को लगा वह गुस्सा म है और उसी को देखकर हाथ हिला रहा है। सब लोग गुस्से म हैं।

उसने सिर झुका लिया जैसे अपना अपराध स्वीकार कर रहा है। जैसे बड़ी-से बड़ी सजा भुगतने के लिए स्वयं को तैयार कर रहा है। नाग सचमुच आवेश म थ और एक दूसरे को धकिया रहे थे।

ग० को नीट आ रही थी। छोटी बहिन त बिस्तर लगा दिया था

और वह उस पर सोने जा रहा था। माँ हमेशा की तरह बक रही थी और वह हमेशा की तरह बहिन के भक्त हुए अगो को मुग्धता से देख रहा था। बहिन को उसके पति ने छोड़ दिया है। क्या छोड़ दिया? वह हाता तो कभी नहीं छोड़ता।

एक-ब एक कोड़ गला फाड़कर चिल्लाया ता ग० चौंक गया और उसने पूरी ताकत से आँख खोल दी। चुप खड़े हुए लोग नयून फुला फुला कर सबसे आगे के लम्बे तडग आदमी को घूर रहे थे।

ग० ने एक व्यक्ति से पूछा "क्या बात है?"

किसी रडी का सामान नीलाम हो रहा है।

उमन पिटे हुए चेहरे पर प्रसन्नता लाते हुए कहा और बोली मुनने म व्यस्त हो गया।

ग० उकताने लगा तो वहाँ से खिसक गया। एक सँकरी गली में चलत हुए उसने महसूस किया खुदही दीवारों ने उसका समूचे अस्तित्व को दबोच लिया है और वह कभी न खत्म होने वाली इस यात्रा से जीवन भर छुटकारा न पा सकेगा। पसीन में तर कमीज बदन पर चमगाण्ड की तरह चिपकी हुई थी। जल्दी जल्दी पाँव घसीटते हुए ग० न उस पुराने भकान की बेंचदार सीढ़ियाँ पार की। उतावली में दरवाजे को भडभडाया।

कौन है? आती हूँ।

आवाज उसी की थी। थकी थकी।

अरे ऐ तुम?

वह किवाड़ों पर झूल-सी गयी। फिर रास्ता छोड़कर अंदर हो गया।

मैं जानती थी, तुम आओगे। तुम्हें जब मालूम पड़ेगा तुम जरूर आओगे।" वह बोलते-बोलते हाँफ रही थी और मेकअप का अभाव में आज एकदम बुढ़िया लग रही थी।

तुम तयार नहीं हो?

ग० न पूछा पर तुरंत उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। वह मुसकरायी। यह मुसकराना आदत में शामिल था। वह किसी बात का बुरा मानती है तो भी मुसकराती है इसी तरह।

मन ठीक नहीं था। फिर फिर नहीं जानती थी कि कभी यह

व्यर्थ

वह अपने सारे दाँत दिखनाकर हमती है। जब उसके होठों का फैलाव कानों तक पहुँचकर एक निश्चित आकार ग्रहण कर लेता है तो लाल मसूँड़े बाहर निकल आते हैं और चमकन लगते हैं। तुम कुछ नहीं कर सकत। तुम्हें अपने पर विश्वास है ?

जेंधरा इतना गाढ़ा था कि उस चीरकर चलते हुए डर लग रहा था। वह एक बदनुदार गली थी।

मैंने दबे हुए मुस्म और अस्त-तोष को भटकने के लिए मुड़कर देखा। पीछे उसका घर काफी दूर छूट गया था और एक पीत भेदे घब्व की भाँति टिमटिमा रहा था। अद्भुत-सा तगा-स्तनी मामूली बात मेरी समझ में पहल क्यों नहीं आयी ?

गदन पर मफनर की गाँठ ढीली पड़ गयी थी। उस दोनों हाथों से कसने लगा। हल्की ठंड महसूस हुई। अगर इस गाँठ को मैं कसता ही जाऊँ तो चंद्रक्षणों में मेरा दम घुटने लगगा।

चप छप-चप चप। घोड़ी दर बाद मुझे अपनी पदचाप सुनाई देने लगी। उसका एहसास कुछ इस तरह का था, जैसे मैं अकेला किसी मुनसान

दरिया को पार कर रहा होऊँ। चारा ओर पानी काला पानी। काले पानी की सजा किस मिलती है ?

तपस्य म कही सिलाइ मशीन चल रही थी। बगल के मकान की दूसरी मजिल पर बिजली का स्विच आन हुआ। कच्च ' रोशनी का एक अस्त-व्यस्त चतुर्भुज पालतू कुत्ते की भाँति भागता हुआ मेरे पावों के समीप आया और धूल म लोटने लगा। मैं ठिठका। वह उसी तरह उछाह से लोट पोट हो रहा था। कच्च ' कुत्ता गायब हो गया। हवा के झोंकों से बाँपता हुआ अघकार आँखों म एकदम धुँप हा गया।

सड़क पर आकर मैंने रिक्शे की खाज म इधर उधर नजर दौड़ाई। पोनो विकट्री के आगे भीड़ का बिखराव था। आँखिरी शो खत्म हुआ था। कुछ सोचकर, थके पावों को घसीटता हुआ मैं चाँदपोल की तरफ चल दिया।

पढा की रहस्यमयी मुद्राआ को देखकर प्रतीत होने लगा कि समूची दुनिया मुद्दत स एक चिपचिपी धुध मे उल्टी धूल रही है। वजनाआ, आश-काजो और अपशकुनों स घिरे हुए लोग मूर्च्छा तोडकर आगते हैं तो खम्भा मे शरीरों को रगडत हैं, उखडी हुई दीवारों पर बाँह बमत हैं और पिघलते लाट पर हाठ टिकाकर फिर सो जात है।

चौराहे पर फुव्वारा छाप बीडी बचने वाला का एक छोकरा जनाना कपडों म अपनी गेंद वाली छातिमा की बुरी तरह मटकाता हुआ नाच रहा था। उसे घेरकर डोलक हारमोनियम वाले ऊँच सुर म रेंक रहे थे।

सहसा मरी बगल से गुजरती हुई एक स्त्री न जोर से छीका और साडी के पल्लू स नाक रगडती हुई अपने साथ क पुरुष स मटकर चलने लगी। फिर वह चीज और बेचैनी भरी महीन आवाज म कुछ बडबडाई। उत्तर म पुरुष ने एक कथा उचकाया और बोला, ' तुम्ह जुकाम हो गया है। '

उसका स्वर रूखा और विरक्तिपूण था।

बद दूकानों के तस्ता और छज्जो पर रह रहकर कबूतर फडफडा उठत थे। रात के जूठे बजान होठ हवा की तीखी मार से धर-धरान लग थ। मेरे सिर पर उजाल की कई निस्तज रखाएँ एकमेक होकर हिल रही थी। एक चंचल आकृति बार-बार मेरी आँखा क मामन आकर खडी हो

जाती और हसने लगती। तुम कहाँ जा रहे हो ? मैं तुम्हें देख रही हूँ। यही अन्त है, यही ठहराव। तुम किसी की खाल उधेड़कर उसका अन्तर भाँकना चाहते हो ? नहीं तुम कुछ नहीं कर सकते। गद बुज्जिल ! तुम पर कौन भरोसा करेगा ? हूँ हूँ !

एक उद्धत, गवपूण भगिमा। एक चिडचिडी बुढ़ी हुइ आवाज।

मेरी टाँगें काँपने लगी। भूख और धकान से माथा चकरा रहा था। पें-पें मचाती हुई एक जीप को ज़्यादा ही मैंने साइड की घटाघर की घड़ी गिह-गिहाती हुई सी बोलने लगी—टनन टनन।

जॉकेट की भीतरी पुइत में हाथ दबोचकर मैं अपनी पसलियों को टटोलने लगा। सूखी नुकीली हडिडया हथेली में चुभ रही थी।

मा का गान्त दरिद्र चेहरा मरे निकट खिच आया। वह अब तक फर्श पर टाट बिछाकर सो चुकी होगी। स्टोव के पास कटोरदान में खाना रखा होगा और उस पर चूहे कूद रहे हाने।

गीली लकडिया की भाँति चट चट करता हुआ एक चित्र मेरे मस्तिष्क में जलने लगा और घुँसे में मेरी आँखें उबलने लगी। तुम कुछ नहीं कर सकते। कुछ नहीं !

जवानक एक आल्मी तेज़ी से दौड़ता हुआ मेरी पीठ से टकराया और बिलबिलाकर मोड़ के कच्चे रास्त में घुस गया। उसकी भयातुर दृष्टि मेरे रोम रोम में काँध गयी और मैं अगले कई क्षणों तक उसी के धार में सोचता रहा। कि मेरी कमर में किसी ने कसकर धूसा चलाया और मैं जरा सभलू वसमे पहल ही मुझे गदन लबोच कर सडक पर गिरा दिया गया।

जपन को छडाने के लिए मैं छटपटान लगा। वे सहया में अधिक थे और गालिया बकत हुए मुझे लगातार पीट रहे थे तरी भन भाग क जाता है स्माल !

धमडे के माटे जूतों से मेरी खोपडी का भुर्ता बनाया जा रहा था। लाह की तीखी कीलें चुभ रही थी खच्च-खच्च। नकिन दल कई हिस्सा में बट गया था। उनमें से किसी ने मुझे बालों से पकडकर दूर तक धसीटा। किसी ने पूरे दल से घुंने मरोडे। तभी दारू का तीव्र गंध मेरे नसुनी में सुलगने लगी। एक भारी भरकम जवडा मुझ पर पका हुआ था और गम उबलती

हृदय में छोड़ रहा था। चित्त पड़े हुए मैं मुद्रिकल से अपना नाखून सीधे किये और उसे नोच लिया। उसकी भाँहा के बाल गुच्छे गुच्छे मेरी मुद्रिया में आ गये। अब उठोने नये सिरे से मेरी छाती और कनपटियो पर धार किये। मैं नज्जागूय सा होकर पडा रहा।

मुझे मडक के किनारे डालकर वे लाग चले गये।

हँफ-हँफ हँफ रात हाँफ रही थी। खून और पसीने से लथपथ मैं बिजली की बत्तियो को घूर रहा था। अघमुदी आँखो की दरारा में प्रकाश के रंग बिरंगे टुकडे फँसे हुए थे। बार बार एक चंचल आकृति उनके बीच से उभर आती और मुझे चिढानी हुई-सी हँसने लगती।

चन्द्र-ग्रहण

अगर मैं एक छलांग में बाढ़ लाई जाऊ तो पेमनी बरो वाली भाडी के पास पहुँच सकती हूँ उसने सोचा। पर मैं उसका दम घुट रहा था। आँक और खीप से गुथी हुई छप्पर की छाजन बार बार बजपजा उठती थी। उसमें घुमकर मँडराती हुई हवा बेतरह हाँफ रही थी।

जुगनी न मुड़कर देखा जिज्जा की तरफ। उनकी आँखें बंद थी। अम्मल लने के बाद शायद अपनी आ गयी थी। एक पाँव दाँवन के बीच झूल रहा था और तह किये हुए खेतान पर उनका सिर बजान-सा पड़ा था। जाने कैसा अघड उठता है जिज्जा के फेफ्फो में। खाँसी आती है तो साँस साँस साँस करने लगती है। देर तक होंपनी चली रहती है और चेहरा गरम तवे सा भभक पड़ता है।

कुछ क्षणों तक जाने किस सोच में डूबी हुई वह जिज्जा के अजर पजर शरीर को ताकती रही। जगो का सत्त सूख गया था एकदम और बची हुई थी एक ठठरी। जुगनी पलट पड़ी, उसकी पलकों में नमी उतर आयी थी।

बाढ़ के सामने रुककर, वह पल भर के लिए ऊँचाई का अदाजा

लगाती रही फिर ऊपर उचल गयी। उसके छोटे-से धाघरे का घेर छनरी की भाँति हवा में तन गया। ओढ़नी पतवार की तरह खिंच गयी और धम्म ! जुगनी दूसरी ओर की बालू में गिर पड़ी। थोड़ी-सी रेत मुह-आँखा में चली गयी। आँधी हथेलियों से आँखें मलते हुए उसने पिच पिचव यूक दिया हालाँकि ज्ञाता में किरकिराहट का स्वाद बना रहा।

पमली तैरा वाली भाड़ी जुगनी की खास सहेली भायली थी। जब उसका मन अमूजने-उकताने लगता, वह इस भाड़ी के पास चली आती थी और पता नहीं, क्या-क्या बतियाती रहती थी। भाड़ी की एक-एक डाल उसकी बातों को गौर से सुनती और सिर हिला देती थी।

किती गर्मी पड़ रही है आजकल ! बाप र, दोपहने में तो आगी बरसती है आगी। फिर भी जिज्जा जाने कहाँ कहाँ चक्कर लगानी रहती है ! इतनी क्या-क्या तबैत खराब है जिज्जा की, पर जिज्जा तो जब देखो घर से गायब। एक घड़ी भी पर नहीं टिकता है अपने छप्पर में।'

वो सिराम का छोकरा है न बित्तू—बहुत खराब है। मुझमें कहता है ब्याह कहेगा तो तुमसे ही। भला अभी ब्याह की उमर कहाँ हुई है मेरी ? बारहवाँ साल लगा है पिछने चैत में। जिज्जा झोलत है मोटर-माला की तरफ सासरा ढूँगा सुन्हारे लिए। उधर पानी खब है नहर का, दग रग रग बेलियों में बहता रहता है इतना साफ कि मुँह देख लो। हाँ ५५ यही ठोक है बिना पानी के गाँव में तो जिनगी नरक हो जाती है। सुब-शाम ज्ञात रहा घडे मटके। कुएँ की जगत बभर तो जती है।'

'मच्छी बात है यह गारानिया ढाणी भी तो एसी ही है। मरद बेती-पाती डगर-गोर सभालत है और लुगाइयाँ परीडे में पानी भरत भरत बुडिया जाती है। क्या मुख मिला गिरस्थी में ? छै मात ढाणिया के बीच एक कुआँ। आधी रात के बाद ही चडस चलने लगता है। औरतो के गोठ जमा हो जाते हैं और बबाल राड-तकरार मचती है।'

न भई अपने की तो यह पसन्द नहीं। जिज्जा का सोचना सही है। मामरा पानी बाना होना चाहिए। लेकिन राम दुहाई जिज्जा की देही तो गनती जा रही है। चमडी का रग बिलबुल पीला पड गया है। मैंने राम-देव बाबा का टोटका भी किया था पर कुछ लाभ हुआ नहीं। बसू कहता

है, पावूजी को पड बेंचवान की मानता बोलो । मैं कैसे बोलू, मेरी एसी औकात कहीं ? जिज्जी बोल द मानता तो अच्छा रहे पर जिज्जी को कौन समझाए उसका ध्यान तो सत्तर बखारियो म भटकता है—बस अपन घर म ही नही रमता । '

जुगनी न आदनी की भाली म काफी दर जमा कर लिये थे । जो बर पक्कर नीचे गिर गये थे, वह सिफ उहीं को चुन रही थी । भाडी की जडा मे चूहों ने बिल खाद रके थे । एक चूहा तेजी स बाहर आया । सहसा ठिठककर इधर उधर का मुआयना करने लगा । फिर कुछ दूर तक दौड लगायी, एक बर को जरा-भा कुतरकर धीमे धीमे बिल म लौट गया ।

शाम की उमस भरी उदासी वृक्षा के आर-मार फल गयी थी । जुगनी ने थकान-सी महसूस की और एक साफ सुथरी जगह पर बठ गयी । कहीं म चलकर आनी हुई गिलहरी ने अपनी चंचल नज़रो म बाँधकर उसे दखा फिर पूछ पटकारती हुई आगे बढ गयी । घूप अत्र कुछ नरमाई बरत रही थी और सिलटी आसमान म इक्के-दुक्के पक्षेरू उडन जग गये थे ।

जुगनी ओदनी सिरहाने लगाकर अघलटी हा गयी । उसे लगा काई चीज है बहुत मुलायम और तरल सी जो आहिस्ता-आहिस्ता उसक भीतर आँखें खोल रही है । जुगनी उस चीज को पहचानती है । उमक रोमाँकुरा मे एक लय, जमे कहीं जतर बज रहा हो पसरने लगती है और वह अचानक अवश हो उठती है । सचमुच, इस लय को मन के किसी कान म सहज कर समेट कर नही रखा जा सकता है । वह उगती है उभडती है और चली जाती है । उसके गुजर जाने के बाद जुगनी खाली-खाली हा जाती है एकदम रीत जाती है । वह रीतापन उसे एक अव्यक्त घणा क पाखर म फँक देता है । चौतरफ जलन है, ताप है पर जुगनी को लगता है उस पाखर क बीच म कुछ ठडक है । वह दलदल का उवग्न की भाँति शरीर पर लेपने लगती है । काकई बाहर भीतर शांति मिलती है ।

भौं भौं !

जुगनी न अक्ववा कर आसपास देखा । अहो एक कुत्ता बिस्ली के पीछे भागता हुआ भौंक रहा था । जुगनी समझ नही पाती है वह सो गयी

थी क्या ? मरज डूब चुका था। अघेरे का छतर तनन लग गया था ढाणी पर। शारगुल भी बढ गया था। वह उठना चाहती थी पर जग म आलस लहरा रहा था।

जुगनी !”

तभी एक रीस भरी पुकार ने उसे चौंका दिया।

यह जिज्जी की आवाज थी। घर में जुगनी को न पाकर जिज्जी नाराज हो उठी थी और जगातार हलेऽ दे रही थी।

जुगनी ने पोटली के बेर सभाले और उठ खड़ी हुई। एक नजर बीच की बाड पर डाली। अब उस पर से छलागना ठीक नहीं होगा। जिज्जी अगिया रानी हो जायगी, ऐसी हरकत पर। वह चुपचाप दरवाजे की तरफ चल दी।

सात आठ घरो के आगे घुमाव दती हुई एक गली थी। जुगनी लम्ब लम्ब ढग भरकर उसे नाप गयी।

जिज्जी यों ही आजू-बाजू भाडू फटकारती हुई बडबडा रह थी। उसे देखत ही चिहनायी कहीं मर गयी थी खसमखानी।’

जुगनी चुप रही। जानती थी कि हाठ हिलत ही भाडू पडेगी।

‘गाली बयो दती हो माँक के बखत।’ जिज्जा ने कराहत स्वर म टोका।

तो क्या लाट कहेँ इसका ? माँ-बाप तो मेरे मर खप गय, पर यह काली आप्त बाँध गये। कब तक बोझ ढोऊँ इसका ? मटरगस्ती करती फिरती है दिन भर।’

या चीघने से क्या होगा ?’ जिज्जा वाले।

तुम्हीं न तो मरये चढा रखा है इम। तुम्ह क्या पता क्या-क्या भुगतना पडता है मुझ ! पडे-मडे खाट की मूज तो न रहत हो। इस मरी ब म्मारी न तो मरी नाक म न्म कर दिया। क्या-क्या देखू क्या-क्या सभालू !

जिज्जा स्वामोश हा गय। जुगनी के एकबारगी दिल म तो आया कि कह दे तुम्ही कौन-भे कारज मँवार देती हो ? जब स जिज्जा का रोग न दवाया है, सती-बाडी हिम्म पर द रखी है दूसरों की। नाज-पात समय पर

आ जाता है मौज लग गयी है तुम्हारे । नकिन उसने मुह से बोल नहीं फूटे ।

पटवारी आया था आज । 'जिज्जी न दो डोई भर कर खीच कांसी घाली म डाला और जल्दी-जल्दी घान गयी । वह भूखी थी ।

जुगनी न लक्ष्य किया जिज्जी के स्वर म कही कोई पछलावा नहीं घान अपराध भाव, सिफ सफाई थी हल्की-जी ।

'कुछ घास कहा उसने ?' जिज्जा न उदासीनता स पूछा । कदाचित वह जानते थे कि जिज्जी झूठ बोल रही है । जुगनी ने लकड़ियों की फाषट तोड़कर चूल्ह म डान दी । फिर बटनोही पर डक्कन रख दिया । वह जिज्जा के लिए कुछ जटी-बूटियों का काटा उवात रही थी ।

बहता था खाता ठीक नहीं है । 'खीच स ठँसा हुआ जिज्जी का मुह जरा सा खुला । नाक भर आयी थी । जिज्जी ने उस ओतनी के पल्ल स पोंछ लिया भद् डग से एक सिनक लगा कर । जुगनी न हिंकारत से आँखें फेर ली ।

खाता ता ठीक होना चाहिए । लगान वक्त पर जमा कर दिया था ।

तो क्या हुआ ? कुछ गडबडी रह गयी होगी ।'

मवेशियों के चरन के लिए छोड़ी गयी जमीन के घारे म भी मैं उनसे पूरा ब्यौरा दे दिया था ।

दे दिया होगा तुमने । जिज्जी को अपनी बात क ग्रीच म यह खाम खाह की दखल-दाजी बुरी लग रही थी । उसका ता कायदा है कि जो कुछ वह कहे उसे चुपचाप सुन लिया जाये और किसी किस्म की पूछताछ न हो ।

तो खाता सुधारन के लिए क्या करना होगा ? ' आग की रोशनी म भी जिज्जा की आवाज वहद अधरी और निर्जीव लग रही थी ।

मैं जाऊगी अभी, पचात म । वही ठहरा हुआ है वह । और लोग भी आएँगे, अपने खेता की खतौनी मालूम करने के लिए । कुछ लालच देना होगा पटवारी को । पटा तो पूरजा ही है उसका, नहीं तो क्यों काम करेगा ? '

जिज्जी न थाली म और खीच भर लिया। फिर उस पर नमक मिच बुरकन लगी।

कर-धुमटिया का अचार है क्या ?” उसने जँगुनिया चाटते हुए पूछा।

जुगनी ने ताक पर स हांडी उतार कर उसके सामन रख दी।

‘खाने लायक नहीं रहा यह। जिज्जी न हांडी को सूष कर होठ दिचका लिये। जिज्जी के हाठ मुट्टर है, खूब गहर सुख और भरे भरे जुगनी ने मोचा। तल व मारने लगा है। कल घूप दिखला दना इसे।’

‘काचरी की चटनी ल लो थोड़ी-सी।’ जुगनी ने कहा।
रहन तो।”

की कीं करता हुआ कोई पक्षी ऊपर से उड़ गया।

‘दूध गरम है क्या ?’ जिज्जा न पूछा

‘हाँ। खूब बना हुआ है। जुगनी बोली।

‘एक बत्तार म डाल कर अपनी जिज्जी को दे दा। जिज्जा के स्वर म कोमलता था प्यार से भीगी हुई।

नहीं अब मैं नहीं लूगी दूध वूध। जिज्जा न इनकार म सिर हिलाया मन नहीं है।’

अच्छा थाली मलाई ले लो। खाने के बात रगत आ जाएगी।’
जिज्जा न मनुहार की।

जिज्जी को चुप देखकर जुगनी न दूध मलाई से बटोरा भर दिया।

तुम बहुत जिद करत हो।’ जिज्जी न एक साँस म बटोरा खाली कर दिया फिर उठ खड़ी हुई। जिज्जा की खाट के पास जाकर बोली
कल पूल बच दूगा मैं। चौहट्टन म एक आत्मी आया हुआ है खरीदने के लिए।’

एमी क्या जल्नी पनी है ? जिज्जा न सिर क नीचे दवा हुआ हाथ निकाल कर साफे व एक हील पट्टे को बग लिया।

‘पता-टके की जरूरत है मुझे।

भाव-भाव पूछ लिया है ?

हाँ पिहान मान से कुछ ज्यादा हा है।

तब ठीक है।'

'तुमने आज दिन भर म खाया कुछ ?

लिया खाया था बाजरी का।

खांसी का उठाव कैसा है ?'

पहले जितना नहीं है। आज तो नीच भी आयी मुझ।

मबर रखो थोड़ा और हिम्मत साध लो। रामजी न चाहा तो चग हो जाओग जल्दी ही। जिज्जी न जिज्जा के माथे को सहनाया कुछ धण फिर पूछा बुधार तो नहीं आया ?'

मामूली हरारत बनी रहती है बस।

सब ठीक हो जाएगा। तुम जय तदुम्त हो जाओग ता रणेबा की जातरा पर चलेंगे। बडा आनन्द रहेगा। मुझे तो भरोसा है मेरी इच्छा जरूर पूरण होगी। गोमती की बाबी कह रही थी औरत का मुहाग पवित्र हो तो कोई कुछ नहीं बिगाड सकता। जिज्जी ने भुक्कर जिज्जा के पाँव गोद म भर लिये। फिर उह भीहों स छुआया।

'क्या करती हो ?'

तुम्ह क्या पता कितना बोझ है मेरे दिल पर। तुम्हारी बम्मारी ने ता घुन लगा दिया है मेरी जान को। वो ऽ हरी गोली खायी थी तुमन दोपहरी म ?''

हाँ ले ली थी मक्खन के माथे। बहुत कडवा सुवान है गोली का।

ऐसी खराब बम्मारी की गोभी तो कडवी ही होगी। मनसा लाया है बाडमेर के किसी बद से। धरम का भाई हो तो ऐसा। बहुत चिन्ता रखता है तुम्हारी। मुझम पूछना रहता है।

भसा है मनसा। हारी-बेम्मारी म ऐस लोग ही काम आते है।

ऊट खरीदना चाहता है वो। पूल अच्छे भाव बिक गये तो कुछ रप्पय उस दे दूगी।

दे देना। बिसाण की आधी ताकत तो ऊँट मे ही हाती है।'

तोऽऽ अब मैं पचात म जाऊ ? पटवारी को मनाना होगा किसी तरह नहीं तो खाता बिगाड दगा।

“हाँ, जाओ। देर न करो। इस काम का निपटारा ही है।”

जुगनी बाड़ा छान रही थी। घूँस का बुरादा घातावरण में तँर रहा था। आकाश में तारा की जगमगाहट थी, माना बीच के टुकड़े बिगेर दिय हों बिगनी ने। जिज्जा के जाने के बाद जुगनी राहत महसूस कर रही थी। घुटन ने पछ छोड़ लिये थे। टन-टन टन पदों का बर्द काठ में कुछ टोका-पीटी कर रहा था। जुगनी परगान थी इस बर्द ने। स्नि में सा वह जगन में मारा मारा फिरता था पर ज्यो ही रात का परदा कूनन लगता उसका बसूना उड़ उठता था। कभी उधर से कौन ठोंकने की कभी आरी चलन का ता कभी चिरी गरगराने की आवाज माना को बधने लगती थी।

एक बिलम भर दोगी मरे लिए ?’

जुगनी ने पुनर्नियोग मिकोठकर जिज्जा की तरफ देखा। उनके पँर एक दूसरे पर चढ़े हुए थे और हाथ घुटनों को खुजा रहे थे।

तम्बाकू नुस्मान करेगी। खाँसी उठ आएगी तुम्हारे।”

तुम तो मेरी अम्मा हा गयी हो, जुगनी। जिज्जा हँसे, फिर कुछ दर रककर बोल ‘तुम्ह पता मही है तम्बाकू का मज्जा लन के लिए मीने कमे-कैम करतव किय है।’

जिज्जा घाट पर बैठ गये। जुगनी ने ताम-रोनी के पिघाल में बाड़ा नकी ओर बढ़ा लिया और खुद पाट की पाटी पर टिक गयी।

मैं अपने बाप की बाधली में से तम्बाकू चुरा लिया करता था। एक टूटी हुई बिलम की नलकी भी वहीं से हाथ लग गयी। वह जो धर के आग नमुए का पेड़ है न इस पर लगून की तरह टगर-टगर बढ़ जाता था और डालियो में छिप कर बिलम पिया करता था।’

“तभा ता आज यह हालत हो गयी है” जुगनी बड़ी-बूढ़ी औरत की तरह बोली। अमल में जिज्जा में बत-बायत करते हुए उसकी उम्र एकदम बढ़ जानी थी।

कभी तम्बाकू नहीं मिलती थी ता मैं सरकहे का पोला कर उतम पीपल कीकर और सेजहे के सूमे पत्तो का चुरा भर लता था, फिर बाँधे का तरह सूतगा कर पीता था।

मुझे ता मिचली आने लगती है तम्बाकू की गंध से, सी बुराइयों की एक जड़ है यह।”

‘मैंने जिदगी में जाने कितनी बुराइयाँ और कितनी अच्छाइयाँ देखी हैं जुगनी ! तुम्हें भी बहुत कुछ देखने को मिलेगा । यह दुनिया है ही ऐसी । किभी को बखमती नहीं । सब पर थोड़ा-बहुत रग-रोगन लगा देती है ।

‘इस बाढ़े को ठंडा मत करो ।’

पीता हूँ मेरी माई पीता हूँ ।’ जिज्जा गुनगुनाय हाथ बिता गाथा बनाया तूने काढ़ा । और गट गट पी गये ।

जुगनी हँस पड़ी । जिज्जा ने घाली पियाले को उसके सिर पर रख दिया और फिर दालो की चुटनी को पूँछ की तरह मराड़ दिया ।

‘अई, क्या करते हो !’ जुगनी ने चुटनी छुड़ाकर आँखें तरेर दी ।

जिज्जा बच्चो की तरह ताली पीट कर हा हा-हा करन लग ।

अच्छा अब तुम मुझे अम्मन की टिकड़ी में दो कुछ दर वाँ मैं सो जाऊँगा ।’

नाद नाने के लिए जिज्जा इन त्रिना अफीम खान लग गय थ ।

बार-बार अम्मल का नशा ।’

अहो जुगनी ! कतनी तीन पाँच मत करो । नील आन से खाँसी का जोर कम हो जाता है ।’

जुगनी ने एक पोटली में स अम्मल की टिकड़ी निवाली और जिज्जा की हथेली पर रख दी ।

अब अपना मुह बंद !” कहकर जिज्जा ने टिकड़ी जीभ पर रख ली । फिर धीमे-से आह भरकर लट गय और मेसले को फटाकर ओढ़ लिया ।

जुगनी अयमनस्क अपने में झूठी-झूठी दरवाजे की चौखट तक जायी और बाहर देखने लगी । चाँद उग आया था और उसके उजास ने हाणी के कच्चे पके परो पर एक पीली चादर डाल दी थी । हमेशा की तरह विस्मय से भर कर जुगनी न चाँद की डयोड़ी पर नजर डाली—भूरा दानी वाला बूटा वहाँ गटा था और डेरा कात रहा था । माँ कब मरी जुगनी को याद नहीं पर बापू का चेहरा उसकी स्मृति में टगा हुआ है

धुधला-मा । उनके भूरी दानी थी, छाती तक लहराती हुई । ठुडकी पर कधी काढ़कर वह दो लटा को अलग छोट लते थे और फिर गूँपकर कानों के गिन् लपट रखत थे । जिज्जा ने एक बार चाँद को देखकर बताया था, तुम्हारे बापू अब चाँद की डयोडी पर बैठते हैं और 'ढेरा' कातते हैं । जुगनी न बापू को ढेरा कातत हुए देखा था इसलिए जिज्जा की बात पर विश्वास कर लिया था । बस वह जानती थी, जिज्जा बन्त-सी बातें उमे खुश करने के लिए कह दत हैं यो ही । ममखरी करने की उनकी आदत है । एक रोज बोल तुम बडी होकर खूब मुदर निकलोगी ।"

जुगनी मुमकरायी, जिज्जा जोतसी हो गय हैं क्या, जा आगा-पीछा बतला देत है ? हुँह, खूब मुदर निकलोगी । सिराम का छाकरा बित्तू ता जब-तब ठंगा मार कर चिढा देता है— गारी गारी गोरडी गँवार बनके डाल र ।" बित्तू को जवाब दिया था एक दिन, जुगनी न— 'गारी तो मेरी जिज्जी है दूध भी मला लगे उसक सामन ।" बित्तू ने तयोरियाँ चन्कर कहा था गदी है तुम्हारी जिज्जी एकदम छि छि तुम्हें कुछ भालूम नही है ।

उस वकन ता जुगनी वासपट्टी लकर बित्तू को मारन दौडी थी और वह हिरन की तरह कुलाँधे भरता हुआ भाग गया था पर बाद म उसे लगा था कि चाह ऊपर स दिखनाथी न दे पर जिज्जी के भीतर गन्गी ता है । जब कभी जुगनी का उस ग दगी का एह्मास होता था घिन डूटने लगती थी ।

चौखट पार कर जुगनी गली म फिर जानवरा क बाडे म आ गयी । गावर और भूत की ग घ ने उम घेर लिया । एक गाय तनिक कसमसा कर रभायी और कान उठाकर जुगनी को देखन लगी । एक जगह जुगनी फिमल कर गिरत गिरत बची । पाँव तले की माटी गीली और रपटन भरी थी । जार स एणी लगने पर कुछ छींटे घाघरे की पटलिया और पिडनिया को भिगो गय ।

जहा भूसे क घोर पडे थे, जुगनी एक जगह अनमनी मी बैठ गयी । कितना-कुछ उसके अतस मे घुमड रहा था । एक लहर के बाद दूसरी लहर उठ...

आती थी। एक आवाज़ के बाद हाते ही दूसरी आवाज़ कलेजा चीरने लगती थी। एक दृश्य मिटता था और दूसरा दृश्य उस गद भरे माहील म कई-कई छायाओं को समेटकर घरघराने लगता था। जिज्ञान एक बार टोका था तू बहुत जल्दी सयानी हा गयी है जुगनी ! सयानापन तबस्तीफ देता है।

नजनीक ही पुआल का ढेर था। उधर कुछ छटका हुआ। डोकी क टूटन और चरमरान के साथ सुखर-गुमर। जुगनी के जी म आया कि पूछे कौन है उधर पर अदर-ही अदर सब ओर से इतनी उदासीन थी वह कि चुपचाप ताककर रह गयी। वातचीत का एक टुकड़ा उछल कर आया—

यहाँ स मुझ यहाँ स चूमो ! स्त्री का स्वर।

नीचे और नीचे हो जाआ।' हाँफत हुए पुरुष के शब्द।

चिट चिट चिट डोकी का टूटत रहना—टूटत रहना—टूटत रहना ! फिर एक खामांगी और सज-तज साँसों की बलान पर उतरत हुए दो पंगु।

हरी गोली ल रहा है वो ?'

हाँ।

सात दिन तक उता रहे ध्यान रखना तुम।'

'ले लगा वो। उसे तुम पर भरोसा है।'

हफ्त भर की बात है। काया के जजाल स पिड छूट जाएगा

उसका।

तुम्हारे गुण गा रहा था। कह रहा था भला आदमी है।'

पुरुष हँसा अगले जनम म भी गुण गाएगा क्या ?

स्त्री भी हसन लगी फिर बोली 'पुआल चुभता है।

इधर जा जाओ। यहाँ सूखी दूब का कट्टा है।'

लोभ मत दो।'

'आओ तो सही।

नहीं, अब मैं थक गयी हूँ।

कुछ क्षण चुप्पी।

'अई नाचत क्यों हा ! आ रही हूँ।

जुगना को लगा, जस किसी ने उसका समूचा शरीर अलाव म भोक

दिया है। अग-अग झुलस रहा है। आग की लपटों ने उसके रोम रोम में गरम मुड़ियाँ बुझाना शुरू कर दिया है और वह मूरत बनी हुई है। सब-कुछ सह रही है। इतना ताप इतना अपमान इतना विष ! नहीं, वह कुम्हार के हाथों घड़ी गयी मिट्टी का पुतला नहीं है जिसे लगातार बिना थोने अगन में पकते रहना है। क्या वह कभी कुछ नहीं कर सकेगी ? जिज्जा की दृष्टि में वह ज्यो-ज्यों सयानी बनती जा रही है, अपनी निगाह में गिर रही है। उसकी नस नस में तिलमिलाहट भर गयी।

‘कौन है वहाँ पुआन के पास ?’

जुगनी को आश्चर्य हुआ, अपनी आवाज़ पर—‘तकिन यह भी महमूस हुआ कि भीतर कुछ जमकर सख्त-मा हा गया है।

पुआन के डोक बजे। एक आदमी तज़ी से बाड़े के बाहर चला गया। कुछ क्षणों के बाद औरत भी जान लगी।

जुगनी ने पुकारा, ‘जिज्जी !’

औरत ठिठकी। फिर उसकी आर मुड़ी।

‘तू क्या कर रही है यहाँ ?’ जिज्जी के स्वर में भय था क्रोध था अटपटापन था।

‘मैं तुम्हें ढूँढने आयी थी।’ कहकर सहसा जुगनी का लगा कि उसके भीतर उठती हुई चिनगारियाँ यकायक बुझने लगी हैं और राख हाती जा रही हैं।

‘अच्छा घर चल !’

आगे-आगे जिज्जी थी पीछे-पीछे जुगनी।

दरवाज़े से कुछ दूर, जिज्जी रुक गयी।

‘जा तू परीडे से दो खाली धड़े उठा ला। कुएँ से भर लात हैं।’

‘इतनी रात का ?’ जुगनी को ताज्जुब हुआ।

संसार औरतों की बहुत भीड़ हो जाती है। बेचार की भिन्न भिन्न में कौन पड़े ? अभी हम दोनों ल आँगे पानी।’

अपनी छप्पर में गयी और धड़े लेकर लौट आयी।

कुएँ की ओर जान वाला रास्ता टापी का बीच में म काटता था। जुगनी ने देखा कि धरो में अभी ‘जागर’ थी साग माय नहीं था।

‘चंद्रमा का ग्रहण है आज। मब जाग रहे हैं।’ जिज्जी ने कहा।

‘मैं भी देखूंगी ग्रहण।’

‘ता ला घडे मुझे द दे।’

जुगनी न सिर उठाकर देखा, घोड़े स हिस्से को छोड़ कर पूरा चाँद वाला पड गया था। चाँदनी एकदम कजला गयी थी।

अधिक मत दखो उधर अपशबुन होता है।’

जुगनी ने पलकें झुका ली, पर तभी उमे खयाल आया बाप का उनका भूरी दाढ़ी का ढेरे’ जोर कताई का—सब कुछ गुम हो गया था।

ग्रहण क बाद मौत जरूर आती है इस ढाणी म। जिज्जी कह रही थी पिछने दफे समदे का ताऊ मरा था। इस बार जाने किसकी बारी है।

जुगनी की पसलियो क नाथे मानो किसी ने चाकू रख लिया। वह काँप उठी। क्या मतलब है जिज्जी की इस बात का? मौत हरी गोली तो क्या इस बार जिज्जा ?

पुआल के पास कौन था मर साय तुमने देखा था। जिज्जी के सवाल ने उसे फिर अस्त व्यस्त कर दिया।

‘हाँ मनसा।’

रहना मत किसी स। जिज्जी की जावाज खरखरा गयी।

अच्छा नहीं कहूँगी।

अपने जिज्जा स भी नहीं। एक औरत को दूमरी औरत का भेद छुपा कर रखना चाहिए। कुछ बरमा बाद तुम सब समझ जाआगी।

कुआँ आ गया था। खेलिया के पीछे कुछ कोठडिया थी, जिनम जलग अलग धरो के रस्स पडे रहत थ। जुगनी न पूछा अपना रस्सा ल आऊँ ?

‘रुको जरा।

जिज्जी घडे रख कर जगत पर बठ गयी।

जुगनी न कुएँ म भाँककर देखा घुप्प-अँधेरा था। दिन म पानी की गोल-गोल सतह चाँदी क थाल की भाँति चमकती हुई नजर आती थी। एक ढेला उठाकर जुगनी न कुएँ म डाल दिया। पन भर बाद गुँज ऊपर आयी—डब्बSSम !

‘एसा मत कर ।’ जिज्जी ने खीजकर कहा ‘पाप लगता है ।’

पाप ! जिज्जी के मुह से यह सुनकर जुगनी को हँसी आ गयी ।

‘दाँत क्या निकाल रही है ?’ जिज्जी चिड़ गयी ।

‘तुम भी पाप-गुन मानती हो जिज्जी ?’ जुगनी न दूसरा डेला उठाकर ठहाका लगाया, ‘मनसा तो तुम्हारा घरम का भाई ?’

‘मैंने बरज दिया था न तुम्हें कि यह बात कहना मत किसी से ।’ जिज्जी की चिड़ गुस्स म बदल गयी ।

‘मैं और किसी से नहा, तुम्ही से कह रही हूँ ।’

‘बक्वाम मत कर ज्यादा ।’

‘सारा गाँव चरचा करता है तुम्हारी ? किसी से छुपा हुआ है कुछ ?’ जुगनी न डेना फिर फेंक दिया कुएँ म । फिर पहल जैसी ही गूज हुई ।

‘मुझसे जबान लडाती है तू ?’

‘तुम जो कुछ कर रही हा वह गलत है । जुगनी की आवाज मे एक निगयात्मक दन्ता थी ।

तो इस तरह पख निरल आय हैं तुम्हार ।’ जिज्जी न दाँत पीसे, ‘एक मिनट म ये रग-डग ठिकाने लगा दूगी समझी ।’

तुम अपन रग-डग अच्छी तरह ममझ लो जिज्जी !

मोंटा पकडकर सात जूत लगाऊँगी चुडल । मुझे तग मत कर ।’

अडबड मत वानो जिज्जी ! नहीं तो ।’

तू घमका रही है मुझे ?

जिज्जा फनफनाती-भुकारती हुई जुगनी की आर बढी । जुगनी भाग कर कुएँ की खेलियो के बीच जा खडी हुई ।

मुझे मारन के लिए अगर तुमने हाथ चलाया ता तुम्हारे तन म कीडे पडेंगे कीडे ! मत्यानाश होगा ।’

जुगनी दूर से मन की भभक निकान रही थी । तभी उसने दखा कि जिज्जी उधर लपकी उसका एक पर चडम मे उलभा, वह गिरी और दूसर ही क्षण उसका शरीर समा गया कुएँ म । घम्म एक चीख की दम घाटती हुई यह गूज ऊपर आयी और फिर शांति । साँव-साँव सनाटा ।

जुगनी को काठ मार गया। स्थिति के इस अप्रत्याशित मोड़ ने उसकी बुद्धि को बूढ़ कर दिया। फिर उसे लगा कि वह अपने-आप पर से नियंत्रण खोती जा रही है। जमे कोई बेहोशी में नींद में चलता हा वह चइस के ठिकट जाकर कुएँ में झाकनें लगी। न कुछ दिखलाई दिया न कुछ सुनाई दिया। उसने चाहा कि किमी को पुकार या रोने ही लगे पर वह न रो सकी न पुकार सकी। भय और आतंक न उसे जड कर दिया।

बाकी देर बाद नशे की माँ हालत में जब जुगना घर लौटी तो जिज्जा और मनसा आगन में खड़े बातें कर रहे थे।

जुगनी न मनसा को जलती हुई निगाहों से देखा। हाँ अब वह स्थिर थी। उनकी खोपी हुई शक्ति शिराजों के सहारे फिर से जमा होने और खोलने लगी थी।

तुम यहाँ क्या कर रहे हो ? ' जुगनी इस तरह बड़ी मनसा की तरफ मानो उसका मुँह नोच लगी।

मनसा ने कोई उत्तर नहीं दिया जलबत्ता सहमकर एक कदम पीछे हट गया।

' मैं मनसा को बतला रहा था चाँदरमा और इस ग्रहण के बारे में।' जिज्जा बोले।

निकल जाओ इस घर में। जुगनी पगलाई हुई सी मनसा पर टूट पड़ी और माँसा का कुर्ता फट गया।

आइँदा तुम्हें देख भी लिया मेरे दरबज्जे की तरफ, ताँ याद रखना आँखें फोड़ डालूँगी। जिँदा नहीं छोडूँगी तुम्हें। वह चिल्लायी फिर जमीन पर गिरकर बेतरह रोने लगी सब कुछ खत्म हो गया जिज्जा।'

चंद्र ग्रहण पूरा हो चुका था। आममान और धरती के बीच काजल का चूरा बिखर गया था। ढाणा में उठत हुए गार और जुगनी की सिस कियों के उफान के बीच जिज्जा चुपचाप खड़े थे हम्मेगा की तरह अकेले और अनुपस्थित।

विस्फोट

कौए की एक खास आवाज होती है। लगता है जैसे उसका गले को बरहमी में चीरती हुई बाहर निकली है। मैं उस आवाज को पहचानता हूँ मुझे बाबा का दोना हाथों से कान पकड़ना और जमीन पर मरधा टेकना याद आता है। वह डर जाते थे। भरी दुपहरी में किसी कौए की इतनी खुदगज, खाली और एक तीखी तय में मुई की तरह चमकती हुई आवाज का मीघे-सीघे बरदाशन करना उनके लिए मुश्किल था। वह सोचते थे कुछ होने वाला है। एक अपरिचित अशुभ घटना पर जमी हुई काइ की परत टूटन वाली है।

प्रेम करने के बाद मैं ज्या ही नीचे उतरा और अपन-आपको सहने की कोशिश करने लगा मैंने वह आवाज सुनी लगा कि अभी कुछ देर पहले एक बाना कौआ मेरे भीतर चाब मार रहा था सहसा चीख कर उड़ गया है। शायद कुछ होने वाला है। छिडकी का आघा कपाट खुला था।

घने पेडा अनमने बादला और धूप के तिकौन फँदाव का एक लट्टड-सा दृश्य जबरन अदर धुग आया था। उस दखन-खते साँस लना कठिन था। मैंने मुह फेर लिया। नहीं यहाँ कभी कुछ नहीं होगा।

वह वहीं पर थी ग्लानि के एक लंबे क्षण की तरह पसरी हुई। बूल्हा व नीचे दबा हुआ तबिया निकान कर उसने परे रख दिया। सुख के अमसदीय रोमाच का जा जतिम हिस्सा उसके शरीर स चिपका हुआ था, वह सदन की कारवाई स निकाल दिया गया और धातावरण पुन शात हो गया। उसकी आँखें अब मेरे चेहर पर थी और भरा चेहरा नय-पुरान जन्मा से इस कदर लथपथ था कि उसकी शिनाम्ल करना मेरे लिए भी दिक्कत-तलब हो गया था।

मैं जानता था उन आँखो स भय लगा हुआ है। दरलन की डाल पर लटकत हुए मुरद को अपने कघा पर झेलने व बाद विक्रमादित्य की आँखो स भी यह भय लद गया था। आसपास व सवालो पर निरतर चुप रहन का अथ है मुरदे को डोन की पुल्ना तयारी करना। वह जरस स चुप थी और उस चुप्पी के सहार अमस्य कमजोरियो स बिछरे अपने नगे हिस्सा को ढँकने की वचनी स गुजर रही थी।

मैंने पुकारा 'शहरबानो !'

शहरबानो प्रम करने के बाद पूरी तरह खामोश थी।

अपने अधरेपन को खामोशी के पूरेपन स बद दिया जा सकता है। खामोशी उस मतवान की तरह है जो ।

मुनो !'

मतमान का ढक्कन ऊपर उछलना। मैं इतजार करन लगा।

'नहीं कुछ नहीं।' वह फिर कोसो दूर हो गयी।

समय दा नग और भद्रे शरीरो को कपडो से ढँकन गया।

अक्सर सब कुछ यू ही बिना किसी फँसन के निरथक हो जाता है, मैंने कमीज व बटन बद करते हुए सोचा और उसे स्कॉट का कमरबद कसते हुए देखने लगा। यह देखना अपनी आँखो का अधेपन की ओर ल जाना था। नजर के सामने हर नुक्ता साफ था फिर भी सब-कुछ न होने व बराबर था।

तुमने कभी मुरग नहीं डोया ?

'नहीं।' शहरबानो की आवाज फँसी हुई थी।

डो सकती हो ?'

“नहीं।” मैं इग जवाब मे वाजिफ था। वह माँ वना स डरती थी
कि उस अपनी माँ से सम्म नफरत थी।

उसी रोज जब शाम का अखबार हाथ म आया, तो मुखपृष्ठ पर
लिखित बड़े-बड़े अक्षरा वाली एक खबर ने मुझे चौंका दिया। एम०एम०
गुनी से विधानसभा म इस्तीफे की माँग की गयी थी। विरोधी दल
नके खिलाफ उमड पडे थे। यही नही काप्रेस के भी कुछ युवा विधायक
गागुली के आचरण की बटु आलोचना की थी। कई गमीर आरोप
गाये गये। कहा गया कि गृहमत्री के रूप म गागुली बर्नई अरापन रहे हैं।

“पुलिस और असाभाजिक तत्वा क स्नेह-सबधा को बढ़ावा दिया है।”

“महेंगाई और मिलावट को लेकर राजधानी म जो प्रदर्शन हुए उह
दूरता से कुचला गया। गागुली ने स्वयं कुछ भोजवान नेताओं की सूची
नायी और गोली-काड के पहले ही दिन किसी-न किसी व्हाने उन सबको
मून देने का आदेश दिया।”

“ऐसे तथ्य मिले हैं जिनसे साबित हाता है कि गागुली को सेठियों,
ब्रामाचरों और तस्कर-ध्यापारियों से निश्चित घन मिलता है।

“पत्नी की मृत्यु के बाद गागुली महोदय न एक रखैल जनत वेगम
को घर म डाल रखा है। वह सी० आई० ए० की एजेंट है।”

गृहमत्री ने कुछ उच्च अधिकारियों को छलत पदो-ननि नेकर मन
माने ढग से तबा-ने किय हैं।”

“लगभग तीन फलोंग जमीन घेरकर गृहमत्री आजकन एक आलीशान
बगला बनवा रहे हैं। वहाँ पहल लुगी मोपडी वाला की बस्ती थी पर
उह रातौरात बदगन कर दिया गया। उनरे बच्चा और बनस्तरों को
उठा-उठाकर फेंक दिया गया। स्त्रिया के साथ सिपाहिया ने बनावार
किया। एक गूबमूरत औरत को गृहमत्री की विदमत म भी पश किया
गया ” आरोपो की एक लम्बी फेहरिस्त थी।

मेरी आँखों के आग गागुली का चेहरा उभर आया। आरोपो की
चौछार म वह कसा हो गया होगा? उसे लोहपुरप कहा जाता रहा है और
वह है भी ठसस। कुर्सी पर सदा एक ही आसन म बठता है। पश पर इस
तरह घमक्ता हुआ चलता है मानो पाँव नहीं, मुद्दर पटक रहा हो। तोप

की गडगडाहट में बोलता है। वसी भी फाटल हो, कितना ही बड़ा नोट लगा हुआ हो वह मिफ हाँ या ना लिखकर दम्तगस्त डाल देता है। वह बातें करते-करते सो जाता है और सोते-सात मात्र बडबडाहट के द्वारा भँकडो मसले निबटा देता है।

मुझे सचमुच अफसाम होन लगा कि जब मैं शहरवानो के साथ कोतवाली के पीछे वाले क्वाटर में प्रेम कर रहा था, तो विधान-सभा के बाहर हजारों छात्र 'गागुली मुर्दाबाद' के नारे लगा रहे थे।

शहरवानो को भी पता नहीं था। कूल्हा के नीचे तकिया रखने और देह की राजनीति का कुशल संचालन करने के बावजूद वह उस प्रबल विरोध से अनभिज्ञ थी, जिसका सामना उस बकन उसके पिता को करना पड़ रहा था। वह आरामदेह ढग से अपने कम फल को भोग रही थी और विधान सभा में पिता अपने कम फल को।

छात्रों का वक्तव्य था कि गहमत्री इस वष दीक्षात-समारोह में जन्त प्रगम से भाषण कराना चाहते थे पर उपकुलपति ने यह मजूर नहीं किया। गहमत्री गाराड हो गये और ज्यो ही हडताल हुई उन्होंने विश्वविद्यालय में पुलिस को प्रवेश का हुक्म दे लिया। कल पुनिस ने उपकुलपति का निवास जला दिया और कहा कि यह काम असतुष्ट छात्रों का है।

सदन में कहा सुनी होनी रही। गहमत्री ने स्पष्टीकरण देने से इनकार कर दिया। आखिर दबाव इतना ज्यादा बढ़ गया कि मुख्यमंत्री को खड़े होना पड़ा। उन्होंने शांति बनाये रखने की अपील की। विधानसभा के अध्यक्ष ने भी सदस्यों को मर्यादाओं का ध्यान दिलाया।

तभी अदर समाचार पहुँचा कि छात्रों ने फाटक तोड़ दिया है और वे पुलिस का मुकाबला करते हुए अदर घुसने का प्रयत्न कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री घबरा गये। छत्तीस वर्षों में ऐसा कभी नहीं हुआ था।

उह लगा गद्दी गयी। वह बाहर आये और हाथ उठाकर छात्रों के उफान को रोकने लगे।

छात्र रुक गये। चिल्लाये उस बूट को मंत्रिमंडल से निवालो।”

“कौन बूटा ?”

गागुली ! गागुली !

मुख्यमन्त्री मुसकराये। उन्होंने कहा, ' मैं आरोपो की जाँच कराऊँगा।'
'कोई जाच-वाच नहीं ! गागुली—इस्तीफा दो !''

छात्रा का गुस्सा बढ गया।

“आरोपो को सही पाया गया तो मैं उचित कदम उठाऊँगा।”

“तेरे कदम की ऐसी-तैसी !”

‘ओय भडवे, गागुली स इस्तीफा माग !”

“हम नया खून चाहते हैं।”

‘मुख्यमन्त्री का—नाश हो !” एक नारा हवा मे फटा और मुख्यमन्त्री बुझ गये। एक पत्थर उनकी कनपटी के पास से निकला और उनके भीतर सनसनी फल गयी। मन ही मन उन्होंने कुठ तप किया। तप करना जरूरी था। यह उवाल अब मुख्यमन्त्री के नाश की शकल ले सकता था। वह आगे आये, दो कदम आगे। पिडलिया काँप रही थी।

“मुख्यमन्त्री—भाड मे जाओ !” छात्र चिल्लाये।

मुख्यमन्त्री ने ऐलान किया ‘ मैं जनमत का हमेशा सम्मान करता हूँ। गहमन्त्री गागुली अडतालीस घटे मे इस्तीफा दे देंगे।”

छात्र एकता—जिदावाद !”

चौतरफ खुशी की लहरे मचलने लगी। जुनूस वापस मुड गया। सिपाहियों के सिर पर से लोहे के टोप उतार लिये गये और उ ह डफनी की भाँति बजाया जाने लगा।

यह हाल हवाल अखवार मे खूब रग और रौनक नेकर छापा गया था। साय में दो काटून थे—एक मे, मुख्यमन्त्री गिडगिडात हुए गागुली से इस्तीफे की याचना कर रहे थे। दूसरे मे, जनत वेगम गागुली के इस्तीफे का पान की तरह फैलाकर चूना और कत्या लगा रही थीं।

मैं जब बंगले का दालान पार करता हुआ दरवारे-खास मे पहुँचा तो वहाँ दोनो काटून मौजूद थे। रात अँधेरे मे जाग रही थी। मुख्यमन्त्री कर पात्र फलाये त्यागपत्र की भिक्षा माँग रहे थे गागुली महाशय स। जनत वेगम पानदान खोल अँगुली पर लगा हुआ गुलकद चाट रही थीं। उन्होंने मुख्यमन्त्री से पूछा, “आप कैसा पान लेंगे ?”

मुख्यमंत्री के गलत घरघराहट हुई 'इस्तीफा दे दो।'

मुझे देखते ही गागुली ने तोप छोड़ी, शहरवानो कहाँ है ?'

मैंने एडिया मिलाकर सल्यूट मारा। इस वक्त मैं बरदी म था। जूतो की आवाज रात के सनाटे में गूज गयी।

तुम शहरवानो की जिदगी बरवाद कर रहे हो !''

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। शायद वह सही था एक पिता के रूप में। शायद मैं गलत था एक प्रेमी की भूमिका में।

कौन किसी की जिदगी बरवाद करता है ! 'जनत वेगम ने गागुली को झिडका 'तुम खामखा गुस्ता हो जात हो ! शहरवानो भीतर है। वह तो हफने भर से कही गयी ही नहीं। कहती है बेचारी मुझे तो घर हाँ अच्छा लगता है।'

मैं चकराया। जनत वेगम की आवाज सपाट थी। उसमें कुछ तलाशना कठिन था। मुझे अपने पर अविश्वास होने लगा। भरी दुपहर में मैं किसके साथ सोया था ? क्या वह शहरवानो नहीं थी ?

विधायक मत करो। मुख्यमंत्री अभी भी ऐसे बोल रहे थे जैसे विधानसभा का माइक सामने हो 'त्यागपत्र तो तुम्हें देना ही होगा, गागुली ! यह भरी प्रतिष्ठा का प्रश्न है !

तुम्हारी कोई प्रतिष्ठा नहीं है !'' गागुली ने घमका किया।

'ऐसा मत कहो मैं मुख्यमंत्री हूँ !''

मेरे साथ अट्टावन विधायक है। अगर मैं तुम्हें समर्थन देना बंद कर दूँ तो कल से तुम मुख्यमंत्री नहीं रहोगे !'

हाँ कमान के लोगो का मुझ पर भरोसा है।

मैं उन लोगो को अपने अडरवियर में रखता हूँ !'

मुख्यमंत्री खिसिया गये और ही ही करने लगें।

जनत वेगम ने फिर पूछा 'आप कसा पान पसंद करेंगे ?'

वह बोले, 'इस्तीफा दे दो इसी में हम सबका हित है !'

तुमने मेरा अपमान किया है ! तुमने मुझे बिना पूछे मेरे इस्तीफे की घोषणा कैसे कर दी ? गागुली के नयुन फूल गये, 'अब मैं तुम्हारा अपमान करूँगा !

जन्त वेगम का दुपट्टा नीचे खिमक गया और पेट का फुनाव औंधे घड़े की भांति भाकने लगा। वह पूरे महीनो पर थी।

मैंने अचकचा कर जन्त वेगम की बड़ी ब्रडी आखा मे कुछ दूटना चाहा वसा ही भय जो शहरवानो की आँखो म था। नही, जन्त वेगम निश्चित थी। कोई चिह्न नही था वहा। न खनरा न खीफ। जब शहर-वाना माँ बन जायेगी, तो वह भी इसी तरह बेखबर और बेखयाल हो जायेगी, मैंने सोचा हालाकि यू सोचना बुरा लगा।

‘मेरा अपमान प्रजातंत्र का अपमान होगा।’

मैं जत्र चाहूँगा प्रजातंत्र की ऐसी तैसी कर दूंगा। वह भरा क्या उखाड लेगा? मैं तो लौहपुरुष हूँ।’

तुम अब दूँ हो गय हो। अब नुमम वह बात नही रही।” मुख्य मंत्री न भी पतरा वदन निया।

‘क्या बात नही रही?’

पहले वाला दबदबा नही रहा तुम्हारा।”

‘मेरे पास पुलिस का महकमा है। जब पलिक के सामने तुम्हारी लीड निबलने लगती है तो मेरा ही विभाग आगे आता है और एक एक जन के सिर को तीन तीन बार फीठता है।’

‘मैं दिल्ली वास की है। कुछ रोज ठहर कर वे तुम्हू के ट्रम लेंगे। वहाँ दूँ लोग चल सकत हैं।’

‘लेकिन दूँ है कीत?’

‘छात्र तुम्हें दूँ कह रहे थे। उनकी माँग थी कि जब नय खून को भोज मिलना चाहिए।’

‘तुम्हारी उम्र क्या है?’

‘छियानीस बरस।’

मैं अडमठ साल का हूँ। मुझम पजा लटाओगे? अभी पता चला जाता है कि कौन जवान है? बहकर गागुली ने दायाँ हाथ आगे बजा लिया। जन्त वेगम मुसकरायीं। शहरवानो की मुसकराहट म यह नरमाई और गरमाई क्या नहीं है? मैंने साचा और उसकी एक बात यात्र कर कि ‘तुम मेरी माँ पर मरते हो उस रही पर’ चुपने-न हँस दिया। मुख्यमंत्री

गांगुली बे पजे की देखकर पसीन म नहा गये ।

यह पजा ही फ़ैसला करगा कि इस्तीफा मुस्त देना है, या तुम्हें !”
गांगुली गुराया ।

“चोप्य !”

तभी एक दवा-सा स्वर सुनाई दिया पर वह अजीब और भयानक था मानो दीवार की इट्टें पिसवाकर फूटा हो ।

‘कौन है ?’ गांगुली ने भेरी ओर देखा, ‘दरवाजे पर इतनी रात गये कौन आवाज दे रहा है ? जाकर देखो और बाल दो, सुबह ही मुलाकात हो सकेगी ।’

मैं चलने लगा कि फिर वही स्वर उछला “रको, मैं यहीं हूँ !”

कौन है यह अहमक !” गांगुली गरजा और पजा समट कर इधर उधर देखने लगा । मुख्यमन्त्री ने राहत की साँस ली ।

‘यह आवाज मेरे भीतर से आ रही है । जनत बेगम ने हकलात हुए कहा, ‘मेरे पेट म स !”

गांगुली चींका फिर उछल कर पट क ठाक सामन पडा हो गया ।

यू धूर धूरकर क्या देख रह हो बे लौहपुरुष !” वही स्वर सुनाई दिया मैं अभी गभ म हूँ । बाहर आऊगा तब तुम्हारी हुलिया दुस्त कहूँगा !”

जनत बेगम कांपती हुई अपना पट सहला रही थी ।

कौन हो तुम ? गांगुली चींका । उसने मुट्टियाँ तान ली ।

‘जगर तुम भरी माँ की तग न करा ता बसला दू ?’

‘हाँ, हाँ, बोलो !”

‘मैं मुख्यमन्त्री का लडका हूँ !’ इस बार स्वर म व्यग्य वा पुट था

‘रखल रखने से ही कुछ नहीं होता, समझे ।

जनत बेगम बेहोश हो गयी ।

‘आग लगे तुम्हारे इस अडियल युटापे म । गभस्थ बच्चे न कहा, ‘तुमने भरी माँ की जवानी मिट्टी म मिला दी । जब खच्चर, इस्तीफा दे रह हो कि कुछ और कहूँ ?’

गांगुली मजबूत व गया उगन इस्तीफा लिपकर मुख्यमन्त्री को दे दिया ।

गिरती हुई वर्ष

व ठ उसक चेहरे का रंग बुके कोयले सा हा गया और माथे की बायीं ओर सीधी खड़ी हुई नस जोर जोर में फटने लगी ।

अमन में वह निरन्तर बतती ध्वनि के दबाव में आकर ऊबन लगा था । उसने हाथ-पावों में मूँचे पत्ता की चरमराहट-सी टूटन और उदासी महसूस की । दिल में धीरे धीरे कोई जलती हुई चीज घर घर रही थी । वह आँखें बंद कर मुस्ताने लगा । “बचने के लिए कोई रास्ता नहीं है उमने कहा ।

यह दुपहर की बात है । आकाश में घादन छा रहे थे और वह गम गम सामान खाकर कटीन से लौट रहा था । काफी की भाप उसके शरीर की जकड़नों को आहिस्ता आहिस्ता खोल रही थी । वह अपने ढग से खुश था ।

वारिष्ठा नहीं होगी मैं गत लगा सकता हूँ ।” साथ चलत हुए यत्रा ने गिर हिनाकर कहा । फिर उसने अपने गाल-गोल नथुने फडफडाये ।

वह रोज की तरह तटस्थता से मुसकराया । उमने मालूम था, यत्रा किसी भी बात पर शत नगा सकता है ।

कमर में घुगा तो मेज के पाए चपरासी फोन पकड़ खड़ा था ।

और परेशानी से उसका चेहरा गरदन से अलग होकर झूल आया था।

‘क्या बात है?’ उसने लापरवाही से पूछा और फोन ले लिया।

‘हलो, हलो हाँ, मैं राठी बोल रहा हूँ।’

बड़ी बुरी खबर है सा’ब’ — यह उसके पड़ोसी की आवाज थी चिपड़े की तरह तार-तार पटी हुई, ‘गुसलखाने में आपकी बीबी मरी हुई पड़ी है। जितनी जल्दी हो सके आप घर आइये।

‘मुझे पता था, वह एक दिन आत्महत्या कर लेगी।’ कहत वक्त उसका स्वर ज़रूरत से ज्यादा ठंडा था।

‘क्या कहा? आपको पता था? उधर से प्रश्न उभरा।

उसने फोन रख दिया। फिर चुपचाप खड़ा होठ काटता रहा। चपरासी घर घर काँप रहा था।

गुसलखाने के दरवाजे पर पुलिस के आदमी जाँच-भडताल कर रहे थे। मुहल्ले के जोर भी लोग जमा हो गये। उसने उनके कंधों पर से उचक कर देखा, पत्नी घुटने मोड़कर बड़े असभ्य ढंग से पड़ी हुई थी।

‘जहर खा लिया है।’ किसी ने उसके कान में कहा।

अचानक आहट हुई। वह अर्धे खोलकर चारा तरफ देखने लगा। बरामदे में एक छोटा सा बल्ब जल रहा था। बाहर अधकार काफी गहरा हो गया था, शायद पानी भी पड़ने लगा था। उस बत्रा की गत याद आई। वह हसा। तभी उसने थोड़ी दूर पर एक सिपाही को चहलकदमी करते हुए देखा। वह उठा। उसके पास गया।

क्या बात है? सिपाही ने तीमेपन से पूछा फिर उस पहचान कर बोला, लाश पोस्टमाटम के लिए गयी है।

वह पराजित और अपमानित-सा लौट आया। गले में टाई की गाँठ टूट करने लगी, वह उस खींचकर ढीली करने लगा।

हफ्ते भर पहले एक शाम पत्नी ने उससे पूछा था, ‘तुमने बफ को गिरते हुए देखा है?’

वह चौंक गया। चेहरे का पसीना पोंछत हुए बोला, ‘नहीं।’

उसने लिखा है कि आजकल यहाँ बफ गिर रही है।’ पत्नी खिडकी से बाहर खजूर का पेड़ देखन लगी।

‘किसने ? किसने लिखा है ?’

उसने तेज़ी से पूछा। पत्नी ने कोई जवाब न दिया। वह कुछ सोचने लगा।

‘क्या श्याम का पत्र आया है ?’

‘हां।’ पत्नी खोपी-सी बुन्दुदायी।

श्याम उसका एक मित्र था जो पिछले साल छुट्टियों में उसके पास रहने के लिए आया था। वह अक्सर शिमला के बारे में बातें करता और विस्तार से बताता कि वहां रहकर उसने अपनी कम्पनी को कितना मुनाफा दिया है। पत्नी से उसकी खूब पटने लगी थी।

रात को पत्नी की नींद टूट गयी। वह हड़बड़ा कर अपने बिस्तर पर उठ बैठी और सब तरफ घूर घूर कर देखने लगी। उसकी तम्बी-लम्बी साँमें सुनकर वह जाग गया था और चुपचाप उसकी ओर दृष्टि रखा था। सहमा वह चीखी, ‘देखा, बफ गिर रही है !’

‘कहा ?’ उसने पूछा।

‘यहां।’ पत्नी ने दोनों बिस्तरों के बीच में छूटे फासल की तरफ इशारा किया।

‘क्या सचमुच तुम्हें यहाँ बफ गिरती हुई दिखलाई दे रही है ?’

‘हां।’ उसने डूबते हुए स्वर में कहा और सीधी लट गयी।

दूसरे दिन जब वह पत्र जाने के लिए तयार हो रहा था, उसने देखा कि पत्नी नाखूना से दीवारों का रंग घुरच रही है। वह तभी बैठक में दौड़कर जाती कभी सोन के कमरे में।

‘क्या कर रही हो ?’ उसने हैरान होकर पूछा।

‘यहाँ बफ चिपकी हुई है।’ पत्नी ने दीवार के प्लस्टर को बुरी तरह उखाड़ते हुए कहा।

एक अघेड़ औरत राती हुई उगके पास आयी और पत्र पर बठकर तिसरने लगी। उसने साड़ी से मुह ढँक रखा था। वह दुविधा में पड गया। उसकी दृष्टि उस औरत से बात करन की हाने लगी। वह कोई सुराग खोजन लगा। तभी अँगन में मुह पर से कपटा हटाया और उसकी तरफ गहरी हितारन में दृष्टि। वह डर गया और दूसरी ओर देखने लगा।

औरत उसकी पत्नी की माँ थी।

जब उस पूछताछ के लिए अन्दर बुलाया गया, वह एक बटी हुई टांगा वाल मढ़क की तरह छटपटान लगा था। हाल में आठ-दस आदमी थे। उन्होंने झटक कर एक माथ कई सवाल किये।

वह हक्का-बक्का रह गया। फिर उसने आग के दाँता से होठ चमात हुए कहा, 'क्या आप लोगो न बफ का गिरना देखा है? हाँ यह सच है कि गिरती हुई बफ को रावा नहीं जा सकता।'

घाव

जाने में चाबी घुमाने समय उसे लगा कि नल खुला रह गया है। फण पर बं-व-पानी गिरने की आवाज हो रही है। किवाड़ो की धकेलना हुआ बहुतजी स अदर गया।

गैंगी कमने के बाद बहुत ध्यान से उसने सब ओर देखा। मेज पर रख बेतरतीब कागजो के साथ एक भारी भरकम किताब पड़ी थी। वह स्तनों भाषा विभाग के सफ़्टरी की मेहरवानी स रुसी पुस्तकी का अनुवा कर रहा था—म-येदस्का लितिरतूरा। जाने में स्टोक वाल्टी कारपाई के नीचे पुरान जूते, अलवार की रद्दी, मने कपडे दीवार पर जान प्रेम म जडी हुई उसकी तम्बीर—वह बी० ए० का डिग्री हाय म थामे जवरन मुमररान की चेष्टा कर रहा है आँखें बाहर निकल आई हैं और मोटे होंठ कनपटिया तक फैल गये हैं ।

कमरा बंद कर वह सड़क पर आ गया।

थासपास के मकान एक जमे ही थे। उनका अलग कोई रंग नहीं था। उड़ती हुई धूल धूप से गँदला गयी थी और उसने समस्त बन्नुओ से एक अविश्वसनीय गम्भक स्थापित कर लिया था।

लेखे स हान सुनकर वह ठिठका, फिर विनारे की तरफ हटकर चलने

दियो से भरी हुई जल की गाडी उसकी बगल से गुजर गयी। एक
तेजित घरघराहट को उसने कुछ देर तक विरक्त भाव से महसूस
वह उन लागे के बारे में सोचने लगा जो गाडी में बँटे हुए थे
इन्हें पहचानने की दृष्टि से देखा था क्या सजा पाय हुए व्यक्तियों
एक से होते हैं ? शायद हाँ नहीं तो ?

ही ग्रामोफोन बज रहा है। धिसे हुए रिक्काड पर मुई अटक-अटक
रही है। उखड़ा उखड़ा स्वर संगीत ।

मने से पोस्टमन को आते हुए देखकर वह बेचन हो उठा। पहले
चिट्टिया का इंतजार करता था। कितने ही दोस्त थे। अब तो
भार भाभी की दो चार पत्रियाँ आती हैं। वही पूछताछ नौकरी
नहीं ? शान्ति के बारे में क्या सोचा ? इस तरह कब तक चलगा ?
टमन अपना रथवा घसीटता हुआ दूर निकल गया तो उसने राहत
ली।

जियम की लाल इमारत गम रेत से ढँकी हुई ऊध रही थी और
मनहूस पल्लभूमि में रामनिवास बाग में लम्बे दरख्त थे। भूरी
भूमि पर सामें भरता हुआ पत्तभर और मुडा-तुडा स नाटा
काव-काव करता हुआ जजमेरी गेट की तरफ चला गया चंद
वाद एक चौवा उसी निशा में पख फड़फडाता हुआ उड गया ।
और थकान से ढहकर वह एक पेड की छाया में बैठ गया। ठेन
दर को उसने इशारे से बुलाया।

'लाऊ साव ?'

उ भी। वह मुश्किल से कह पाया। गला सूख रहा था।

'ये बडे आलू छोले गोल-गप्प ?'

उ भी। उसने खीजकर कहा।

'रा सकपका गया।

'की भाडियो के नजदीक एक पूरा मूज की टोकरियाँ बुन रहा
नी छोटी रस्सियाँ। पानी में भिगो भिगोकर वह उनमें गाँठें

वमेव माता

सगाना। सीलियाँ जोते वकन उसको बड़ी मेहनत करनी पड़ रही थी। हथेलियाँ बाँपन लगती, साँस फूट जाती और त्रिना दाता वाला मुह पिच पिचा उठता।

लू शरीर झुलसाने लगी थी। पीने पत्ते इधर-उधर उड़ रहे थे।

जल्दी जल्दी पट भरकर उसने पैस चुकाए। जीभ पर तेज मित्र का स्वाद था। आँख-नाक रगड़ता हुआ वह पीठ के बल लट गया।

क्षण भर के लिए उसके मस्तिष्क में एक विचार आया यदि वह गीता से शादी कर लेता तो आज उसके पास एक बीवी और तीन बच्चे तो जरूर होते। करवट बदलकर उसने बूढ़े की तरफ देखा। वह चुपचाप सिर झुकाय टोकरियाँ धुन रहा था। उसकी आधी खापड़ी गजी थी और कानों के निकट सफेद बाला के दो गुच्छे थे।

एक-दो-तीन चार वह गिनने लगा। बूढ़े ने चार टोकरियाँ तैयार कर एक तरफ रख छोड़ी थी। पाँचवीं टोकरी के लिए वह मूज काट रहा था।

उठे-लेटे वह अपने कुछ सपनों को याद करने लगा, जो अक्सर उसे परेशान करते थे। एक श्वेत वस्त्रधारी साधु था जो नींद के पहले दौर में ही उसके सिरहाने आ खड़ा होता और शोध में भरकर गालियाँ बकता रहता। उसकी आँखें घघकती रहती। अधिक उत्तेजित होने पर वह उसके मुह पर थूकन लगता। एक पहाड़ उसमें एक गुफा। वह उम गुफा में घण्टों चलता जाता। उसका कही अंत नहीं था। बार-बार वह किसी चीज की मनमनाहट सुनता जैसे काँसी की थाली उपर से गिर पड़ी हो या कोई नाचता हुआ रक जाता हो और फिर नाचने लगता हो।

एक औरत उसके समीप आकर बैठ गयी। गर्मों से उसके चेहरे पर हनुवा सा तनाव था।

वह अघस्युली आँखों से औरत का मुआयना करने लगा।

तम्बाकू सा रंग। पसीन से तर छीट के बपड़े। उमवा दम फूट रहा था। काफी दूर से चलकर आयी होगी।

वह पेड़ के तने से टिककर बैठ गया। उस प्यास लगी थी। ठनवात छोड़ने से उसने पानी माँगा। वह गिलास ले गया।

औरत ने खखा कर उसकी तरफ देखा । फिर उसन टछनो तक साडी उठाई । उसके पाँवो मे कई ताजे घाव ये । उन पर खून चिलक रहा था ।

वह एकटक उसकी तरफ देख रहा था ।

औरत धीम स हसी । बोली, "दाद हैं । साल भर हो गया, ठीक नही हो रहे ।'

इनम खुजली होती होगी ?' उसने जैसे पूछने के लिए पूछा । उसे इस औरत से घिन हो रही थी ।

वह घावो को घुजलाती हुई बोली, 'खुजली ? हाँ, खूब होती है ।' बूटे न छ टोकियाँ बना ली थी । लाठी के सिरे पर उहे लटकाकर वह खडा हो गया और उबासियाँ लन लगा । उसके पापले मुह के लान मसूडे अजीब ढग से हिल रहे थ ।

मुहनी ।" बूटे ने खरखरे कठ से पुकारा ।

"क्या है ?' औरत ने तीखेपन से जवाब दिया ।

चलोगी नही ? बूटा चलकर उसके नजदीक आ गया ।

कहा ?' औरत ने घावो को नाखूना स महनाते हुए प्रश्न किया ।

घर बूटे का स्वर सधा हुआ था ।

औरत न साडी नीची की और खडी हो गयी ।

वह उन दानो को जाते हुए देखता रहा । औरत आगे आग थी, बूटा पीछे ।

घुधला-सा सूरज आसमान म लुटकने लगा था । वह अनमना-सा खडा हो गया । पाँवो के चप्पलो को सीधा करत हुए उसे औरत के घावो का खयाल आया । बहुत चाटकर भी वह बूटे के चेहर का कोई स्पष्ट चित्र अपने मस्तिष्क म न बना सका । अचानक उस लगा कि वह उस औरत के चेहरे को भी भूल गया है ।

सत्यवान

मैं बड़ी देर से आँखें खान पडा था हालाँकि एक पील परदे के सिवा कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। कभी वह दूर हट जाता था कभी एकदम पास आकर घाम घीम हिलन लगता था।

तुम्हें आक्मीजन दी गयी थी।'

रिची ने कहा। आवाज जानी-पहचानी थी।

किन्तु—मैं तो ऊपर उठ रहा था। हवा में। पख-सा हल्का होकर।

याद आया छपटन में बैंगना देग के एक जादूगर का कश्मिमा देखा था। उसने उनीस-बीस माल की नहकी को गूँथ में अधर टाँग दिया था। जमीन से दग-बारह गज ऊँचाई पर। लोग मूँ बाय एकटक ताकत रह गये थे।

चुप क्यों हा ? मुझसे बातें करो।

सामन एक औरत। भरा भरा गोरा चेहरा। तीव्र नाक-नकश और तजाब उँडेसती हुई मुम्कगहट। ओम् यह तो कपिला है ! उम खास मुरकराहट की यजहस वह तुरत चाहन में आ गयी। लकिन मैं उम भूँन कैसे गया ?

औरत ने खँपार वर उसकी तरफ गया । फिर उसने टपनी तन साडी उठाई । उसके पाँचा म कई ताजे घाव थे । उन पर खून बिलक रहा था ।

वह एकटक उसकी तरफ लेख रहा था ।

औरत धीमे स हसी । बोली, "दाद है । साल भर हो गया, ठीक नहीं हो रहे ।"

'इनम खुजली होती होगी ?' उसन जैसे पूछने के लिए पूछा । उसे इस औरत से घिन हो रही थी ।

वह घावो को खुजलाती हुई बोली 'खुजली ? हाँ, खूब होती है ।'

बूढ़े ने छ टोकियाँ बना ली थी । लाठी के सिरे पर उह लटकाकर वह खडा हो गया और उवातियाँ लने लगा । उसके पोपले मुह के नान मसूडे अजीब ढग स हिल रह थे ।

मुहनी ।" बूढ़े ने खरखरे कठ से पुकारा ।

'क्या है ?' औरत ने तीसेपन से जबाब दिया ।

'चतोगी नहीं ? बूढा चलकर उसके नज्जाम आ गया ।

'कहाँ ?' औरत ने घावो को नाखूनो से सहलाते हुए प्रश्न किया ।

'घर' बूढ़े का स्वर सधा हुआ था ।

औरत ने साडी नीची की और खडी हो गयी ।

वह उन दाना को जाते हुए देखता रहा । औरत आगे-आगे थी, बूढा पीछे ।

धुधला-सा सूरज आममान मे सुत्कन लगा था । वह अनमना-सा पडा हो गया । पाँवो के चप्पला को सीधा करते हुए उसे औरत के घावो का खयाल आया । बटुत चाहकर भी वह बूढ़े के चेहरे का कोई स्पष्ट चित्र अपन मस्तिष्क म न बना सका । जचानक उसे लगा कि वह उस औरत के चेहरे को भी भूल गया है ।

सत्यवान

मैं दही ढेर से आँखें धोने पड़ा था। हालांकि एक पीले परदे के सिवा कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था। कभी वह दूर हट जाता था कभी एकदम पास आकर घीमे घीमे हिलने लगता था।

तुम्हें आश्चर्यजन दी गयी थी।

किसी ने कहा। आवाज़ जानी-पहचानी थी।

किन्तु—मैं तो ऊपर उठ रहा था। हवा में। पख-सा हल्का होकर।

याद आया छुपटन में बेंगला देग के एक जादूगर का करिश्मा दावा था। उसने उन्तीस-बीस साल की लड़की को 'तूय में अघर टाँग दिया था। जमीन से तम-आरह गज ऊँचाई पर। लोग मुह बाप एकटक ताकत रह गये थे।

धुप बयो हा ? मुझसे बातें करो।'

सामन एष औरत। भरा भरा गोरा चहरा। तीस नाव-नक्श और तबाने उहेलती हुई मुक्कराहट। ओह यह तो कपिला है ! उस छात मुक्कराहट की बज्रहस बह तुरत धोहन में आ गयी। तबिन मैं उमे भूत कैम गया ?

‘डॉक्टर न कहा है होगा म आन ही रग दगा ।’

वह मर गन म कुछ जान रही थी । चम्पार स ।

उमकी आँखों म उदासा थी । घाती पलका म दुःख की छायाआ को उतारा गया था । वस उसाका बनाव गिगार हमेसा की तरह अपनी तुनी हुई जगहो पर कापम था और कोरा ठोरिय की फूनार साडी से एव विलापती महक फूट रही थी ।

मैन हेगना पाहा पर अदर मितली घुमहन लगी और एक बहजह को बोई शवन देन हुए मैं क करने लगा ।

घोटा-ना कप गिरा । मैं हाव-शोर करता रहा । और कुछ भी या नहीं मेरे भीतर उगनने के लिए ।

हाँफता हुआ तक्रिय पर दर हा गया ।

सास तेजी स घन रही थी और उतनी ही तरी स मैं अब चीजों को एक जगह दबट्टा कर साफ साफ जानने-समभने की चेष्टा कर रहा था ।

नस आयी । गील भाप भरे तीलिए से उसने मरा मुह पोंछा ।

मैं अस्पताल म हूँ और अभी तक जितना हूँ ।’ इन घयाल ने चीटे की भाँति रंग कर मुझे एन्सास कराया फिर अपन नुकील पज चुभा दिये । मैं तिलमिला उठा ।

वो S आये थे । कपिला न घीमे से कहा ।

कौन ? मैं पूछना चाहता था पर होठ हिले तक नहीं । शायद गिगाह म सवाल खिच गया था, इसलिये कपिला न उसका उत्तर दिया ।

‘उद्योगमत्री जी ।

एवाएक मेरे रोम रोम म सुइयाँ मभ गयी । मैं करवट बदलना चाहता था, लकिन लगा कि भय ने समूख शरीर को बफ की भाँति जमा दिया है । कुछ नहीं हो सक्ता था । मैंने जस बिल्ली को सामने पाकर बबूतर आँखें मूद लता है और स्वय का सुरक्षित महसूस करता है कस कर पलकों भीच लीं ।

‘वो तुम्हारी तबीयत जानने आये थे ।

कपिला वा स्वर कई छरों म बँट गया था ।

कितने व्यस्त रहत हैं वो S S S, लकिन यहाँ आने की तकलीफ

उहोन उठायो यह उनकी कृपा है, उदारता है।'

लांग प्लेडग रिक्वाड की तरह कपिला न उद्योगमन्त्री के आगमन का प्रमग बजाना गुरू कर दिया।

उहोन खुद डाक्टर से बात की। निर्देश दिये। कहा कि प्रोफेसर गुकना वन्दुत बटे फिलासाफर हैं। दश को उन पर गब है। उनके इलाज म कोई कमी न रह, यह देखना और समुचित व्यवस्था करना मरकार का पत्र है।"

कपिला के शब्द मानो किसी भाषण के खोखले मनवान से बाहर गिर पड़े थे। वह मजीदगी स मतवान को उलट पुलट रही थी।

उहोने एक वक्तव्य भी दिया है तुम्हारे लिए। खूब प्रशसा की है। तुम्ह वट्टेड रसेल के बराबर बतलाया है। कई अखबारा ने छापा है उस।

अखवार! मरी रीठ के नीचे एक ठटी लहर कॅपवॅपा कर थिर हा गयी। आतक से अधमरा होकर मैं एक दनिक् पत्र के कार्यालय म धुस गया था। मैं चीख रहा था, मुझे बचाओ! तुम जनतात्र जिंदा रहने के अजिकारो का समथन करते हो। मेरी रक्षा करो।'

बुछ रिपाटरा न मुझे घेर लिया था। मरे होठा म भाग भर गय थे। उहान मुझे कुर्सी पर बिठनाया।

मैं चिल्लाता रहा। मैं पूरा जार लगा रहा था यह अन्तिम प्रयत्न था, पर मेरी आवाज बुझ रही थी।

'वे S S मुझे मार डारेंगे। यह दखो उहोन मुझ जवरन पकड कर इजेकशन दिनवाया है। एमा कइ दिनो से हा रहा है। खडे-खड क्या देख रह हा तुम लाग? मेरा बयान लिखा। मैं कहीं और किसस कहीं अपनी बात? वे S S मुझे जहर द रह है धीरे धीरे। उह खतरा है कि मैं उनने खिलाफ हो जाऊंगा सार गुप्त भेद दूसरा को बतला दूगा।

फिर मुझ पर बेहोशी छाल लगा। मैं अपनी बांह उनके सामने खाल दी थी, जिस पर उन सुइया व निशान थे जा रोज मुझे दी जा रही थी। मेरे चेहरे पर रोगनी चमकी। फोटो लिया गया था। वे उत्तेजना म बानें कर रहे थ। मुझे भवभोर रहे थे। लेकिन—मैं घुघ म लिपटता चला आ

रहा था और बड़बड़ाता जा रहा था ।

“पुलिस को खबर करो ।”

मैंने अस्पष्ट ढंग से सुना । कोई गुस्से में बाल रहा था ।

‘इह अस्पताल ल चलो ।

उद्योगमंत्री एक विद्वान की जान ले रहा है ।’

‘स्माला, कमीना ।

हम उस नगा कर देंगे । लीड स्टोरी बना कर छापेंगे ।’

वे क्षण गुजर चुके थे लेकिन अभी भी हवा में विखरी हुई आग की धिनगारियों की भाँति चिटख रहे थे ।

सहसा एक घटा घनघना उठा और मैं स्मृति-खदका से बाहर निकल आया ।

“कुछ गरीब मरीजा को यहाँ मुफ्त खाना दिया जाता है यह उसी के वक्त का सकेत है ।”

कपिला ने कहा, सोच में डूबते-उतराते ।

वह मेरा माया सहलाने लगी ।

‘शुरू में तुम्हें इमरजेन्सी वाड दिया गया था । अब दर स कितना गढ़ा है वह ! उद्योगमंत्री जी की मेहरबानी से यह ‘डिलक्स रुम’ मिला है ।

मैं उसे षड्यन्त्र रहा । कितने सालों से यह स्त्री मेरे पाँखों लगी हुई है ? क्यों ऐसी धीवी चौगिद विधावान रचने लगती है और बबूल की भाँडी बन कर तमाम अतसम्ब धा को निममता से छत्रनी कर लेती है ? श्रीमती कपिला शुक्ला ! ओपफो ५५५’

‘कितना कुछ किया है उद्योगमंत्री जी न फिर भी तुम उनकी मिट्टी पत्तीद करन पर तुल ठूए हो ।’

मैं ।”

मेरे हाँठ एक सक्पकाहट में काप ।

‘हा तुम ।’

‘लेकिन मैं तो मर चुका हूँ ।’

‘अब यह दशन बघारना छोड़ो । ब्रह्म आत्मा थीर न जान क्या-क्या विश्वविद्यालय में पढ़ाते-पढ़ाते तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है ।

एक सुन्दर, कोमल नाक ! रीस की वजह से वह जब लाल पड़ती जा रही थी। कपिला क्या करती है ऐसा ? स्वयं को बदसूरत बना लेती है।

‘तुमने मुझे भी बदनाम कर दिया है। साचो अपनी पत्नी को ! कुछ तो शम करो।’

मैं एक भयावह पाताल में घँसता चला जा रहा हूँ। इस पतन का सतन कहाँ है ? मैं पत्नी से पूछना चाहता हूँ, पर पथरा गया हूँ।

‘लाग रहते हैं उद्योगमंत्री जी स मेरे ऐसे-वैसे ताल्लुकात हैं -
ऐसे-वसे ?।’

फिर मेरी जुबान में हरकत हुई।

‘हा खराब-खराब सम्बन्ध !’

‘ठीक है।’

क्या ठीक है ?’

कोप का एक भभकारा मर चेहरे पर गिरा।

‘नहीं गलत है।’

तुम हमेशा ऐसे ही रहोगे। अडियन और मूख !’

लेकिन मैं तो खत्म हो चुका हूँ।’

उमन कुछ नहीं सुना। अपनी धुन में बोलती गयी।

क्या गये थ तुम अम्बवार के दफ्तर में ? बताओ मुझे ! उ होने कवर पेज पर नमक मिच लगा कर सब-कुछ छाप डाला। और तुम्हारे जीवन की रक्षा के लिए अपील भी निकाली !”

कपिला की मुखमृद्रा व्यग्य से विवृत हो उठी।

‘जानते हो क्या हो रहा है उसके बाद ? यूनिवर्सिटी में स्ट्राइक हो गयी है। पार्टी के चेयरमैन न जाँच-बमेटी नियुक्त कर दी है। चीफ मिनिस्टर ने उद्योगमंत्री जी को बुलाकर बुरा भला कहा है और वा अग्रवाल वर्द्धमान का बच्चा भडवा !”

वह घटिया जोर अश्लील होती जा रहा थी।

भडवा !’

मर माथे पर मानो किसी ने दण्डा बजाया।

हा ही भडवा ! वो S S अग्रवाल शिक्षामंत्री बना बन गया, त साहय समझता है अपने का । उद्योगमंत्री जी के तो विराधी गुट क वा उस पहिया मौका मिल गया है अब बक-बक करता फिर रहा है । वह राने लगी ।

मेरा तो तुमन सत्यानाश कर दिया S S S मुझे राज्य सभा क टिकट मिल रही थी । उद्योगमंत्री जी दिल्ली म सब तय कर आय थे किसी ने आहिस्ता से दरवाजा छटखटाया ।

कौन है ? '

कपिला ने नकियाते सुर म पूछा और रुमाल को धपथपा कर जल जल्दी आगू पोछ डाले ।

एक गजे सिर ने अदर भासा । फिर वह सदेह प्रकट हुआ ।

प्रोफेसर सत्यवान प्रसाद शुक्ला यही है ?

जी हाँ ! लेकिन—आप बाद म आइये । वो अभी सो रहे हैं ।

कपिला घबरायी हुई सी मुझे आठ द कर खडी हा गयी ।

आप ?'

इमसे आपको क्या मतलब है !

वह झुभला उठा ।

'दखिये मैं इन्वार्डरी कमेटी का मम्बर हू ।'

मुझमें अचानक कही से रक्त का संचार हुआ ।

आप इधर जा जाइये ।

'अच्छा ! तो आप जाग गये ह । मुझ पर है प्रोफेसर शुक्ला मी रोपट्टी म आ कर आपको नीद में खलल डाला । लेकिन आपके स्वस्थ्य की लेकर सभी हलको में चिंता प्रकट की जा रही है और मुझ कहा गया है कि मैं मामल की सही जानकारी हासिल करूँ ।'

'हमारे खिलाफ गहरी साजिश हो रही है ।'

कपिला न स्थिति में प्रवेश करते हुए और उस निजी रग दते हुए कहा । गजे को कुर्सी पर आदरपूर्वक बिठा कर वह भौंहा कापसीन पाछन लगी ।

प्रोफेसर साहब बहुत भाले हैं । इ हे फँसाया गया है ।

फिर उमने गजे की प्रश्नात्मक दृष्टि को समझने हुए कहा मैं मिमज
शुक्ना हूँ ।'

ओह ! तो आप है वोSS ।'

गज का चेहरा पीला पड़ गया ।

‘ मैं एक सीधी-सादा घरेलू किस्म की औरत हूँ ।’

मैं तो सुना है कि आप राजनीति में भी अच्छा-म्यासा दबल रखनी
हैं । उद्योगमंत्री आपको सलाह व बिना पानी का घूट तक गल के नीचे
नहा उतारते है !

तभी घडाक म किवाड खुल । पुलिस की दूर्ति म एक अफसर जीर
शिक्षामंत्री तेजी स अदर आये ।

शिक्षामंत्री मुझे देख कर मुस्कराये । उनके हाठ कानो तक फैल गये
और फनते चले गये ।

फिर उ होने एक खा डालने वाली निगाह स कमरे का मुद्रायना किया ।

मिमज शुक्ना, मुये यह कहन क लिए क्षमा करें आप थाडी देर
व लिए बाहर चली जाइय । हम कुछ गभीर और गोपनीय बातानाप
करना है ।

पाँव पटकती हुई कपिना चला गयो ।

शिक्षामंत्री ने अपनत्व भाव से मुझे छुआ । जहाँ जहाँ उनकी
अगुनियाँ गयी लम्बी-लम्बी जाकें भरे शरीर से चिपक कर लटकने
लगा । गुरू म पीडा का बोध हुआ पर ज्यो-ज्यो वे खन पीना गर्यो,
मेरी नसा म एक अजीब मीठी सनसनी बहन लगी ।

थ्य एस० पी० साहय ह । आप वेहिचक इह सब कुछ बनला
दीजिय ।

शिक्षामंत्री ने साकी बर्दीधरी की ओर इशारा किया ।

मैं एर एक का ठिकाने लगा दूँगा, प्रोफेसर शुक्ना ! आप घबराइये
मन । डटे रहिये । शिक्षा विभाग के किसी व्यक्ति पर कोई समादनी
हाती है तो आरोप मुझ पर आता है । मैं उद्योगमंत्री की ओर
उसकी रखल की ऐसी-तैमी कर दूँगा ।’

एस० पी० को भी शह मिली । बोना आप तनाक के लिए भी

हा हा, भडवा ! वो S S अग्रवाल शिष्यामत्री क्या बन गया, 'नाट साहब' ममभूता है अपने को। उद्योगमंत्री जी के तो विराधी गुट का है वो उस बढिया मीका मिल गया है अब बक-बक करता फिर रहा है।'

वह रोने लगा।

मेरा तो तुमने सत्यानाश कर दिया S S S मुझ राज्य-सभा के लिए टिकट मिल रही थी। उद्योगमंत्री जी दिल्ली में सत्र तय कर जाये थ ।'

किसी ने आहिस्ता से दरवाजा खटखटाया।

कौन है ?"

कपिला ने नकियाते सुर में पूछा और रुमाल को थपथपा कर जल्दी-जल्दी ब्राँसू पोछ डालते।

एक गजे सिर ने अदर झाका। फिर वह सपेट प्रकट हुआ।

प्रोफेसर सत्यवान प्रसाद शुक्ला यही है ?'

'जी हाँ !' सन्नि—आप बाद में आइये। वा अभी सो रह है।'

कपिला घबरायी हुई सी मुझे आड दे कर खडी हा गयी।

आप ?'

इससे आपको क्या मतलब है !

वह झुझला उठा।

देखिये मैं इक्वायरी कमटी का मम्बर हू।

मुझमें अचानक फही में रक्त का संचार हुआ।

आप इधर आ जाइये।

अच्छा ! तो आप जाग गये हैं। मुझे खेद है प्रोफेसर शुक्ला मैंने दापहरी में आ कर आपकी नीद में तलल डाला। सन्नि आपके स्वास्थ्य को लेकर सभी हलका में चिन्ता प्रकट की जा रही है और मुझमें कहा गया है कि मैं मामले की सही जानकारी हासिल करूँ।

हमारे खिलाफ गहरी साजिश टा रही है।'

कपिला ने स्थिति में प्रवेश करते हुए और उस निजी रंग दत हुए कहा। गज का कुर्सी पर जादरपूवक बिठा कर वह भौहो का पसीना पोछने लगी।

प्रोफेसर साहब बहुत भोले है। इ हैं फमाया गया है।"

फिर उसने गजे की प्रशंसात्मक नज़ि को समझते हुए कहा, मैं मिसेज़ गुक्ना हूँ ।”

‘ओह ! तो आप हैं वो S.J. !”

गजे का चेहरा पीला पड़ गया ।

‘मैं एक सीधी सादा घरेलू किस्म की औरत हूँ ।”

‘मैंने तो सुना है कि आप राजनीति में भी अच्छा-बसा दखल रखती हैं । उद्योगमन्त्री आपकी सलाह के बिना पानी का घूट तक गले के नीचे नहा उतारते हैं ।’

तभी घडान में विवाड खले । पुलिस की वर्दी में एक अफसर और शिक्षामन्त्री तेजी से अन्दर आये ।

शिक्षामन्त्री मुझे देख कर मुस्कराये । उनके होठ कानो तक फैल गये और फनत चले गये ।

फिर उ होने एक खा डालने वाली निगाह से कमरे का मुआयना किया ।

मिसेज़ गुक्ना, मुझे यह कहने के लिए क्षमा कर आप घाड़ो दर क लिए बाहर चली जाइय । हम कुछ गभीर और गायनीय वार्तालाप करना है ।

पाँच पटकती हुई कपिला बली गया ।

शिक्षामन्त्री न अपनत्व भाव से मुझे छुआ । जहा ब्रहा उनकी अंगुनियाँ गयी लम्बी लम्बी जोकें भरे गरीर स चिपक कर लटकने लगी । गुरू में पीडा का बोध हुआ, पर ज्यो-ज्यो वे खून पीती गयीं, मेरी नमो में एक अजीब भीठी मनसनी बहने लगी ।

‘य एस० पी० साहब हैं । आप बहिचक इह सब कुछ बतला दीजिये ।’

शिक्षामन्त्री न ताकी बर्दीधरी की आर शारा किया ।

‘मैं एक एक को ठिकाने लगा दूगा, प्रोफेसर गुक्ना ! आप घबराइये मत । डटे रहिये । शिक्षा विभाग के किसी व्यक्ति पर कोई ब्यादती होती है तो आरोप मुझ पर आता है । मैं उद्योगमन्त्री की ओर उसकी रखल की ऐगी-तमी कर दूगा ।’

‘एम पी० को भी यह मिनी ! वोना आप तलाक के लिए भी

अर्जो द दीजिए।”

‘वकील का खर्चा मैं उठाऊँगा।’

शिखामात्री ने पजा पना कर अगुतियो म पुयराज और नीलम की अगुठियो को देया।

‘लेकिन मेरो एक बात है। आप मुभम कुछ भी ठुपाएँगे नही। और कपिला के साथ उद्योगम श्री के कुछ फोटो तो जहर होये ही के भी आप मुझे देंगे।

दो युवक धडधडात हुए भीतर चन आय और मरी तरफ नगभय दौड पडे। वे मरे छात्र थे।

‘सर सर! आपको क्या हो गया है सर?’

सर हमन पपर म पढा कि आपको जहर दिया जा रहा था कई रूपतो स।

सर हम बतलाइय हम आपके लिए क्या करें?’

हम जुलूम लेकर वाइस चांसलर की कोठी पर गय थ।

हमन उसके बरामदे मे रते गमल तोड डाल।

हम आपके साथ अयाय नही होन दग सर!’

कमरा जावाजो से भर गया और मेरा दम घुटन लगा। मैंने एकाध बार कोशिश की कि उनस कुछ कहूँ, पर भाया ने साथ नही लिया। सग की भाँति आज भी वह परायी थी और दूसरो क पीछे चल रही थी।

डोसलर भूल की तरह एक गाल घेरे म मेरा पलंग चक्कर खाने लगा।

उसी समय कपिला आयी डाक्टर के साथ।

देखिय कितनी भीड लगा रखी है यहाँ! और मुझे इन लोगो ने बाहर निकाल दिया। डाक्टर साहब! मरे पति को बचा लीजिए। वो मौत के मुह म है उनकी जान खतरे म ह और य तमाशवीन मजमा लगाय हुए ह।

वह सिसकियाँ भरन लगी।

धीर धीरे कमरा खाली हो गया।

मैं मर चुका था पर डाक्टर मेरी जाच कर रहा था। उसन नब्ब देखी। रक्तचाप को परीक्षा की। पलक उलट कर मेरी पुतलियो को

घूरता रहा।

‘सिस्टर!’

उसने पुकारा और हाथ मसाने लगा। एक चबल-सी लडकी घट-घट करता हुई आयी। डॉक्टर न उमसे कुछ कहा। बट पास के स्टूल पर बठ गयी और एक गाढा घोन मेरी छाती पर मलने लगी। उसकी मुलायम अर्गुनियाँ बीरबहूटियो की तरह चल रही थीं।

कपिला की सुत्रकिया का अत नही था। गाम हा गयी। फिर रात।

धीच म उमने दो बार उठ कर उद्योगमत्री जी को फोन किया और फिर पल्लू स आँख-नाक रगडती हुई एकतान राने बठ गयी। सिस्टर स भी एक सवाल किया — ‘तुमने कागा के बुद वहाँ से खरीद?’

‘महारानी मार्केट म।’

‘बडे प्यारे लग रहे हैं। इतवाग को एक जोडी में भी लाऊँगी।’

अतिम दृश्य म जब उद्योगमत्री हाथी की तरह झूमत हुए अपनी सूड क नीचे वाल दो दाँत दरगात हुए पधारे तो कपिला की म्नाई ने जोर पक लिया।

उद्योगमत्री एक माप्ताहिक पत्र के प्रधान सम्पादक भी थे। उम पत्र का मवाददाता और फोटोग्राफर उनके साथ अगरक्षकों की भीति खडे थे। ऊपर लट्टू जन रहा था।

‘मिसज मुक्ला रो रही हैं। उनका फोटो न लो।’

फोटोग्राफर काम म लग गया। कपिला ने मेरे गले म बाँह डाल दीं, मेरे कण पर मिर रख लिया मेरे पलंग पर बूक कर बठ गयी, मेरे पाव खान लगी इस तरह बर्द पोड लिये गय।

फिर उद्योगमत्री धामत-खँखारत हुए सवाददाता की ओर मुडे और कपिला की तरफ म बयान लिखवाने गये—

मैं बहुत दुखी हूँ। मेरे पति मृत्यु मे सघप कर रहे हैं। उनके प्राण खचाने क लिए मैं सबन्ध हाम दूँगी। जानने वाल जानत हैं कि प्रोफेसर मुक्ला एक कमजोर चरित्र के व्यक्ति हैं। पिछने छह वर्षों से उनका अनैतिक सम्बन्ध शिक्षामत्री जी की पुत्रवधू से रहा है। वेम मेर घर म ही रंगरतियाँ मनायी जाती रही हैं पर मुझे उमके बारे म कुछ नहीं कहना

है। मैं भारतीय नारी हूँ और पति व अवगुणों का चर्चा को पाप मानती हूँ। पता नहीं शिथामश्री जी के यहाँ प्रोफेसर शुक्ला का क्या खिना दिया गया कि उनका मानसिक सतुलन नष्ट हो चुका है। उह होगा म लाने व प्रयत्न हा रह है। फिर मैं शुक्ला जी को लबर राची जाऊगी।'

एक स्टेटमट, कुछ प्राध्यापकों की आर से तैयार करो कि उन लोगो न प्रोफेसर शुक्ला का पागलखान म रखकर इलाज करान के लिए चदा इक्टठा किया है। वो फिजिकल वाला गुप्ता है न अपना खास आत्मा है, जरूर कुछ याद-नास्ता स दस्तखत करा लायगा।'

कपिला मुस्करायी। आश्चर्य होकर।

अगल ही क्षण उसकी मुस्कराहट पर उद्योगमश्री की मुस्कराहट चिपक गयी।

फाटाग्राफर और सवाददाता पुतलो की तरह कमर स निकल गय। सिस्टर पहल ही जा चुकी थी।

उद्योगमश्री न मुझे घूसा दिखलाया।

सत्यवान सूअर हरामी की औलाद।

कपिला ने उह राका।

'क्या कर रहे है? अभी नहा अभी उस जिंदा रखना है।'

वह उद्योगमश्री के गले म बांह डाल कर उनकी तोद व डलान पर लोकी की तरह लटक गयी।

त्वमेव माता

पहा की डालिया म रह रहकर बल खाती हुई सग्नराष्ट्र के सिवा जीर और कोई आवाज सुनायी नहीं दे रही थी। मूर्याम्त के बाद पाँच पसारत हुए अँधेरे म बालू क टीने क गिखर पाल पवद म नज़र आ रू थ। मरी चिनम म अभी तबाकू का आखिरी स्वाद गप था बिलकुल एक गहरी-गहरी गंध से जुड़ा हुआ खास अमला। मैं माफी का बरान म तपटा और हथिनियों की मुट्ठी बनाकर लबा कश अर खींचा। धुआँ अपनी जानी-पहचानी मुरग का ताप और गुन-गुनाहट से रोमांचित करता हुआ बाहर सौट आया। बाहर सब-कुछ सुनसान था। बहुत दूर म जहाँ बगामर दानी थी कभी-कभी कोई स्वर बूटे मार की तरह पछ फड़फड़ाता हुआ उठ जाता था।

दिन भर पुन पर काम करन बाद व लाग सौट गय थ अपनी-अपनी कच्ची-मक्की छत्रों के नाच। बल मुवह हान ही फिर आ जायेंगे और माठा-चूना-माटी न जूमन मगेंगे। अकेलपन की लोह म पडा हुआ मैं जान क्या गाव रहा था भीतर डेर-ना राख जमा थी और जन कोई गुरार कर रहा हो। एक कुचली हुई नय मन म उमठ रही थी।

मिस्तरी ! '

एक हाँपती हुई आवाज भरे निकट जाकर ठिठक गयी। मैंने पीछे मुड़कर देखा और उस क्षण म मुझे लगा कि पीछे मुड़कर देखना कितना कठिन, कितना दुःख भरा अनुभव रहा है मेरे लिए।

वह आठ-दस साल का बडका था, तन पर गमछे की भाँति एक घोटिया भर और शरीर की हड्डियाँ तो इस तरह बेतरतीब माना व उसस जुड़ी हुई न हा। कोई जोड़ार था उसक हाथ म, जिसे वह चुपचाप ताक रहा था।

तुम्ही मिस्तरी हो ? उसन पूछा और फिर मेरे उम छोटे-से भूँवे को देखने लगा जिस एक महीन पहल अम्थायी तीर पर खडा किया गया था।

हाँ बोलो क्या काम ह ? '

मैंने खटका दवा कर लालटेन सुलगाई। वह एकदम भक्भक् करने लगी और काँच व गोल म बालिख पुत गयी।

इसे नीचे रख दो।' लडके ने कहा, तेल बत्ती के आसपास जमा हो गया है। थोड़ी तैर म ठीक ली बन जाएगी।'

मिट्टी के तल की तीखी बू हवा म तर गयी।

मैंने लालटेन एक तरफ रख दी।

सर्दी बढ गयी थी। मेरे हाथ-पैरो म ठड जमने लगी तो मुझे लडके का ध्यान आया। उसन तो नाम मात्र को ही कुछ पहन रखा था। सिगडी के तसले म थैपडियाँ और घास फूस जमा कर मैं आग जलाने की तयारी करने लगा।

हटो मैं सिगडी ठीक कर देता हूँ।

लडका मर सामन आकर घुटना बल बैठ गया।

जब आग की राशनी तज होने लगी तो मैंने उसके चेहरे को गौर से देखा। सूखे हुए गाला व बीच पेयली वेर की भाँति रखी हुई नाक और ऊपर का हाठ कुछ लम्बा, भूरे बाल और उनकी छाजन के नीचे गहुए रग को अलग मी जगमगाहट देती हुई आँखें।

तुम तीसरे मिस्तरी हो यहा," वह बोला 'कोइ टिकता नही।

पहले जो दो आय थे, जल्दी ही ऊब गये। तुम्हें पहाड़ अच्छे लगते हैं ?”

‘हाँ, मुझे पसंद हैं।’

‘तब तो तुम रहोगे ?’

‘तुमने अपने बारे में कुछ बताया नहीं।’

‘मैं बल्की हूँ। दोना पुराने मिस्तरी भी जानते थे मुझे।’

‘यह हाथ में क्या ले रखा है तुमने ?’

बमूला है। लकड़ी की कुछ मामूली चीजें बना लता हूँ—यही कड़छी, खूटियाँ खाट के पाय, डेरा ।

‘अच्छा !’ मुझे बल्की से बातें करने में आनंद आ रहा था। अंदर जो गान्नी-भाड़ी घुघ अम गयी थी और जिसके रहते समूचा समय मुझसे परे पड़ गया था, अब धीरे-धीरे निकल आ रही थी।

ऐसे बचकन यहाँ चने आय तुम, बल्की !

अम्मीने कहा चने नये मिस्तरी के पास और मैं चल दिया। वह भी कुछ देर में पहुँच जाएगी। मुझे धीमे धीमे, पाव घसीटते हुए चलना पसंद नहीं। मैं तो दौड़ता हूँ। बागमर में अपनी छप्परी से निकल कर भागना शुरू किया तो बस तुम्हारे पास आकर ही रुका। अम्मी तो औरत है न भागमभाग में मेरा मुकाबला थाड़े कर सकती है !’

सिगड़ी के पास बिसक आओ। तुम्हें जाड़ा लग रहा होगा !’

‘ना मुझे तो छूता ही नहीं जाड़ा। एकदम नगड घूमता हूँ—जंगल में टीलों और पहाड़ियाँ पर—पाने की मार मुझे पर नहीं चलती। वो तो तुम्हारे पास आना था न इसलिए अम्मी ने यह धोती पहना दिया। देखो न, कस फँस गया है टाँगा में चुभता है ?’

आज हवा कैसी चल रही है एकदम बर्फ ?

अरावली पर ठेक बाबा ने डेरा डाला है !’

‘क्या मतलब ?’

हाँ अम्मी कहती है अब दऊ बाबा अरावली पर डेरा डालते हैं तो नहीं आती है और जब उनका डेरा उठ जाता है तो, गर्मी !

यह बबल तो अरावली पर डाल लो !

ना भई मेरा तो इस दृश्य ने आदम घुटने लगता है !’ फिर बल्की

ने जँघरे म घूर कर कुछ देखा, अम्मी आ गयी।”

मैं भी उधर देखन लगा। पहाड़ी पर चानि निक्कने से पहल का उजाम था। एक काली आकृति टाक क तरलत व नजदीक आ कर ठिठक गयी।

अब मुभम अनमनापन नहीं था। खुशमिजाज और मुक्क बल्ली न मरी उदामी के तमाम घबरा को धा लिया था। सामने अघवना पुल था लोहान्नकड और इटा के डेर थे भारी और बग्गी हुई दानी वाले बरगद क पेड थ। कभी-कभी काई लामड़ी बोल उठती थी तो उसकी आवाज एसी लगती थी मानो दो वाँसा के बीच तनी हुई किसी रस्सी पर नटनी चल रही हा।

अम्मी आ जाओ मिस्तरी का मैं तुम्हारे बारे मे बतला चुका हू।”

वह आकृति बल्ली की पीठ से सट कर बठ गयी। चुप।

मिस्तरी तुमन बाघ देखा है कभी? बल्ली ने पूछा। वह मिगटी म मे एक जगारे को हथेली पर ने कर नहीं गेंद की भाति उछाल रहा था।

‘नहीं।

‘मैंन भी नहीं देखा चूल्या काका कहता है एक बार बाघ घुस आया था बगासर म। बाडे म से भेड को निकाल कर मुह म उसे दबाये-दबोचे वह वापिस जा ही रहा था कि अम्मी न उस पर कुल्हाड़ी चला दी। फिर क्या था हो गयी डिगमडिगार हर हर गगा! अम्मी ने उसका जबन तोड डाला मर गया स्साला तडफडा के। तुम कभी हमारे रूप म आओगे तो मैं तुम्ह उसकी खाल दिखलाऊगा।

बत्तूनी बहोत है यह स्त्री ने कहा।

चूल्या काका कहता है बत्तियाँ का बेटा तो बत्तूनी ही होगा। तुम्ह नहीं मालूम मिस्तरी! मेरी अम्मी का नाम बत्तिया है।

इस बार स्त्री न मेरी ओर चेहरा घुमाया। उसक होठो हर कोमल-सी मुस्कराहट थी। गोरा और खुला-खुला चेहरा। आधा म हल्की-हल्का व्यग्रता का भाव, जिसे सहेज कर रखने वाले भर भरे सुख हाठ।

‘यह चूल्या काका कौन है, बल्ली?

अरे, तुम उसे नहीं जानते, मिस्तरी? तुम्हारे नीचे पुल पर ही तो

मजूरी करता है वह। पूरे गाव का वही ता चौधरी है। छतरनाक आदमी है। क्यों अम्मी, तुमन बतलाया था न, कि पिछल साल उसन डगदोणा गाव के गो आदमियो का खून कर दिया—दिन दहाडे।”

‘अब अपनी बकर बकर बंद करो बल्ली।’ स्त्री के स्वर में नाराजगी थी।

बकर बकर क्या, सच्ची बात है। तुम्ह भी ता धोल घण्ड मारता है घरत घूत्या काका। क्या पिटती रहती हा तुम उससे? भला वह कोई तुम्हारा खसम है? खसम तो अपनी लुगाइया का है। उह मार।

‘अच्छा, तुम ज्यादा जबान मत चलाओ।’ स्त्री अचानक अस्त व्यस्त हो उठी।

ठीक है मैं कुछ नहीं बालूंगा। बल्ली एक जलती हुई थपड़ी को उनट-पलटन में लगा। ‘तुम मिस्तरी के साथ सोन के लिए यहाँ आई हो न? जाओ अपने के अदर चली जाओ।’

एकाएक मेरे चारा ओर का अँधेरा मस्टे के काटो से भर गया और मेरे गेम रोम में गडन लगा। फिर लगा, मेरा शरीर छोटे छोट मूराखा के कारण छलनी जसा हो गया है। नहीं, वे मूराख नहीं बिल हैं और उनमें असरूप चूहे मिलकर बरसों से एक ही चीज को कुतर रहे हैं—लगातार एक छाया है जो मारे सबधा के बीच भूतनी की भाँति डोलती रहती है। और मैं उस भूतनी को पकड़ने की कोशिश करता हुआ दिन-ब-दिन अधिक लाचार अधिक बूना, अधिक निरास होता जा रहा हूँ। किंतु किस अल्पय हाथ के लव, घिनौने नाखून चुभे हुए हैं मेरे और दूसरों के विषय, निरमग जीवन में बौन है वह जो मुझको एक ओर एक अघर टिके हुए महसूस का आहिस्ता आहिस्ता दुग्ध भर दल-न से ढँकने की चपटा कर रहा है?

कयस के रोये नोच-नोच कर तापते हुए मैंने उस स्त्री की तरफ निगाह उठा कर देखा, त्रिगनी आँखें नीचे झुकी हुई थी और नाक की अगली नोक पर रहे रहे कर कपन-ना हो उठता था। गान कथा में घँस गयी थी और उसने निचल हाठ का दाँता से दबा लिया था। एक दिन के लिए मुझे महसूस हुआ वह बहरा एक चुनौती है—मेरा लिए, एक हाहा

कार है ! कितनी बड़ी दुनिया है इस हाहाकार की, अतहीन !

एक पहर ! दो पहर ! रात का रथ रुका नहीं ! अश्व दौड़ते रहे । मैंने आसमान की ओर देखा—तार थ घाद थ और अधकूप में खाली डोलच की भाँति लटकता हुआ—सा चाँद था । मन में एक विचार आया कि अगर मैं आँखें मूंद लूँ तो यह सब मुझ जायेगा लेकिन क्या इतनी आसानी से घटम टा जाता है सब-कुछ ? कहीं समाप्त होगी यह लड़ाई ? कभी बलक कभी चौकीदार कभी फक्करी का हाज़िरी-मास्टर और अब राजगीरा का मिस्त्री ! कहीं जाना चाहता था मैं और कहीं चला आया !

तभी एक हीलनाक-सी आवाज़ सुनायी दी मुझे जाने कहीं से ! और लगा कि मैं असुरक्षित हूँ—अकेला नहीं उन सब लोगों के साथ जो मार-खाये लपड़ों पर भरोसा करने हुए गरम लावे की ठंडी सतह पर चल रहे हैं बेआवाज़ ?

और तब मुझे सामने बठी हुई उस स्त्री का चेहरा सहसा याद हो आया और अपन बहुत निकट लगने लगा । बत्तियाँ ! हाँ मैं उसे कितने ही गाँवों और कस्बों और शहरों में देखा था—मैंकड़ों वार भूल कर भी मैंकड़ा वार याद करने के लिए !

‘ बल्ली ! ’ गन की खराग से जूझन हुए मैंने पुकारा ।

‘ सो गया है यह ’ स्त्री ने कहा । उसका स्वर में जटता थी जस कोई चट्टान जरा-सी हिली हो ।

‘ इस झूपे में मुला दो । मैं सिगड़ा जदर ल चलता हूँ ।

हाँ बाहर सर्दी बढ गयी है । ’

लालटेन का मद मद उजान में उभरती हुई गटमड परछायाँ और झूपे की गरमास ! नसी में एक आँच ज म ली लगी । मैंने सिगड़ी को उपलों से भर दिया । इससे पहल कि मैं फूक दूँ बत्तियाँ उसे पल्लू से हवा देकर सुनगाने लगी । बल्ली को उमन दरी पर मुला दिया था कबल ओढा कर ।

बत्तियाँ ! ’

उसने पटी पटी आँखों से मेरी तरफ देखा—एक सहमा हुआ भाव एक बंजान सा उत्तर ।

‘तुम और बल्ली कही जा रह थे ?’

‘यहा आय थे ।’

‘किस काम से ?’

‘मैं पहले भी आ चुकी हू यहाँ ।’

‘रात को ही ?’

हाँ, उन दोना मिस्तरियो के पास, जा तुमम पहले पुल का काम देवते थे ।’

मेरे कठ म फिर खुशकी सी पैदा होने लगी ।

‘मैं उनके साथ सो चुकी हूँ, कई बार ।’ बत्तिया ने कहा, ‘मेरा यही राजी है । गाँव म वसे धूल्या चौधरी मालिक है लेकिन उसकी तो अपनी ही तीन औरतें हैं—ब्याहता ।’

‘तुम्हारा ब्याह नहीं हुआ ?’

‘नहीं ! मैंने सोचा तुम्ह मेरी जरूरत हागी । पर तुम और ही मिटटी क बने हुए हो ।’

‘क्या नहीं हुआ तुम्हारा ब्याह ?’

ऐस ही ! ब्याह से पहल यह बल्ली हो गया एक फौज के जादमी स । अहमद नाम था उमका । उदियापुर म रहता था लेकिन धूल्या का मिस्तर था और तब कुछ दिनों के लिए उसके पास छुट्टियाँ बितान आया था । मैं तो भोल जात, ये माँ बाप की छोकरी । धूल्या के जानवरो क बाडे म सार-मभाल किया करती थी । वही अहमद एक दिन आया और बोला, मैं तुम्हें अपने घर म बिठा लूगा । मैं खूब राजी हुई ।

मैं कुछ नहीं कह पाया । मरं होंठ आपस म चिपक-से गय थे । बत्तिया ने बाहर अँधेर म निगाह गडा दी, मानो वहाँ कुछ टटोल रही हो । फिर उसने होंठ धीमे स हिल— फिर अहमद फौज म लौट गया । कभी-कभी धूल्या क पास चिटठी आता थी उसकी पटवारी पत्के मुनाता था, मुझे जहर सिताम लिखता था वह । जय बल्ली पैदा हुआ ता उमने इधर-उधर अता-भता लगाया ता मातूम पडा कि लडाई चल रही है । बाद म कोई खबर लेकर आया कि अहमद मोरचे पर काम आ गया । बहुत दिन राया मरा ।

किसी से 'नात' की बात नहीं सोची तुमने ?

धूल्या के कहने से किया एक जने के साथ 'नाता' पर निभा नहीं। बल्ली उस फूटी आँखा नहीं सुहाता था। जब मुझे शक हुआ कि वह बल्ली को किसी-न किसी दिन कुएँ में फेंक आयेगा तो मैंने नाना ताड़ लिया। पर तब तक इस कलमुह धूल्या की नीयत खराब हो गयी। 'एक लबी माँस भरी बत्तियाँ ने जब तो सभी धूल्या हो गये हैं लेकिन मेरा बेटा बड़ा हा रहा है। चार छह साल की बात है फिर कोई तकलीफ नहीं रहनी मुझे। बल्ली अच्छा लडका है न।'

हाँ, काफी समझदार।

'मुझ पर जान छिड़कता है। यो कभी-कभार नाराज हो जाता है तो क्या ?

सुबह जब मैं भूँपे से बाहर निकला तो बत्तियाँ और बल्ली कबल में दुबक हुए मो रह थ। मैं पुल की तरफ चल दिया। मजूर आ रह थ। अलग-अलग काम। अलग अलग जत्थे। गिनती के दाद में एक डूँ पर बठ गया।

'मिस्तरी।

मैंने घूम कर देखा बल्ली दौड़ता हुआ मेरी ओर आ रहा था। जब वह मेरे निकट पहुँच गया तो मैंने पूछा, बल्ली तुम मुझ पहाड़ पर चटना सिखलाओगे ?

'हाँ, अभी चलो। उसने उत्साह से कहा।

हम पहाड़ की तरफ चलने लग।

मा क्या कर रही है ?'

अम्मी खाना बना रही है। उसने मुझसे कहा, 'बाहर खेल आओ।'

'हाँ जब हम पहाड़ से लौटेंगे तो मा के हाथ का खाना खाएँगे।'

जली हुई रस्सी

वे लोग चले गये थे। स्थापा खत्म हो चुका था। पुन्नी ने एक गहरी साँस ली और उजाड़ आँगन में घिरत हुए जँघरे से डर गयी, सहसा।

वह अफली थी।

हवा में अभी भी मुक्कियो के चियड़े अटके हुए थे।

जस कोई मूज की कूची से धीरे-धीरे दीवारों पर कोयले का धोल पोत रहा है। रात नीतरफ लिपटने लगी था।

आमाज के आखिरी लिना का आसमान जुलाह की छतरी की भाँति चीनता-मा नजर आ रहा था।

वह खड़ी हुई। उसका पाँव जमीन पर टिके थे पर उसने महसूस किया जैसे वह चलती हुई बेलगाड़ी में बतरह डगमगा रह है।

दूर तक कोई आवाज नहीं थी।

भीत न छाटी भी डाणी को भयानक ढग से चुप्पी में गाड़ लिया था। शाम के बाद का यह वकन तो सिर्फ हो-हल्ल और हैमी-बतलावन में बीतता है। जात सब कुछ बनना हुआ था।

पुन्नी के नघुनों में एक अजीब-सी गध घहरान लगी। उससे जान

छुडान के लिए वह छत पर चली गयी ।

बिछावन के बोर गोलमोल लपेट कर एक कोने में डाले हुए थे ।
उसने अपना घोंरा खाल कर फलाया और बैठ गयी ।

न चाहते हुए भी उसकी आँख बस्ती के बाहर कुछ टोहन लगी ।
मसान जहाँ थ वहाँ के दरदतो और भोमी को वह पहचानती थी । उसने
टीलो और टीलो के पार एक जगह जलती हुई आग के अंतिम धवों को
चीह्न लिया । वे धुधल-स लाल लाल चमक रहे थे माना किमी गाडिया
सुहार की भट्टी में तपाए हुए पत्तर पड़े हैं ।

वह राख हो गया है । पुनी ने सोचा ।

वह अब नहीं है ।

कितना सीधा और किसी हद तक गवदू-मा था वह !

उसे मारने की क्या जरूरत थी ?

क्यों किया गया ऐसा ?

उसने तो कभी किसी का कोई दिगाह नहीं किया था ।

नरसी ने कस आरी चलायी हागी उस पर ?

उसका हाथ नहीं कापा, जरा भी ?

और जम्मुन ने भी विराध नहीं किया ?

पुनी ने दोनों हथलियों के बीच अपना माया दबोच लिया और धीरे
धीरे कनपटियाँ सहलाने लगी । उसके विचार धर्छों के नुकील छरों की
तरह उस पर आक्रमण कर रहे थे ।

हो !

दग्बज्जे के बाहर आहट हुई ।

‘पुनी !

किसी ने नीचे आँगन में पुकारा ।

आ हाऽऽ !

पुनी ने गले में उमडती हुई रलाई को जवरन राकत हुए जवाब
दिया ।

ऊपर हो !

फिर सीढियों पर जूता की धव धमक हुई ।

यहाँ क्या कर रही है ?'

रावजी थे ।

पुनी यामोशी स उँह देखती रही । पल्लू को मुठनी से आखें-नाक पाछत हुण मिर चुका लिया ।

तुमन कुछ खाया ?''

पुनी को लगा एक अदृश्य तल है और वह उसम घँसता चली जा रहा है ।

'एने दिन ही गय । अन्न को छुआ तक नहीं तुमने !''

रावनी पास आकर बोरे पर बँठ गये ।

'ऐम कब तक चनेगा ?'

पुनी क मन म एक उवान उठा । इच्छा हुई एक ढाँसा लगाकर रावजी का मुँह बंद कर ले । वह बोरे चले जा रह थे भकर मकर । लेकिन अचानक एक भोका आया और सारा उफान पेंदे म चला गया ।

'अभी लोट कर आए हा ?''

उमन पूछा । वह जानना चाहती थी कि शहर म क्या हुआ ? नग्मी कर्ण है ?

'हवा म ठड पापन लगी है ।''

रावजी न कहा । फिर एक पाटली की गाठ घोलने लग ।

'मावे की गुजियां ह । तुम्ह बहुत अच्छी लगती है मुझे मालूम है ।'
आज नहीं ।'

याजी । खाओ ता कोनू हलवाई के यहा से लाया हूँ ।''

'नहीं । तबन नहीं है ।'

'और अपने लिए यह कूपी लाया हू ।''

'दाह पिओग ?''

पुनी क भीतर भय खिच गया ठनी अकीर की तरह । पीन के बाद रावजी बहुत खूबार हो जात है ।

लकीर पर अपनी माती हथेली रखन हुए रावजी न कहा, भात परशान धा । इमनिग दिन म आया न चलो । बस के अण्डे पर ही तो ठका है ।' फिर कूपी को मूषा 'एकदम तर माल है ।'

“वो कैसा है ?”

शब्द पुत्री के कठम गूभ गय ।

मज्जम है ।

ऐम मत वालो ।

सच्ची, वहाँ तो मौत-ही मौज है ।’

‘जेल कैसी होती है ?

एकदम घर जगी । यहाँ रा ता अच्छी है । अच्छा खान का मिलगा । एक डरेस भी दे देंग उसका । एकदम पैनाफन उडदी ।

तुम मिले थ उसस ’

नही, मुझे अदर नहीं जान गिया पुलीस न ।’

‘मारपीट करेगे उसके साथ ?

‘पता नहीं ।’

‘वो बहोत कमजोर है ।

‘जानवर है ।’

तुम ता सदा उसके सेलाफ रह हो ।

‘मुझे कोई मतलब नहीं । भाड म जाए ।’

रावजी ने कूपी होठों म दबा ली और गटागट ढालन लग ।

गुस्ता मत करो ।’

रावजी चुपचाप पीते रहे ।

मेरे पापा का फल उस कयो मिला है ।’

तुमन क्या किया है ?

‘माय कहा करती थी किसी की लुगाई मरान हो जाए तो वो सब कुछ भवत लेती है ।

‘उसने नरसी ने बिना बात जम्मुन का खून कर दिया । बकूफ !’

‘मेरी गदगी मेरे मरद को ला गयी ।

यह बेलाप बद करा । तुम पगला गयी हा ।

एव निक्कमी औरत हूँ मैं । किसमत न मुझे कुछ देना चाहा था कि लो यह धर है यह गिरस्थी है यह इज्जत है—लकिन मैं तो धूरे म मुह धँसा दिया ।’

तो मैं घूरा हूँ ?”

रावजी न नथुने फलफलाण पर स्वर सहमा हुआ था।

‘कित्ती भद्दी बात है यह !’

फिर देर तक दोनों के बीच एक बीहड़ फँसा रहा।

पुनी काई पगडडी खोलना चाह रही थी कि किसी तरह अपने को शिकजे स मुक्त कर भाग सके।

अधेरा बढ़ गया था और उसम स दलदल की बू उठ रही थी।

टीला को लाघ कर एक चिता की घघक साफ दिखनाई दे रही थी।

वह कातर हो उठी।

‘जम्मुन से तो उसकी खूब पटती थी।’

‘नरसी अपना भेद किसी को नहीं देता था। भोत चालाक था।’

रावजी न एक गुजी मुह म डान ली और चुबल-चुबल आवाज़ के साथ खाने लगे।

नहीं। उसन हमेशा सभी पर विसवास किया। मुझ पर भी।

तुम तो मैं जो कहूँगा, मानागी ही नहीं।’

सभया को जम्मुन का भाई आया था।’

‘छाट वाला ?’

रावजी चौंके। चलत हुए जवडे रक गये।

‘हा, कह रहा था यह काम नरसी का नहीं है। उसकी जम्मुन भया से कभी कोई लाग नहीं रही।

‘धो ऊत है। ऐसी बववास करता पिरगा तो मैं उसे भी हवालात म बद करा दूंगा।’

तुम सब कुछ करा सकत ने ?”

हा। सब-कुछ।

रावजी ने एक लवा घूट लेकर जोर से कूपी नीचे रख दी।

कोई तुम्हारा भी ता नुकसान कर सकता है।’

पुनी के अदर से एक विपली लहर लहराती हुई बाहर आयी और अघकार की काली रेती पर सिर पटक कर सूख गयी।

मैं उसकी आँतो मे वृत्ते का गू भर दूंगा।’

रावजी ने धूका। एक बार। दो बार। तीन बार। फिर खँखार कर
खामोश हा गये।

कुछ धणा के गुजरने पर एक ठूठ जैसे सरत हाथ न पुनी क जिम्म को
छुआ। उसकी पथराती हुई देह मे भटका सा लगा।

‘उसे मौत की सजा हो जाएगी ?’

स्यात।”

तुम वचान की काशिश नही करोग ? मरा पति है।

बन्गा। काफी खचा होगा इसम।

पुनी कुछ सोचती रही।

नरमी का कालरी वाता वत मेर सत मे गता है। तुम उन मुख
वेच दो।”

‘बच दूंगी।

वा उपजाऊ है। मैं उसम चन डालूंगा।

बहुत समय स तुम्हारी उस सत पर निगाह थी।

निगाह ता तुम पर भी थी।

रावजी हस। कूपी म थोडी सी बची थी।

उसी के लिए तुमने मेरे आत्मी को फँसाया ?’

रावजी हसते रहे। एसी करताती घराती भरती हुई हँसी मानो
किसी हथियार को धार दन के लिए सिल पर रगडा जा रहा हो।

मैं किसी को फसाता नही।

वह हत्या करने की सोच भी नही सकता है। मैं जानती हूँ।

तुम कुछ नही जानती हो।

मैं सोचती थी, वह कभी मेरी हत्या करगा वकिन उसने तो आज
सक जाओ मे रीस लाकर हा मुये नही देखा।

उसे पता था कि तुम मेर साथ ?’

बातें उस तक पहुच गयी थी।

फिर भी वह गुस्साया नही ?”

उसे मुक्त पर बहुत भरोसा था। एक बार यो ही पूछा तो मैंने कह
दिया नही ऐसा कुछ नही है। वस उसने सच मान लिया। एसा नव

आत्मी—किसी पर आरी चला सकता है ?”

अब उसकी ज्यादा तरफदारी मत करो ।”

रावजी ने उमे अपनी बाँहा के जाल में फँसा लिया ।

मैं गदी हूँ मुझे भी मार डालो । हत्यारे ।”

रावजी की नसों में नगे के डोरे घिबने लगे । एकाएक उन्हें ताव आ

गया, आत्मी गुरु से बके जा रही है । उहाने पुनी को बोरे पर पटक
लिया । आत्मी को खीचा परे फेंक दिया । फिर नेकें में अँगुली डाल कर
घाघरे का फाट डाला । अब वह उनके घुटना के नीचे थी । वे जगह जगह
उमे दाँता से काट रहे थे और वह एकदम चुप थी । डरी हुई । जैसे काल
के दूत को देख रही हा प्रत्यक्ष ।

‘मैं समूचे गाँव को रौं सकता हूँ । एक मिनट में ।”

रावजी उसे चीरने लगे । बरहम होकर ।

मैं इमी लापक हूँ । मुझमें ऐसा ही सलूक करो ।”

पुनी ने कहा और स्वयं को सपाट हवाले कर दिया ।

‘तुम समुरी जली हुई रस्ती । सारी अकड निकाल दूँगा तेरी ।

राख कर दूँगा । मज्जा दे मुझे, मज्जा ।”

रावजी दाँत पीस रहे थे और हाँफ रहे थे ।

यमराज

शारियावास तक पहुँचते-पहुँचते रात पड़ गयी और रास्ता अधरे स भर गया। टीलो के पीछे छुपे हुए पेड़ अचानक भयावह में लगन लगे। जब एक झाड़ी में लोमड़ी की गुर्राहट सुनाई दी तो राका चौंक उठा और दांती में अगुलिया डाल कर इस तरह नीचे देखने लगा मानो कीच में पाव घममसा गया है। फिर पचाम-साठ गज की दूरी पर किसी की पद चाप उभरी तो उसने हेला दिया ओऽहो ज रामदेव बाबा!

ज हो कौण है भई? आवाज जायी बोभिल जीर धकी हुई।

राका एकदम कोई उत्तर नहीं दे पाया।

'राहगीर हो क्या?

'यही समझो!'

कौण-सा मुकाम?'

राका फिर अपने भीतर की घुड़ियो में उलझ गया और उसकी जीभ में जैसे आट पड़ गयी। आग के दूसरे सवालो से वचन के लिए उसने कह दिया बहुत दूर है अच्छा इस गाव में ठहरने-बहरने की कोई जगह है?"

गाँव तो ठहरने के लिए ही होता है। किस जात के हो ?”

‘बटीक !’

‘तो इस ढलान से उतर कर पूरब की तरफ मुड़ जाओ। पहले एक कुआँ आयगा। फिर कीकर के पडा का भम्मट बस वही डालने खटीक का घर है। रात बासा मिल जायेगा तुम्हें।’

अधेरे की बातचीत अधेरे में गुम हो गयी।

राका टोह लेता हुआ आगे बढ़ा। कुएँ पर डाल-वाल्टिया की खन-काह और डगर-डोरो की गुत्थम-गुत्थाइ उसे धरमा पुराने माहौल में घोंच ल गयी। नहीं वह पीछे मुड़कर नहीं देखेगा। राका जानता था ऐसा करत ही बक्त का कितना भारी और निर्जीव बाफ उसकी पीठ पर आ पड़ेगा। कमर सहसा दोहरी हा जायगी। दा कदम भी नहीं चल पायगा। वह और जड़ होकर, एक अदृशनी दुनिया की बफ में गलता घीतना चला पायगा।

फूम क एक टापर की किवाड़ी हिली। किसान न बानर भाँका फिर अदर की ओर मुड़ कर फुसफुसाया है- बुजा ! तुमने विलकुल सच कहा था—खो जादूगर।

राका के पाव अटक गये। एक नजर उसने अपने कपडों पर डाली। नीन रंग का सुयना चौखान की लवा मा कमीज और सिर पर लहरिय का पगड। वह मुस्कराया। सूखे पपडियाये हीठ अजीब तरह से विच गये—बच्चे का अनुमान उसक भेष का लकर गलत नहीं है।

आसमान धीरे धीरे बड़ा हा रहा था, चाँद के गद भरे उजाने में। खारियावास की भोपडियों में रात के पहने पहर का शोर तर रहा था। कुछ भी नहीं बदना आठ सान पहल एसा हा था वह गाँव—इमी तरह उदास और अपने मने दोबड में लिपटा हुआ राका ने सोचा। वह कई लफे यहाँ स होकर गुजरा है—कभी निश्चित और चुपचाप कभी भयभीत और बन्हवाम। उस याद आया—खारियावास के उत्तर में कूटे का एक ढेर एक बार वह पीछा करने वाले गोगो के डर से चोरी का कुछ माल उसके नीचे दगा कर अरणा और ककेडा के जगल में भाग गयो था।

यमराज

श्वारियावास तक पहुँचते-पहुँचते रात पड गयी और रास्ता अधरे स भर गया। टीलो के पीछे छुपे हुए पड अचानक भयावह से लगन लगे। जब एक झाडी मे लोमड़ी की गुराहट सुनाई दी तो राका चौंक उठा और दानी म अँगुलियाँ डाल कर इस तरह नीचे दखन लगा, भानो कीच म पाँव घसमसा गये हा। फिर पचास-साठ गज की दूरी पर किसी की पद चाप उभरी तो उसने हेला दिया ओऽहो जै रामदेव बाबा !

ज हो कौण है भई ? आवाज जाया बोभिन जोर थकी हुइ।

राका एकदम कोई उत्तर नहीं दे पाया।

‘ राहगीर हो क्या ? ’

‘ यही समभो । ’

कौण-सा मुकाम ?

राका फिर अपन भीतर की धुडियो म उलभ गया और उसकी जीभ म जैसे आँट पड गयी। आगे के दूसरे सवाला स वचन के लिए उसने कह दिया बहुत दूर है अच्छा इस गाव म ठहरने-बहरन की कोई जगह है ? ”

गोव ता ठहरणे क लिए ही होता है। किस जात क हो ?”

“पटीक।”

“सो हा ढलान स उतर कर पूरव की तरफ मुँ जाता। पहन एक कुर्ता बायगा। फिर कीकर के पडा का भम्मट घस वहीं गलन घटौन का पर है। रात बागा मिन जायगा तुम्हें।”

अधर की बातचीत अघेरे म गुम हा गयी।

राका टाह लता हुआ आमे बधा। कुर्ते पर डाल-बाल्टियो की खन-काण और डगर-टोरा की गुत्थम-गुत्थार्ड उस बरसा पुरान माहीन म घोंच न गयी। नहा बह पीछे मुडकर नहीं दमेगा। राका जानता था एसा करत हा बकन का कितना भारी और निर्जीव बाभ उसकी पीठ पर आ पन्ना। कमर सहमा दोहरा हो जायगी। दो कदम भी नहीं चल पायगा। वह और जड होकर एक अन्फनी दुनिया की बफ म गनता पीतना चला जायगा।

फम क एक टापर की किदाची हिली। किसी न बाहर भाँना फिर अदर की थोर मुड कर फुसफुसाया हृद बुआ। तुमने मिलकुभ सच कहा था—
—बेहो जादूगर।”

राका क पाँव जटक गय। एक नजर उसन अपन कपडा पर डाली। नीन रग का गुयना चौखान की लधी-मी कमीज और सिर पर नहरिय का पगड। दह मुस्कराया। सूखे पपडियाय होठ अजीब तरह मे खिच गय—बच्च का अनुमान उमर भय को लकर गलन नहीं है।

बासमान धीरे धीरे बडा हा रहा था, चाँद क गू भरे उजाने म। खारियावास की भापडिया म रात क पहने पहर का शार तैर रहा था। कुछ भी नहीं बदला आठ साल पहन एसा हा था बह गाँव—मी तरह ग्गस और अपन मने दावह म लिपटा हुआ राका न साचा। वह कद दफे यहाँ स हाकर गुजरा है—कभी निश्चित और चुपचाप कभी भयभीत और बह्वाम। उस याद जाया—खारियावास क उत्तर म कूटे का एक ढर एक बार वह पीछा करने वाल लोगो के टर से घोरी का फुठ माल उसक नीचे ढवा कर अरणो और ककेडा के जगल म भाग गया था।

किवाड़ी बजी। पूरी तरह गुली और धुधली चाँनी में एक बुढ़िया उजागर हुई। राका ने देखा दस ग्यारह बरस का एक बच्चा टोकरी के ओढ़न में छुप कर सहमा सा खड़ा था। वह हसा डरो मत मैं जादूगर नहीं हूँ।

बच्चा सिंकुड कर उस घूरने लगा। बुढ़िया बोली कहाणी सुणा रही थी मैं इस। बीच में ही पूछण लगा—बुआ जादूगर कसा हाता है? मैंने टानणे के लिए कह दिया—बाहर खड़ा है जाक देख लो। फिर देर क्या थी नसन सचमुच ही।

चुप! यह तुम्हें विल्ली बना दगा बुआ। 'बच्चे न बुढ़िया को तेजी से टाका।

इस बार राका जोर बुढ़िया साथ-साथ हँसे।

मैं ता या ही बहला रही थी तुम्हें समचू! 'बुढ़िया न बच्चे के सिर पर हाथ फेरा फिर बोला कभी कभी कसा सजोग बठ जाता है।

'डालने खतीक का घर है यह? राका ने पूछा।

'हाँ है ता सही लकिन डाल्ले को मरे डेन साल हो गया। गोहरे न काट पाया था। ऐसा जोर मारा जहर न कि एक घड़ी भी नहीं निकाल सका समचू उसी का बटा है।

मैं भी खटीक हूँ। रात बासा चाह रहा था।

ओहो तो इसमें इतने सकोच की क्या बात? बटाऊ के लिए कोई रोक थोड़े ही है। मैं बाहर माची निकाल देती हूँ। जब तक थोड़ा बिस राम करोगे रोटी वण जायेगी।'

बुढ़िया भीतर गयी। किवाड़ी के पास राका ने उससे माची थाम ली और दरवाजे के नजदीक डाल कर बठ गया। एक लंबे अरसे के बाद वह मूज की बुनी हुई खाट पर यो बैठा था। उसके अति-परिचित छुरदुरेपन से राका का रोमाच हो जाया। जेल की पत्थर पट्टी पर सात बठन उसकी देह पथरा सी गयी थी। मूज की झुलावन ने उसकी नसों को एक कोमल ताप और हिलकोर से भर दिया।

किवाड़ी इट की अटकावन लगा कर खुसी छोड़ दा गयी थी। बुढ़िया काटी के टुकड़े डाल कर घूल्हे की आग तेज कर रही थी और बीच बीच में

राका की जोर ताक लेती थी। राका कुछ अमृत व्यन्न हो गया। वह जानता था अब उसका नाम-यता ठिकाना पूछा जायेगा और उन तमाम धारदार, चुकीली चोंडा को टटाला जायगा जिस वह बचना चाहता है। वह खुद को तैयार करन लगा। चोरी चपाटी करते हुए पकड़े ज्ञान पर थाने-बानों क सामा तरह-तरह व भठ बोनन की जा आदत पड गयी थी जत की जिदगी म उसमे काफी-बुछ छुटकारा मिल गया था। त्रेकिन अब बुटिया का ओर स आनेवाल प्रश्ना का मामना करन के त्रिए वह हवा के आरपार फिर कुछ गहन' लगा।

'डालने की त्रनी इज्जत थी बम्सी-बरवस्ती म। मेरा भाई था वह।' बुटिया काठ की छननी मे आटा छानत हुए कह रही थी तीन औरतों की उसने पण भाग की माया देखो तीनो नही रही। एक चेचक म मर गयी। दूसरी जोहड की गुन्वाई के बकन मिट्टी की भीत गिर जाने से दब कर मास तोड गयी और तीसरी डालने की मौत के चार महीने बाद ही एक कजर के साथ लक तगा गयी। समचू उसी के पेट से है।' जचा नक उस ध्यान आया 'आ हो समचू! वहाँ जाके टुप गया तू? लोहा लटठ था तेरा बाप और मपूत ऐसा डरपोक!''

उपला क बटाडे की ओट स समचू प्रवट हुआ और राका से कुछ कदम की दूरी पर खडा हा गया।

जादूगर नही हो तुम?' उसने पूछा राका से अटवत हुए।

'बिलकुल नही। यहाँ मेर पास आओ तो!'' राका को समचू क भालपन ने मोह लिया।

'तुम फूक मार कर भता को बुला सकते हा?'

नाऽ यह लो फूक मारता हूँ कोइ भूत नही आया।'

तुम्हारे कुनों की जेब में हरा हमाल है?''

हरा हमाल? किस वास्त?

तुम उस हिलाआग और अक्काश में उडणे लगोगे।

नही ऐसा तो कुछ भी नही है मेरे पास।

सच्ची बाल रह हो?''

गया तो यमराज को अपने काम का गयाल जाया और वह लड़के से कहने लगा—मैं तुम्हारे बाप को लाने आया हूँ। लड़के को यमराज की बात पर बड़ा अचम्भा हुआ। वह जानता था कि बाप को खल-खल में कार्द श्चिन्चस्पी नहीं है। उसने यमराज से कहा—मर बाप को छोड़ो, मुझे अपने मंगल चलो हम दोनों छूट मज्ज करेंगे। यमराज चिन्ता में पड़ गया। तब लड़के ने घमकी दी—अगर तुमन मरा कहा नहीं माना, तो मैं तुमसे कुट्टी कर लूँगा। यमराज लड़के का गाय लेकर चल गया। चलत चलत लड़का जन्मक गया तो यमराज ने उम गोद में उठा लिया। लड़के को नीला आ गयी और वह यमराज के कंधे से लग कर सो गया।

समचू की पलका पर नीद उतर लगी। गुन म तो कहानी उमे राचक लगी थी और वह गोर से मुन रहा था पर आग जाकर उसकी जाँघा के गिद घुघ-सी मँडराने लगी। वह माँची पर लेट गया।

नीला आ रही है ?

उह ! समचू के मुह में निकला। तभी एक तारा टूटा आकाश में और उजास की चकीर बनाना आया गया।

“रास्त में यमराज को एक राशम मिला। राशम भूखा था। उसने यमराज से कहा—यह लड़का मुझे दे दो और मुहमांगा इनाम च तो। यमराज ने इकार कर दिया। तब राशम ने लालच दिया कि मर पाम हीरे मातिया के साथ घड़े है वे मय मैं तुम्हें दे दूंगा। यमराज का चित्त डौंवाडोल हो गया।”

समचू हो ! बुद्धिया न पुकारा। वह धाली म जी के टिककड और चटनी रख कर लायी थी नाक बज रही है इसकी ता लो तुम जीम लो !

राका के नगुनों में गरम गरम रोटियों की गंध उत्तेजना भरने लगी। कहानी को बीच में छाड़कर उसने समचू की तरफ देखा। वह बाँह पर माथा टिकाय देखकर सो रहा था। चारीक भीँह, तीखी नाक जरा खुले-से पतन होठ और कानों को डँकत हुए अधभूरे बाल। किन्ता प्यारा बच्चा है राका का मन कसा-कसा तो हो गया। स्वयं पर अकुश लगात हुए उसने

शाली की ओर हाथ बढ़ाया और पहला कोर तोड़ा।

बुढ़िया अपने लिए चिलम भर लाम्बी थी।

‘तुम दोना न खाणा खा लिया?’

‘हाँ बुढ़िया है आँखा स कम सूझता है। रात का रोट्टी बणती हूँ, ता जण्णे बलण्णे का डर रहता है इसलिये दिन रहत रहत सारे काम निपटा लती हूँ।

‘मेरी बजह से तुम्ह तकतीफ उठाणी पडी।

‘वा...धीरा तुमन भी खूब कहीं। खटीक को अगर घटीक के धर रोट्टी नही मित्रगी ता कहा मिलेगी? तुम तो अच्छी तरह खाओ रगत ल के। कच्चा तो नही रह गया कोई टिककड?

नही, एकदम करारे हैं। राका कुछ देर खामोशी में मुह चलाता रहा, फिर उसन खोय खोये में पूछा, ‘आसुतरता कित्ती दूर है यहा म?’

‘नजीक ही है—यहा कोई छह-सात कोस।’ बुढ़िया न एक गहग कण लकर धुआ छोड़ा।

वहा क राका खटीक का जाणती हो तुम?’

राका?’ बुढ़िया की भव सिकुड गयी ‘जच्छा कोऽहत्यारा! उसन समूची खटीक बिरादरी पर कलक लगा दिया। जेन म है आजकन।

राका के जबड़े कस गये। हाथ का अँगुलिया से लगा हुआ कोर शाली में गिर गया।

‘अ बल दर्जे का चोर था सेंधमार। फिर जब उमर ढलणे पर मुघर गया तो हरजी पटेल क यहाँ चाकरी करता था वो। रडा मडा था अकता। महनती भी खूब था और पटेल उस बहुत चाहत थे। लकिन हुआ यह कि पचात की तरफ से तालाब बणवाण क लिए शहर से एक ठेकेदार का बुलाया गया। ज्यो ही ता नाब बणके तयार हुआ उसका पैसा तडक गया और सब किया कराया अकारथ गया। किमी तरह फिर पेंदे को पक्का किया गया वह हफ्त भर भी नही टिका और टूट गया। चार बार यही हालत हुई। तब किसी ने ठेकेदार से कह दिया कि तालाब रलि मांग रहा है मिनख की बलि। ठेकेदार का सोलह आन सही जच गयी। उसन राका का पटाया।’

बुढिया की खाँसी आ गयी। कुछ पल रुक कर उसने कहा, 'हरजी पटेल क एक लडका था। तीन-साढ़े तीन साल का। राका खेल-खेल म, घोडा बन कर उस पीठ पर बिठाय हुए तालाब तक ले गया। वहाँ उस पापी न कुल्हाडी से बच्चे के दो टुकडे कर दिय। ठेकेदार न तालाब के पड़े न बच्चे का खून डाला। सौ रुपये न्ये राका को ठेकेदार न पण बाद म भद खुल गया। पुलिस ने राका की बडी दुरगत की। उसको और ठेकेदार को सजा ह्वा गयी।' चिलम औघी मार कर बुढिया ने राका की तरफ देखा 'तुमन ता कुछ खाया ही नही।'

इती ही भूख थी।" माँची के नीचे घाली रख कर वह उठ खडा हुआ। हाथ धोय। लोटा भर ठडा पानी पिया।

हवा तज हो गयी थी और दरस्ता के पत्ते बज रहे थे। एक सियार हुआ हुआ करता हुआ पाम के जगन की चौकादारी कर रहा था। कहीं बाँ दे एक बछडा बेचैनी स रभा रहा था। बुढिया बटाही के बिद्यावन के लिए गूदड निकानन लगी।

क्या गाम था उसका उस बच्चे का? राका दानी खानाता हुआ याद करना चाह रहा था किंतु बहुत कोशिश करन के बावजूद उसकी स्मति मृत बनी ग्ये। एक अस्पष्ट भा मासूम चेहरा रह रह कर उसके जासपास खिलाखिलाता रहा— लँका घोना लाका घोला अच्छा घोला।'

बुढिया ने तो नहा सुनी यह तोतली आवाज? सक्पका कर राका न आज बाजू दखा। समचू पर उसकी निगाह ठहर गयी—ओह कितणा सुंदर! वह हरजी पटेल का बटा अगर जिंदा रहता तो आज इतणा ही बडा हो जाता।

रगत के जाखिरी पहर म राका चुपचाप उठा और बहा से गल दिया। थोडी दुर तक तो वह बजावाज चलता रहा—धीमे धीमे। फिर घोड की तरह टापें मारता हुआ जमीन खूदता हुआ दौडने लगा।

